

97.1M

No 2

ॐ प्रथम विवाह के पद लिख्यते ॥ रागराम कल्या ॥ सुत तेरे चलत विद्या
 हकीनात मेरो नूद्यो मानि मन मोहन ॐ तजी चोरी की घात १ ल
 रिकोटे व बडी नई तिसी ताते संजन संकात हूध दही पुने बहुते
 रो कहे रूप अघर जात ॥ २ ॥ सुहर खरि सुलन कन्या चंपक वग
 ने गत परमाने दलन लीए ॐ आवत घरी संक के घात ३ ॥
 ॐ प्रोगिन ब्याडिमान कद्यो मेरो चमन चोर होए गहे गहे डो जतः
 को न करे गो विहाउ ते रो ॥ १ ॥ सील गहे तो सब ब्रज जन के जापो
 जशो मती पुत्र भले रो कारि तिसुता मांगनो कर हो ब्रष भान वस
 त है मेरो २ मधमे वापकवान मागई मंगिसंफ सने रो प्राण जीव
 न धूमर धोरी को हे ॐ पुने धरधि हूध घने रो ३ पद १२ सारंग ॥
 ॐ प्रपने लाल को आह करों गी वडे गोपकी वेटी जिन सो हमारो जति
 ॐ प्राचारो जो जन मेरी नेटी १ मात जसो हाराला डल डो वैतै ॐ गसिंग
 र वना वै कक्ष सतरी को तिल कवना वै चंदन सो हल चठा वै २ का हे
 धौ मेया कवला वै गामो को दुलना नाकी ॐ प्राछे पुरु सत्रिया ने मो

कोशटिचूपरघीवकी ३ येसवसखावरातचलेजहोजनडेजोघी
रा जनपरमानंदपानखलानतबीडाभरिजरीजरी ४ पद १३॥
मेयामोहएसीवरीकी प्राभावे जेहाहिकाउकी छु डरापाहनकमु
नककर प्रावे १ करिकरिपक्यरसावरसोई मोरूपटोसजिवावे
देखुष्टपटप्रादवावाटेठीनाहंधरावे २ लेतउठाइजोदनेदरा
नीकरमनहारमनाने प्रहोमेरेलालकहोनाबालो: तरमाहक
रावे ३ नेदराहेनेरानीहिलिमिलिप्रांनंदसिंधुवठानै हरिके
उपरकरिनो प्रापरजनपरमानंदयावे ४ पद १४ एसेजोसाध
नेदमेरेमनकीकरूविहादेएननेनाडलहिनप्रपनेलेलन
की १ मजपुरमोहिविचारोक्या: कोउजोपसदनकीरूपप्रउप
सकलप्रांगसुंदर: जोरासावलतनकी २ कवदेबोसिरमोरवे
दिका: पनएजटापवदनकी प्रतीउतीग घोरिनाती बहिप्रस
सिखवरठरनकी ३ राइलोनउतारलनापर: लगेनदष्टिड
र नकी परमानंदप्रभूकरिनो प्रावरसाभारूपसदनकी ४ प-११

रागश्रीनायकी गठकुंजभवन-प्रटपटीपाग-औरछूटि-अर्द्ध
कावली घूमतनेनसोहे-प्रहंनवरन १ काहाकहौ-अंगकीसे-
भाहैषतमनसुखार्द जोविंदप्रभूकीवांनक निरवतःपौरिति
तिगयो लजाई २ पद १६ रागश्रीसामेरी सारग बरसानेप्रथ
नहुलारी-बंदनबंदतिम्यालोचनिप्यारी चरनकमल-अठैरुव
चनरसाला खेनचलिजहांनंदलाभा निरखिवहनतननंह
जूकीरानी जोहउगायमवनमे-आनी बलणउठाइभुवनमै-आ
नी-आभूषनपहिराइया सूरकेप्रभूसोजनखसिखःप्यारीघरही
पगया १-अरीमिरीपानप्रप्यारी भोरहीखेउनकहासधारी कुं
कुमभाललीलककिनकानो किनमघममहको विंदजुहीनो ॥
बलण बिहाजमघमह हीकोमसकनिरखिससिसंसेपस्योः ॥
सरनिसाकोकिनाधूरनमेनमहहरपेहस्योः हाहरिहमुखक
हतजननीः-अपैलेवेनीकेनगुहिसूरकेप्रभू-भमोहनेकोरचु
किनमनमथमहि ॥ २ ॥ नंदमहकीजुधरुनीसोहेमेरेबंद
नतेनकिरिजोहे खेनतडोलतठिगहावैठारी कछुकम

नमोऽपानेह कियो जारी ठारीऽपानेह मनमैकी औभारी निरखि
सुतविवल नई वावाऽईको नाम लेले जोह सिगारी हई पटीपार
संवारि भुषनः जो हमे मेवाभरी स्वरके प्रभु निरख मनमें विधना
सों विनती करी ३ सुनियह वाकीरती मुखवांनी में अजरांनी
के जीप के जानी भरी सुतहे रूपकी रासी कितो काह वनवा
सी उहासी बलए कंरु वनवासी उहासी रंग ठे जसों वने में
रहुं गतोर लप्रमोतिक काचकंचन कों सने ललिता विशा
खासो कखो ललाली तजिके कितरही स्वरके प्रभु भुवनवा हरि
जानमत्तऽहा जो कही ४ दिन दशपंच प्रहक जककी हीही
सुंदरस्यामही खाइदीनी मुररुपरी तन सुधिन सी नारी प्यारी
उसाऽई भुजंगमकारे ॥ बलए ॥ कारे भुयंगम डशी प्यारी गारु
रिया हरि सवे नंदनं दनमं ए विनयो सखी विखना हीरके मनु
हारिक रिमोहनकी ल्याए ॥ सकल विषदेषतहने स्वरके
प्रभु जोरी प्रन चल जावो जुग जुग हो उजने ५ ॥
अनवे विहे विपुवदन विनारे कंबु मोहनतनऽअन सखी

पुरवैठी मनभयो हुलासा कीरति गई मै पति प्रपने जु पासा ॥
बलए प्रपने जु पति पे गई कीरतिः प्रात कीरति वी चारही
मंत्रकामो हो कि वाहू को सब सखियन मिलके उ विचारह
हंदावन जु वनमे रच्यो स्वयंवरस्पुस्यमदप वहायो सरकै
प्रभुस्यामदुन हो श्रीराधिका वर पायो ॥ ६ ॥ विविधिवर्न
सबकोनो मंडपभरि नरिनां वरिहीनो विविधिसु मनव
कीई अजभै वति आनी दभरी गई ॥ ठार ॥ प्रानंभरि प्रज
जुवती गई हरखिकंकन छोरही एसो गिरि तुम उच कि
तानो लभहसि मुख हकी मोरही छोस्यो न छूर हो रडो व
सीत कीरी तमम भई सरके प्रभु अज जुवती गार मन
भावति दई ॥ ७ ॥ राग श्री विलावल ॥ ललिता जुके आ
जव धायो श्री हंदावन में व्याहरस्यो यो सखी सब बो ल
पयई वेमंगल निधि नो ले ल्या ॥ ८ ॥ ठार ॥ कीई मंगल नि
धि जु नो ले मंडली प्र इतरची विधि वंदन वार च हू हिल

हामिनीघनघोषिवारिः जवनिहरिमुखसुखिकुंडलवि
 राजतगंडमंडितः नाहिनसोभासरौरवी तवप्रौरकौन
 समानत्रिभुवनसकलगुनतामाही मारनिर्त्तसंगडो
 लेः केशुकीपरच्छाई ॥ ६ ॥ गोपीसवनोतेप्रार्इ हरि
 सुरलीधनीपण्येबुलाई सवमिलमंगलगवे एवहुफु
 लैमंडपछावै षार श्यायोरासर्मंडलकुंजर्मंडपफुल
 मेवेशीरची वै ठेस्याभास्यामवरत्रै लोक्यकीसोभारुची
 इतिकोकिलाधुनिकैरेकुलाहलउतसकलब्रजनारी
 ७ प्राइजुनोतेवहुदिसातेगावतप्रानंदमौगारी ७
 पाणिग्रहनविधिकीनी मंडपभरीकिभावरी हीनी
 षार ॥ हीनाभावरिरासर्मंडलप्रीतीगाठरुहेपरी सर
 दनिस्त्रियोनमिलनिकविंदासुभघरी गावैगीतपुनी
 तसदरीवेदरुचिआतुधनीनेहसुतब्रषभानतनयासमे

॥ जीरीवनी ॥ ८ ॥

रासमीडलभुजजोरी हरि हेसावलैराधाजुजोरी मनम
थसेनचराती एडुमरुनेनाभांति वंदिजन हरिजल
गाने मघवावाजेत्रन जावे छार वाजंत्रवाजेसकलक्षेत्र
निजनपोयप्रजुरी वरषही हिनहानविमानचठिजेजै
सधुकरिहरषही सुनिसूरदासमननायो प्राणेरफजीमन
कीसाधामदनमोहनलनडलहोडल हनिश्रीराधा ॥
रागश्रीबिलाभुल ॥ प्रथमविहाविधि होयेरही करकक
नचारविचार हलिहसिकसिकसिगांठिवनावतनवलति
पुनप्रजनार नधूटेजिरधुडोरोनहोई ॥ प्रहोकसिनांध्यो
डतिजुकेपाणिनधूटेजिरधुडोरोनहोई ॥ वडेहोप्री
तवछोडीप्रोहीउनीजावकेराये करेजोरोविनतीकरेना
तरडहोउतीजुकेपाए नधूटेजिरधुडोरोनहोए ॥
इहेनहिगिरिकोधरिनोलेनेहो कुंवरजोविनाथवहात
मंहावतहोप्रापुनकेषकांपनलाजहाथ ॥ ३ ॥ नधू

कोपोंचीखोलिअपनेकरकी २ तबवेबोललईनीहरानीवेरी
 अण्डेकुंवरिहिंगसरकी वहनहेखिहोउजननीतव अण्डेअपस
 धपरस्परसुरकी ३ एसोजीहीसामकीतोभा वेठेसबसिलघर
 कीपरमानंदविरचविनाईजोरीअण्डुतरसिकगिरधकी ४॥
 पगअणीकाफी॥नेनाअण्डिकेरूपसापलपलपलनहिजागे॥
 निखिबासंरयोहीरहेलोवेनहिजागे॥१॥हसनलसनभूषन
 सजेपीपकेअण्डुरागे॥महनमूरतीजायमेवलेअण्डनेनापागे
 ॥२॥महासअण्डुनोकीयोसवसंतसमाजे॥अरीअरातनके
 खोहरिपंथतेनाजे॥३॥कालरसीलेरसभरेनेनामहमोने॥
 उरफरहेसरकेनहिकोनकिंगराते॥१॥लालकहाकरनरूम
 अण्डेएहोसोतोमोसाकेतेभवनगवंनलावकिंजिनकरोठाठे
 वारेरहिते॥२॥लावजोतिअण्डुममनबसावाकेपाउधाते
 हरपनलेठाठीरहीवनैकुबदननिहारो॥३॥तेतागहपरेहन
 कीलापेमेस्योकाजेसकतसनेहरहेजोपरिपंकतराकेधुअण्डे

सतसिधलकरपवकरलीनोशोरसंभारकिलकिकं ह ॥
सर्षस्यामजूकीप्रवत्तमशीरोसकुंमार ४ नधूटे लउती
डोरोनही २ प्रहोकसिवांशुधोगिरिधरजूकेपाणि ४ का
हकीकरतसहायेसखीरीश्रीडोप्रधिकसंयोन ॥ शोरन
नहेहोकुवरीकोकंकनकेनुलावोप्रथमान ५ नधूटे क
मलकमलकरचरनहीप्राणपियाकीनाल प्रवक्तक
विकुलसाचोभषः नइहेकटिलरीनाल प्रवक्ते ॥ ६ ॥ जो
जोशूटेडोरनोत्योवठोप्रेमडोर हेषिहो प्रनकी प्रीतसर्व
जनहसतिनहनमोर नधूटे ७ लालाललितकुं कुं हचं ह
कीकरहोरसिकरसयोन यहजोरी प्रवचरल हं हावन
लिवलिहासकन्या ८ ॥ एगप्रीविलावल ॥ लोचन
लोललित एकलिरकी वातकरत तेरे हो ठासो जोसोम
तिहेखिसंकनहीडरकी १ कहतरहीनिगजमोतिनक
स्योमहईबाकोड लरीगरेकीमाहिदोखी उजैन ह ईसा
त

कोषों की खोली प्रपने करकी २ तववेवोल लईनी हरानी बेटी
 प्राण कुंवरि ठिग सरकी वहन है खि हो उजन नी तव ३ प्राप स
 ध परस्पर सरकी ३ रसा जो ही स्याम की सो भा वे ठे सब मिल घु
 की परमानंद विरच विनाई जोरी ३ प्रकृत रसिक गिर धरकी ४ ॥
 पाग श्री काफ ॥ नेना ३ अटिके रूप सी पल पत्रि पल नहि जागे ॥
 निखि ना संर यो ही रहे सो वे नहि जागे ॥ १ ॥ हसन लसन भूषन
 सजे पीपके ३ प्रनुरागे ॥ महन मूरती जाय मे वसे ३ प्रनने ला पागे
 ॥ २ ॥ म हा स ३ प्रपुनो का यो सब संत समाजे ॥ अटी अरातन के
 स्यो हरि पंथ ते साजे ॥ ३ ॥ काल रसी ले रस भरने नाम हमीने ॥
 उर रु रह सर के नहि को न कि रंग राते ॥ १ ॥ लाल क हा करन लूम
 ३ प्राण ए हो सो तो मो सा कै रो भवन ग वंन लाल जिनि करो ठा ठे
 वारे रहिते ॥ २ ॥ लाल जोति ३ आजु म मन न सा वा के पाउ धारो
 हर पन ले ठा ठी रही व नै कु व द न नि हारो ॥ ३ ॥ ते ता ग ह पे रे ह न
 की लापे मे स्यो काजे सकत सने हर हे जो परि पंक तरा ऊ धु ३ अ ई

इनका लहास विना सवित्री नोहके जाय देखे विचार ॥ च
त्र भुज प्रभु भुमके तुर हो एसा प्रातितीहारी ४ ॥ ॥ प्र
थ श्री रुक्मिणी विष्वाह विष्यते ॥ राग समेरी हो हा ॥ ॥
कुंडनपुरको मांडवो नादी पतिकी जान परण तरोणि रुक्मि
णी बरहु लहो घन स्याम ॥ १ ॥ छाल ॥ विद्रुम हेस कुंडनपुर न
गदी भाषे मक नपत हो न वनिधिस घरी पांचपुत्रे जाके क
या हे रुक्मीणी ती नरु लोक त रुनी सर रवनी श्री ह तरुनी
ती नो लो गरवा नी लुहस प्रसा पचिर चिरंग मूर्ति रमा गरवर
एक प्रंग नाहिन वनी ॥ ॥ जुगल सषोडश सल्लन ललना भा
रथ पिंगल पारषा षोडश भूषन प्रंग विराजते हिन हीन षोड
शवारषी मगराज कटी ऋट प्रंग जलोचन मयंक वर्द्धन सहेस
॥ हि कहत क्लोहास गिरिधर उपजा विद्रुम हे प्राहि ॥ १ ॥
हो हा ॥ कुंडनपुर प्रगट नई कन्या रुमनी नाम याह करके भीम
क नपत भुजा ए सवगम १ ॥ छाल ॥ रुकमपोराजा सव हेरी

वरपायोसि सुपालचैहरी * रुकमनी के जीयनाहिन भायो
 भाषकसुता एक विबुलायो ॥ छंदः ॥ बुलाए विप्रसंई सो सब क
 त्योकागदलिकदियो रुक्मीनि नाक कसिके विप्रनीदकीनी
 बहुरीजा ज्योतरगोमति रूतोकहाफीरे ब्राह्मनएही
 निजद्वारामती स्नानकरि विप्रतिलकहानी भेदले प्रातु
 रचल्यो सुगनको फलः तुरतपायोः दारे जाइए पतिपति मि
 ल्यो जाये विप्रचरन परसे हा धले पाति रई वेगकंत पुकार
 सुत ५० प्रो ० प्रसुकेव सहम भई तव जोरी कर द्विजक विनता
 स्वयंवर राजा जुरे हयदल गजदल पाहो रिथल घावनिसानाघ
 रे सिधवल के सिस्पाल पावे मेरे तो वृत्त एक स्यामहि कल्लोहा
 सजिदिधर रुकमयोसिसपालहे ॥ २॥ होहा ॥ नरपजुरेक हत
 बहुदेशके प्रांगनगुरे निक्षान ० प्रजउन ० प्राएहेसखी रुक
 मनीकेरेसेन १ ठाल बहुरिसुनिदीजुवतीया रुक्मिनीहे तुसा
 तलभइ धृति या वेद्विज ० प्रपनेरथवै ठारे हरिज् कूं न पापुरकुं

सिधारे श्रुं हः ० प्रापोकुंडनपुरहीपोचे विप्रतवमांगाद् ० प्रा
पोश्रुतेद्वलसाजिह्वलधर ० प्राई हरिनेलोभयो ब्रुविप्रसेहेस
रुक्रमनी ० प्रंविभापजनचली धूपहीपनैवेघघतपकसंग
वरुलीए ० प्रली पूजिगौरामनाये संकरनीमकसुतविनतीकरे
वरहेहोही नानाघडलहोरुक्रमनीपापनपरो कृष्णतवरघसा
जिगठिसत्यकरनप्रभुपातिपा करुतकृष्णोदासगिरिधरव
कुटिलुनादिजवातीपा ३ होहा सरवीयनसोरुक्मिणीकहे
कहांगयेयदुपति^३जे ० प्रा नवनी स्वधैर्यवररच्योलाजतुमेने
जराज १ जोपेधोख्येवहुरखवारो मनमेसुदितफिरेसिसपा
हेवा पूजरुक्मिणी ० प्राई जोधाधरनिपरेसुरकाई श्रुं हः सुर
काई जोधाधरविगिरिपरकृष्णैसवरुक्मिणीहरी कोपिहितचि
तधनुषकरगहजेलरुक्रमयेकरी जरासिंधसिसुपालपहुंचे
वाननकीवकीकरी ० प्रसरसेनसिंहारहलधरकृष्णसारंगकरध
री तवकेटिरथहरिकायोसनमुखजुद्धरुक्मयेकीयो मूर्ध्मस्त

हरिजीयो धकितु मये चहुं प्राये ॥१॥ राग सार ठा ॥ तारता बाधि त्रिभुवन रा
या जो हो छपन को हरिजु रि प्राया नारी गावे गारि मन ॥५॥ =

कमल प्रसन्न बांधि रथ पाछे ही प्रो तव हिन वा डक वर ससक मनि
रु कमयो प्रभु उबर कहत वल भइ वात प्रजगत वडे धो नाहि
करो छारि देवार को प्राये छल्ल कारन सब सरि छल्लो हास गि
रि धरः जो धामु रऊ ई परे ॥४॥ हो हा ॥ कमल नैन करुणा करी
प्राय जु जु होर मगने नीमने हरषी हीरामानिक मोति वरषी
नवरंगने हति हारो लुजु जसो हा जु को पारो ॥ राग सार ठा ॥ १॥
हो नवरंग लाल विहारी लाल कुं उ नपुर की नारी तो हरे तपस्प
रगारि हो नवरंग लाल विहारी १ गारी गावे हरिजु की सारी
लुमलु हो कुं वर वन वा रि हो २ तो हगारि का हे को ही जे ते ते रूप
नैन भरी पाजी ही ३ तो हे कंसतणो उरला प्रो त्त तो वरष मे भा
ज्यो हो ४ हरिजसो धो पे नि हारि सो तो कुं गोल की मै वा रि हो ॥५॥
तरा हो उनाप जग जाने सो तो वेद पुरान वखाने हो ६ बसु देव
देव की जायो ना बान्ह महर को कि कायो हो ७ हरि ति हारि
यात मै जानी तो हो उषल बांधो तां छीनी हो ८ हरिजसो

हापासिर्वंधायो शमो हरनामधरायो हो ९ तुमजमुलाग्र
जुनमो ज्यो तुमपापहोषकहाछोडो हो १० हं हावन चाई व
सी तुममामो कंसी हो ११ तेरी सोलासहस्र ब्रजनारी तुम्ह
को क्यो कहाये ब्रह्मचारी हो १२ हं हावन बंसी वजाई पर
नादिले लां २ हो ॥ १३ तेरी कवी भरमग नायो तिन कर न
कु या रे जायो हो १४ तेरी वेन सुभद्रा जानी प्रजुन के रूप लु
भानी १५ हरि दुपाही हासि तिहारी सोतो क तु पंच भतीरी १६
एतो क्लो ही जाडो गावै सो तोर हस्य व धाई पावै ॥ १७ ॥ हो हा
हरि तुके वर वेह डो वधायो तव कुंवर कले उल्लाषी ॥ १८ ॥
राग श्री मास्तु ॥ कुं वर कले उ क्लेश आरोगे नारी गावै गारी तुहारी
१९ ॥ माया भुवन बलुर्दश व्याहन चलन नारी जो व भरी जरान
ही व्यावै सहा कुं वर सुकुमारी जंन क्लो को ने गहिवा ओ जो
कष्टुला जे प्यारी पद ॥ ६ ॥ वेहि वहित हरि सव सी नाना
नत प्रिया ल कंन करुई न तोर ए चै र चो रि चठ गोपाल १

रागसोरठा॥ चोखि चठे गोपालमुपारी वेगिह छन रुक्मिणीना
 रिदीनो हृद्यलेवोसकुमारी मानोविधिसे डारी दुलोडन
 हुनीसुंदर आदिजोको टिकरतिपतिवारी होहा ब्रह्मासा
 वित्रीसहितमहेशप्रपिंडरसचीसहितजहां परणातकूल
 नरेस १ जहां परणातकूलनरेस २ प्रायेचंद्रगनेस घनेस
 ३ प्राण० शुकसनकादिकसेस ४ प्राणनारदसुनिउपहेसा ५ प्रा
 येछयनकेटितेतीसा होहा छपनकेटिजाडुजुरे उग्रसे
 नवसुदेवदेवकीमाता रोहनी जुवती जननाहिनछे हो
 ५॥ रागसोरठा॥ जुवतीजनजुरी अपारमिलिगावति मंग
 लचाराविप्रकरतैवेहउचारा घतहोमेअनिमुरनधारा
 त्रिभुवनभयाजैजैकरापरलो नसुदेवकुमार ॥ होहा
 परणीपधारापडुपति ७ प्रांगनधुरेनिसान जाचकमंगेधु
 रचठिरहसधुईदान ठाल मंगेरहस्यधेवधाईहोना
 श्रीराउधे ८ प्रादिषुडिजानाकि तेवागेनसवरु होना ॥

जाचकनेनरीखमाना एसोत्रिभोवन वरुनाहिन प्राणाजी
त्योजीत्योगोवर्द्धनराना रागमास्तु जीत्योजीत्योहेगोवर्द्धन
रानो वसुदेवघरवधावानो राए प्रागनचोकपुराए भयोहे
कसकलमनभाननो छुँद भयोसकलमनभविजडुपति
वंदनचोकपुराए प्राएतिसाजिजीसबुडावेनी धरपहापले
प्राये वेठेस्यमसिगासनरूकमनी प्राएतीलोनकराई रत
नजटित्तसिरसेहरोसोहे सेसनवरन्योजाई अधिकवि
राजतदंपतिहोउज्जपाज्जपबिलाई जोरोपरस्पर छोरन
लागेजोरोछोरानाजाई रुकमिनीपिताविरंचिभयोहे
सुरपीहरषरकारा प्राएनकारन करतसकलविधिया
हतयोहर रुकमीनीहायविधातावांध्यो दईगांठधुरा
इतरेकरहिन छूटेलाउनवरदेवकीमातबुलाई ॥ ॥
रागधन्यासरी ॥ देवकीहोतेरीमरा लुंलाएवसुदेनहोते
रोपिताबुलाए तेतरेकरहिन छोस्ये जाये भलातोईगांठ

उपर्युक्तो नष्टो सो जाये बलभद्र होते ते नार बुलाए सब दाहोते
रावेहन बुलाए तेरे कर हीन छो सो जाये कुंती होते राक्षसी
बुलाए उधो पञ्चनसखा बुलाए तेरे कर हीन छो सो जाये
नंद जी होते रोता त बुलाए ब्रज वासी सब लाये बुलाए ते
रे कर हीन छो सो जाये छंद ब्रज नासिन को नाम सुनत
ही सिध लभए हरि राई विहा परम सुख विसर गयो त
बनै न नी भर भरि आई वृंदावन बंसी बट जमुना सुर
ली मधरि वजाई मोर मुक गुंजा मति भूयन बाल के लसु
धि आई ब्रज वासिन की पर हर ज भोगि र पर न्याये चरा
ई एक एक रोम भ्रंजां को टिस मति व्यसत्रि भोवन राई यय
सापोहि। न सोधि मुहूरत भीतर भवन पधारे दुग्ध फेन
समसे जही उपर वरवध बैठारे प्रथम समागम सुदत के लरस
संवादि पर घर नो निध कल्प विर छहे घर घर उपवन वा

कंचनकेचित्तजटितमंतिमंडितपाजसवारसंबारी पना
घोषपितेजाभ्रषनविदुमखीभाभारी माणिककससफा
टिकमणि कुंगरामकरसमोरमंडाए अगारधूपधूपनि
कलिनरोषे मंनिगिरिवरबाहरछाए सोरेसहस्रएक
सोकन्यानरकुसुरवधल्याए एकमस्तसव रूपर
तोपाएबलिवरपाये रुकमनीजांबुवतीसतभामासा
साभरांनि लरुमना कार्हीहीमित्रविहाए अगोपर
रानी दशदशपुत्रएकएककन्यातरुमातरुमीप्रताहीनि नि
राकारनिरलेपनिरंजनयोमायारसभांने पुरीनकोउधा
रामतीसरवरनहीगोमतीसारी कल्पसमानदेवनहीहूजो
अगुलताउरधारि अयनकोटियडकुलधंनधंननितह
राहरसनपावे पुरीद्वारामतीदेखनकारनसकलअप्र०५ मरउ
नगावे तीरथचक्रगोमतीसंगमषट्ठिनकरतस्मा

नरनारिसवहाएचतुर्भुजश्रीपतिरूपसमानारुक्मिनिव्या
 रुकथेजनकुल्लालिखिसुनेप्ररुगावैधर्मप्रर्धप्ररुकाम
 सुरुफलचारपहारथैपावेभक्तहेतुप्रवतारविमलजस
 भूतेनलोलाधारिजिद्विरधरराधावरउपरजनजाये
 बलिहारि॥७॥इतिकुलोदासेरुक्मिनीविवाहसमाप्त
 रागश्रीविलासल॥देवदेवारीशुभएकादशीहरिप्रबोध
 किजेहोप्राजनिंजानजोउगेहोहोविंदकसलभक्तहित
 काज१घरघरजोपामंगलजावतसबप्रजजनप्रभयमन
 सुखहापकप्रतिप्रानैदभवनभवनप्रतिमोतिनचोक
 पुण्यक२जहांजहांभारपरभक्तकोंतहांतहांहोतसहा
 यक२परमानैदहासकीगकुरजनकेमनबचकायक३
 रागकानरीपमेधसोजनतापनिवारनचारभुजचारश्री
 सुधलेःनाटापणभूयभारउत्तारनः१चक्रसुईनेशोधलोक

मलकरः भक्तनकेस्त्रिहाकेकारन सैषधस्योरिउद्दरविडा
रनगदाधरिहेउदुष्टसंघारन २ हीनानाघदयालेजगत
गुरुः प्रापनहरन भक्तेचिंतामण परमी नंदहासकेगकुर
भूतलकाजकरतभक्तपेनेन ३ रागपूर्वी मोहननंदराध
कुमाहर प्राटे ब्रह्मनिकुंजनाईक भक्तहितः प्रवतार १
प्रथमरेचनेसरो जवंदोस्यामघनगोपाल कनिककुंडलग
लमंडितः प्ररुननेनबिसाल २ वलिरांमसैतविनोद
लीलासेससंकलहेत हासपरमानंदप्रभूरिः प्रगम
लबोलेनेत ३ वंदोधरनगिरिवरभभूपराधिकामूरवकं
मललेपट मीतमधयसरूप १ वंदोरसिकवरसंगीतसु
खतैधकुंनितवेनः प्ररूपकुल्लहाऽसउहारउरपरलोल
मालारूप २ श्रीकृष्णायनमः प्रथमविवाहखेललिष्यते ॥
रागश्रीमाल ॥ भजवेदविहतवरसानो प्रथमातगोप

मलकरः भक्तनकेरिहाकेकारन सैषधस्योरेउदरविडा
रनगहाधरिहेउदुष्टसंघारन २ हीनानाघहयालेजगत
गुरु० प्रापनहरन भक्तेचिंतामण परकी नंदहासकेगकुर
भूतलकाजकरतभक्तपेनेन ३ रागपूर्वी मोहननंदराय
कुमाएर प्राटे ब्रह्मनिकुंतनार्क भक्तहित० प्रवतार १
प्रथमरेवेनसरो जवंहोस्यामघनगोपाल कनिककुंडलग
लमंडित० प्रहननेनविसाल २ वलिरांनसंतविनोद
लालासेससंकलहेत हासपरमानंदप्रभूरिः० प्रगम
लवोलेनेत ३ वंदोधरनगिरिबिरभभूपराधिकामूरक
मललेपट मंतमध्यसलरूप १ वंदोरसिकवरसंगीतसु
खतैधकुंनितवन० प्ररूपकृष्णहाउहारउरपरलोल
मालारूप २ श्रीकृष्णायनमः प्रथमविवाहखेललिष्यते ॥
रागश्रीमास्तु ॥ अजवेदविहतवरसानो प्रथमानगोप

तहां एनी ताकी राधा रुचिर कुमारी विंता पात प्रातः प्यारी २
गुन रूप रासे वि बहं नीर तिर माउ मा मर कनी ३ अर्द्ध बर्य सात
की वाली जाग खिलन खे लर साखा ४ तहां संखि वृंह र हर्षी
री मानो ये सब या की चरी ५ ब्रथ नान भुवन हिन आ वै क ह
खेलो अनत न भा वै ६ एक दिवस सर्वे मिलि आई बिन
ता कही रिम हिर सु ना ई ७ प्रा जु प उप वन खे लन जे हो
जावे संग राधिका पे हा ८ जहां हें हें कुस्म प्रमत्त के वे
लि तहां खेले सर्वे सहै ला ९ सुने मेहो रि कुं वरि सि गरी
नख सिखे आ भरन प्रनु हारि १० दुल हनि सी वनी लई
ती सखा पुन मे गुं न निवडे ती ११ दो खेरी जीरी हिम हू ला
कर ई हुरी वि हुरि वारि १२ लली अण्णा मंग सी
गनि वेधे आहार कुमारी १३ एक स्या म वरन ए
वाला एक सि सारी १४ सुज के उपर स्प र मे ली
सुभग सहै ली १५ सुख पर्य क जे पर्य कति रा जे

प्रत

राजे १६ मानो सशिसशिः प्रविंहा अरुई दारा जने च ही
१७ राउपमाउन ही पे नी को जी पाये जानत हे जी वकी १८ ॥
सववा लाउपवन आई जहां ललित लता मन भाई १९ तहां
रंग रंग कुं सुम सुवासा अलिगन गुं जत हे पासा २० ॥ अलि
न लन नरी नरी लावे ताके भूषण विविध वनावे २१ रूउ
लकन के लेजा अंगी आं पहुंची रू लन वरू रंगी आ २२ सव
रू ली फीरे लहे ली मानो जगम कंच ली २३ तामे राधा अ
क सुहांई सवही मने रही सुल काई २४ मिले खे लर साला
ताहां आण मिले नींद लाला २५ सींग वहुत गोप के छैया
वेन एक ह लधर भैया २६ करि लेने गे हुं जोगानी लागे खे
लन रूप विधा ला २७ जब परिहरयी अंज वाला तव च
कृत भये नींद लाला २८ हे खी राधा रूप गुन ग हे रूरी रू
लन के आ भरन पे हरी २९ तव मन अलि लाषा वाठि ने
कु देखे जा पे ठाही ३० हरि ये कउ पाय वना यो ३१

जब चरन सभापे प्रायो तव निज कर नार उगयो ३२ तहां
आये रहे हरि ने र गेंडु के मास सब अंग हरे ३३ हसिक त्थो
गेंडु मोयुदि जो एसी हांसी क बुहन का जे ३४ कहे कामिनि
गेंडु के सो कहां बोलत वचने सो ३५ सखा हाथ डरा एके
हीने त्यो त्यो लाल अधिक रस भानी ३६ हरिक हत गेंडु बु
रायो छुं छट पट ओट डरायो ३७ स्यामा कहे ठग पर मेरो
जो पे पाप वै तो लेते रा ३८ यो कहिकहि अंग दिखावै हरि
हर सपर सख पावै ३९ तव सखा मतो मिलि कानो नंद ला
लही उत्तर ही जो ४० जो अपुने खेल सकै लो तो विहां खे
लहि खे लो ॥ ४१ ॥ जो गेंडु फअनो पे ही ना लारी ते करि जे हो
४२ लुमड लहो हो ज्जति हारी डले हनी भ्रम भान कुमारी
४३ जब जोरी छुं हर वन हे तव बेल सरस हम गन हे ४४ सु
निष्पा सखा तन चितयो कथ्यो ज्वारि भलो हम हितयो
४५ यह खेलाए खे लहनी को याते खे हमारे फीको ४६

रिज्वारनट्टरसुनायो

वृत्तिसवमुत्तीकाना विधिबिहांखेकी ठांनी ४४ एकभई
 डलहनीकामया एकज्वावनो बलजेया ४९ तवडलेहनि
 उबटेवैभई पठभूषनतनपहराई ४५० मनसोहंमंनज
 नकीनो निजभालतिलकघसिहीनो ५१ एकसघनकहं
 मकीछाई नरनारिभरेएकगोई पर ५२ होउसुमनसयानन
 विने होउंप्रासनहिआकिने ५३ तहांसनमुखहोउवैगये
 मिलिमोतिनाभागलगाये ५४ चितंप्रंतरपठजनधास्ये
 तवंप्रातुरभयेइगचास्यो ५५ मानोहरसनविनसुजुगवि
 त्वविरहचैनकरिपाते ५६ तवकरीजननकहाति तवसव
 मनभईसुहाति ५७ कछुसैकुचितगर्वगलेहली वरमाला
 लालनउरमेला ५८ गत्योपनकमूल हरिपाईसविसक
 तनसारहागाई ५९ होउलोचनभरिभरिनिरेये मानोविडुप
 रस्यरकरखे ६० तवलंभीसवसुषपाई एकवीराहेतवनाई ६१

एक आनंद उरन समाई एक कुनिकुनिले तत बुलाई ६२
सामाई स्याम मुखवारी तव गावति गारि प्रहीरी ६३ अरे
ज्वालछाब्बके भोगी कहां जाने पान अरोगी ६४ मेरी राधा जु
आजु सीखावै तो तू परम पुन्य सुख पावै ६५ हरि निजक
बीरानी नात्रिय मुखमेलन हित कानी ६६ जब अधुरत
अरु नत नहरे तव सामाजु आनख फेर ६७ तव हसि उठि
मैं ब्रजनाला भलो क्यो रह क्यो ने नंदला ला ६८ एक हेक
त्यो सुन मेरो ए बुयो नब हेतै रो ६९ तेरो देह कांत ककी प्रति
कारो एक बन वरन कुमारी ७० मैयां छाडि देहा थल ली
को महमे टनक हमके लीको ७१ तेरे कर कगे रवनवारी
क्यो परसत हेस कुमारी ७२ ए
खे हरि ६६ हया माई ली खिराखे ७३
रसुनावे सो सो मोहन म प्रति भाये ७
तहो चो खिवावनाई ७५७

एव च सवनिमन भ्रामे नरव धृत हं पधराये ७७ इई छे
रिपरस्पर बोही घृत हो मेरुतासनमाही ७८ फिरि सात
वावरेश्चा एडुम मंडल साषद्विवाए ७९ आरोगितसारकं
साय वाषोमोह विमोह अपारा ८० तेली अधरानकी
अरुनाई प्रतिविकित नरवत हौ ई ८१ बेसो भानदन क
मकलकी अरु मलक कपोल अनतकी ८२ ताकी उ
पमायेगाई जोपै पट तरको कछुपाउ ८३ सवगावतगे
पकुमारी रसरंग कुतोह लभारी ८४ तहौं आर सुहाग
नि आई लागे कान्क असी ससुहा ई ८५ तहौं हान सखी व
रही नो निज तन मन अर्पन की नौ ८६ रासो विहा खिलव
नि ही आई सुंदरी ससुपा रिप हाई ८७ एक कुंज सदन
की छौई वरवर धू वै ठे ते गौ ई ८८ हो उन वसंग अरु सखी ते
भरा भर जोवन महमाते ८९ रतिके निरसा ले हो उताकी लाल
सखेन को उ ९० उमपोर ससिधु अगाधा अमखे रवि हू तन राधा ९१

हृदियुद्धतगणपटजीनो कहां कैरनेहननीनो ९२ नये
होउअनकेमनभागे होउबारनेलेनुआए ९३ एकबूरुतीव
रतोहिभायोएकअंगुरीनचुनकउठायो ९४ एकलेलेकंठ
अगावेएकदेखिहेशिसचुपावे ९५ पुनिल्यामसंहरसो
ल्यो २-६ दिनखेलनतने का हूमलेनाअंतनजेवो ९७
यो कहि कहि आस्तामाहीजासवगोपकुंवरवडभागी
९८ सिनायचली अजवाला मानोकंचनमरकतमाला
९९ तहामध्यराधिकाराजे खैलेसुसमदिसमदिकछुला
जे ११०० अथमानकुंअरीउवनरचली आई तहामेह
दिमहासुहीचपाई १०१ गई निजनिजगहसहेली श्री
राधाजुदहीअकेली १०२ आईजननीठीगरहीगठी
तनसलकुंनसोभाचाहि १०३ तनरानीभुजमरीजेटी
कहिलेखिकहांवनचेठी १०४ अरीमयाभैवरपायो
अलिहुरेमोमनभायो १०५ तासोविहाकीसुनसजनी

दिनमानालायोकररजनी १० ई नंदनंदनकोनाऊ तेवसतहे
गोकुलमीऊ १० ७ सुनिञ्चवन सुनतमहतादी येवोलीवन
नवीचारी १०८ ७ प्ररीवेसुनीय ५ तु हेकारो विपुलंवनवरनति
क्षरो १०९ तासोखेलत कारोहोये कहांभरवेताहिनचूपे ११०
नानातेरासोवरनीको मेरोपरमभातो जीयको १११ मेरोबिहा
ताही ~~को~~ लोकराए इहिनेम ७ प्रदत्त जलधराए ११२ तहांपरि
परोसलि ७ आई सुनिचितेयासव ५ सचुणई १३ तवहसिहसि
देहेतारी ७ प्ररीरधाहुइ हैकारी १४ वेकारोसोवनवेला जिन
परसोकोऊसहेला १५ तवनोलीप्रथभनकुं ~~की~~ हीडलारी ७ प्ररी
तुमकोउनकारी १६ मेरोबिहाकरेगीमैपाससुरोगोकुलको
रैपा १७ सुनिचक्रितकहसवनारी तेरेउत्तरकीवलिहारि
१८ वा लोमोहबिभानोह ७ प्रपाए कविवरनेकोनप्रकार १९
जहांसेससारहाहापो त ५ हं कविजनकोनबिचारे २० जाकोपाए
नकोउपावे केसोहासनापयण ~~की~~ ने २१ इतिविवाहखेसमाप्ती॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥ अथ चंगके पद ॥ रंगकल्पाना ॥ र्व
ग उडावत कुवरक न्हैया ॥ पचरंग पाठको मां जो अ
नोपन शोभितहें करि हो उतैया ॥ १ ॥ सुंदर वारच
नत त्रिविधे सुखदा यक त्यो त्यो मनमें प्रति
सुखपेया ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर एना लको
मुखचुंबत ब्रज रैया ॥ २ ॥ प्राज अटा चठि
नवलनाडितो चंग उडावत माई संग सखा
गोपनके लरका और वलदाऊना ॥ ३ ॥ उत्तप्या
री चित्र सारीपें माठी ठीनी कानी डोरि काट हें
इतवरहग एचितवत नागरिनवलकिशोरेश

इन भवत वै ठे गावै राग सारंग रं ग म च्यो जारी ॥ २ ॥ सारंग ॥ चंदन
निकुंजताम्रें चंदनके वंगला चंदनकी ता पर वै ठे हो उ चंदरी ॥ चंद
नके बागो पहिरे चंदनकी आवेलहर चंदनके फूलन सुहार सुख
कंदरी ॥ १ ॥ चंदनके बमर धन चंदनको सब शृंगार चंदनके भाज
न बहु भरे सुगंधरी ॥ चंदनके पुमन पर चंदनके वेलनां चंदन
खोमि ते समरवहेत मंदमंदरी ॥ २ ॥ छुटत फुहारनीके तेहुं नव
चंदनके चंदनकी तांन गावै चंदनके चंदरी ॥ चंदनके विजना ठु
रावत बहु और हास गो बिंद निरखि निरखिमानत आनंदरी ॥ ३ ॥

राग सारंग ॥ वे ठे फूल मे हे लनें हो उरा धा गिरि धारी ॥
फूलन को हार सिंगार फूलन को फूलन टि पारो धारी
॥ १ ॥ फूलन की से ज जे दु वा त की या फूलन की पिछ
वारी ॥ फूले गा वत वे न व जा वत रा ग रं ग भयो भा
री ॥ २ ॥ फूले मधुप को किना निर ख त वह त प्र
वन सुख कारी ॥ श्री विठ्ठल गिरि धर रा लो ल पर
त न मन धन सब वारी ॥ ३ ॥ १ ॥ सारंग ॥ फूलन को
हे ल फूलन का सिन्हा फूले कुंज बिहारी फूली
री ॥ फूले दै पति प्रा नं द म ग न फूले फूले गा
न न्यारी ॥ १ ॥ फूले फूले क ब ल ली के
द हो ऊं हे सुख कारी ॥ हरिन रा म

पियतिनपर वारों फूलै चंपकवेलि निवारी ॥ २ ॥ सारंग ॥
प्रतिविचित्रफूलनकी चौरखंडी बेटे जहां रसिक गिरि
धारी ॥ रायवेलीमालतीमाधवी चंपकवकुलगुलावनि
वारी ॥ १ ॥ जाहीजूहीकेवरोकेतुकी सौरनसरसपरम
रुचिकारी ॥ पाडरऊरीसेवतीमध्वी बोलसरी रुचिस्त
बिरसंभारी ॥ २ ॥ नवरसरंग परस्परउपजतवनी
हेसंगराधासकुवारी ॥ चेतुर्जहासकुसुमसिज्जानं
करतविलासहोउपियप्यारी ॥ ३ ॥ ३ ॥ सारंग ॥ बेटे
लालफूलनकीचौरखंडी ॥ चंपकवगुल गुलावनि
वारोंरायवेलीखंडी ॥ जाहीजूहीकेतुकी कूंजो
करनकनेर सुरंगी ॥ चत्रभुजप्रभुगिरधरजूकी
वाजिकदिवदिननवरंगी ॥ २ ॥ सारंग ॥ बेटेला

लफूलनके चोवारे ॥ कुर्वकवकुलमालतीचंपोकेतु
कीनवलनिवारे ॥ १॥ जाहीजूहीकेवतंकूंजोरप
वेलिमहेकारे ॥ मंदसमीरकीरप्रतिकुंजलिमधु
पकरतऊंकारे ॥ २॥ राधारवनरंगनरेकीउतनां
चतमोरप्रखारे ॥ कुंनतदासगिरधरकीछविपर
कोटिकमन्मथवारे ॥ ३॥ ५॥ सारंग ॥ फूलनकेवं
गलावनेप्रतिछाजेवेठेलाजगोवईनधारी ॥ चंप
कवगुलगुलावनिवारेलाजप्रनारसुधारी ॥ १॥
प्रतचवेलीचितकोंचोरतरपवेलिमहेकारे ॥
वस्मानंददासकोब्राकुरततमतधनकी
बलिहारी ॥ २॥ ६॥

साईंग ॥ फूलन की मंडली मतो हर वे ठे मदन मोहन राज
ता ॥ प्रसरते कुसुम सुवास चहुं दिस लुब्ध मधुप गुंजारत
जाजत ॥ १ ॥ वेहरे विविधि नांति प्राभूषत पीतांबर वै
जंती श्री जत ॥ देखि मुखार बिंद की शोभा रतिपति प्रा
तुरभयो प्रतिभा जत ॥ २ ॥ एक रूप बहुरूप परस्पर वर
नो कहा देखि मतिराजत ॥ रसिक चरत सरोज प्रासरो
करिवे कोटि जत न जीय साजत ॥ ३ ॥ ७ ॥ साईंग ॥ फूल
न की मंडली वर मंडित फूल हिये पिय अंग लसे है ॥ फू
लन की सेज फूलन के प्राभूषत फूल फूल को ठिकका
म असे है ॥ १ ॥ फूलवती प्रतिदा सनुज सखी सब फू
ल हीये हुंसे है ॥ फूलीनि शससि फूलि रहे गिर
धर जोन ते कुंज वसे है ॥ २ ॥ ८ ॥ साईंग ॥ वेठे कुसुम

मंदिरमें दो उपायव्यारी मनहरत परस्पर जो हो प्रमा ल वे हे राव
तले नि सकर पत जाही पिय उपर ॥ १ ॥ गावति विकट राग सार
गले उपजत तान वांकिता उपर ॥ २ ॥ सिक पीतम की वांकि
निरखत प्रात शैमा प्रपर ॥ ३ ॥ सारि गं ॥ ला लवे ठेकु सुमन
वन ॥ तट पटी पाग वि घूर्ति तलोचन मकर कुंडल सो हं स
वतन ॥ १ ॥ सीतल ताई सुंदर ताई सौरत धाय रत्नो सो न
न ॥ परमानंद दास को गकुर भक्तन के मन रंजता ॥ १ ॥
१० ॥ सारि गं ॥ फूलन के न हे लवने फूलन वितान त
लन के धाजे ऊरोखा फूलन की कि वार हो ॥ फूलन
दी गंधी फूल ही सो फूलवे ठे स्यामा स्याम
हे ॥ १ ॥ फूलन के प्राक्षुषत वसन वि
कांदा फूल प्ररुहा रहे ॥ नंददास
साधि भूले प्रकृति वेदना रहे ॥

सारंग ॥ फूलनके प्रथमाराजतसंग ब्रवभानहु लारी ॥ मो
रचंदसिरमुकुटविराजतपीतांबर छविभारी ॥ १ ॥ फूलनके
हारसिंगरफूलनकेसंगसरवीसकुमारी ॥ परमानंददास
कोठकुरब्रजजीवनमनुहारी ॥ २ ॥ १२ ॥ सारंग ॥ मुकुटकी
छोहमनोहरकीये ॥ सघनकुंजतेनिसिंकेसांवरोसंग
राधिकालीये ॥ १ ॥ फूलनकोहारसिंगरफूलनकोखोरि
चंदनकीदीये ॥ परमानंददासकोठकुरग्वालवालस
वसंगलीये ॥ २ ॥ १३ ॥ सारंग ॥ नवलघनस्पामनवलवति
राधिकानवलनवकुंजतवकेलिगानी ॥ नवलकुसुमा
वलीनवलसिज्यारचीनवलकोकिलाकीरभंगना
नी ॥ १ ॥ नवलसहचरीचंदनवलवीनानुदंगनवलसु
रताननवरागगानी ॥ नवलजोपीनाथहितनवलर

संरीति यह नवलहरिवंशः प्रनुरागजानी ॥ २ ॥ रागविहागरो ॥
फूलनसोंवेनी गृही फूलनकी अंगीया फूलनकी सारी माने
फूली फूलवारी ॥ फूलनकी दुलरी हमे लहार फूलनके फू
लनकी चौकी चोरु अोर गजरारी ॥ १ ॥ फूलनके तरोतों कुं
डल फूलनके फूलनकी किंकीनी सरस सवारी ॥ फूल
मे हे लमे फूली श्री राधापारी फूल फूलने नंददास जाहि
वलिहारी ॥ २ ॥ १५ ॥

श्रीनृसिंहोजयति

रागकानडो ॥ २ ॥ इह ब्रतमाधोप्रथमलीयो ॥ जेप्राणी भक्तनको हुः
 खबेताकीफारोनखनीहीयो ॥ १ ॥ जेभक्तनसों वैरकरतुहै प
 रमेश्वरसों परमेश्वरसों वैरकरे ॥ रखवारेकुं बं कसुदरुति
 माथेउपरसदाफिरे ॥ २ ॥ पराधीनअपनेभक्तनकोताकरन
 अवतारधरुं ॥ इहजुकही हरिसुनिकेअज्ञेअतिमानी
 कोगर्वहरुं ॥ ३ ॥ भजेतेनोजतजुंनहीकवहुं पारथप्रत्ये
 श्रीभुषेएउभाषी ॥ परमानंददासको गकुर ईश्वरसकल
 भुवनकोसाखी ॥ ४ ॥ १ ॥ रागकानडो ॥ तोलोहों वैकुंठनजै
 हों ॥ सुनप्रह्लादप्रतिज्ञामेरी जोलो तो शिरछत्रनदेहों ॥ १ ॥
 मनकमवचनमानिजीयअपनोजिहिजिहिजानेतिहि
 तिहिरेहुं ॥ निर्गुनसगुनहेरिसबदेख्यो तोसोंभक्तबहु
 नहीवेहुं ॥ २ ॥ मेदेवतमेरोदासहुं ॥ खितभयोइहकलक
 होंअवहीचुकेहों ॥ रुदयकठिनपाखानहैमेरोअवहों

ही नदया लकहेहों ॥ राग हित नुहीरण कश्यपकों चीस्यो ह
दय फारिनख रुधिर अघैहों ॥ इह सुनवाततात सुनसूरजया
कृतको फलतुरत चवैहों ॥ ४ ॥ २ ॥ राग कानडो ॥ हरिराखिता
को उरकाको ॥ महा पुरुष समरथक मत्ना पति नरके शरिख
समहे जाके ॥ १ ॥ बहुत जातना करी करी देखिनि फल भई
रख्यो ॥ तावा लकको वारनवाको हरिकेशरन प्रल्हाद गयो
॥ २ ॥ हिरण्यकश्यपको उदर विडास्यो अभयराज प्रल्हाद दी
यो ॥ परमानंद स्वामी रुपाचिते तें आप आपनों भक्तकों नी
को कीयो ॥ ३ ॥ ३ ॥ राग कानडो ॥ जाके तुम प्रंगीकार कीयो ॥ ति
नको कोठि विघ्न हरि टारे अभय प्रताप दीयो ॥ १ ॥ बहुत समा
न दइ प्रल्हादे सवही निशंक जीयो ॥ निकले धंभ मध्यतें नर
हरि आपुने राखि लीयो ॥ २ ॥ दुर्वाण प्रंवरीष संताप्यो सो
फुनि सनगयो ॥ प्रतिज्ञा राषी मदन मोहन प्रभु उन ही पें पठ

यो॥३॥ मृतकम ए हरि सवहि जिवा ए उष्टुहु = प्रमृतपीयोर्परमा
 नंदनकवशा केशो इह उयको कौनवीयो॥४॥ एगमारुसिधो
 दो॥ जयति उग्रनर सिंहवरवीरभीषणजटाकोटिफारत
 गगनमेघमाला॥ प्रवलभुजदंडपरचंडनखवज्रवरप्र
 सुरउरनीनकृतसुरवविक्राला॥१॥ जयतिभक्तप्रंहादुहि
 तसत्यवानीप्रगतनृसिंहगर्जनमहानादकारी॥ स्फुटित
 ब्रह्मोडनवखंडचलमेदिनीगर्भ = प्रभक्तपतितप्रसुरना
 री॥२॥ जयतिप्रारक्तकैरधरीलंबतरसनालसतद
 सनककटकटिनभूकिकटभाजे = ज्वलतदशहीसमहाते
 जमयरूपधृतउगीरनिर्बिससमनेनराजे॥३॥ जयतिभू
 तवेतालजंबुकनहादकीनीदृष्टशिवस्तुष्टिसंहारकारी॥
 सिध्पसाकेसुधानामनरके जंत्रमंत्राहितजनमुडा
 री॥४॥ जयतिब्रह्मशिवस थ एगएकथा

तक्तप्रह्लादहितजगतकर्त्ता नीलजिदिश्रीजगन्नाथनरह
री सोई हो समाधो शततशोकहर्त्ता ॥ ५ ॥ राजकल्याणवागे
शरी ॥ प्रादि उरुषनारायणनरहदि प्रदुत्तरूप देवाको हो ॥
सकलभुवनपति निकसिथं भते भक्तपेजपुरावे हो ॥ १ ॥ समे
प्रदोषरोसं सगरगज्जित पूरवनगरवसावे हो ॥ नाकहुं सु
त्योनाकवप्रवलोक्यो कवलानेदनपावे हो ॥ २ ॥ हूरभवेत्र
स्नादिकचितवतको उतिकठन आवे हो ॥ तवविरिंचिप्र
ह्लादवुं लाए करि प्रस्तुतिसमावे हो ॥ ३ ॥ सोई नृसिंहनं
दसुतगोविंद प्रभुजयजयश्रुतिगावे हो ॥ रुद्रवृषभव
ठि प्रकक्रते हो उदपतिहरसावे हो ॥ ४ ॥ स्नानयात्रा ॥
रागटोडी ॥ करतगोपालयमुनाजलक्रीडा ॥ सुरनरमुनि
विथकितभयेनिरखतविशदिगपतनमनकी व्रीडा ॥ १ ॥
मृगमदतिलककुमकुमाकेशरि प्रगरकपूरवासवहुं

भुरकनी॥ कुचसुगगनमंगननेदनेदनकोमलपानिपरस्प
र। छिरकनी॥ २॥ निर्मलशरदकालकीशेभावरखतस्वाति
बंदगजमोती॥ परमानंदकनकछविगोपीमरकतमनि
जाविंदछविजेती॥ ३॥ रागसारंग॥ मंगलयशस्त्रीज्येष्ठा
मोंकरतस्नानश्रीगोवर्द्धनधारी॥ घसिबंदनपुष्पसुलसीसु
वासीतकेशरिजलघोरीडारतप्यारी॥ १॥ चोवाबंदनमृगमद
शौरतेसरससुगंधकेशरनिरन्यारी॥ केशेकिसेरसकल
सुखदाताश्रीवधनेमर्नंदनीवल्लिप्रधिकारी॥ २॥ प्ररजजा
प्रंगप्रंगप्रतिलेपनकालिंदीमध्यकेलिमहारी॥ सुखिवन
जुथजुथमिलछिरकतगावततानतरंगनीन्यारी॥ ३॥
रागसारंग॥ जमुनाजलक्रीडतनेदनेदन॥ गोपीचंदमनोहर
चहुंदिसमध्यप्ररीष्टनीकंदन॥ १॥ सोजितपानिपरस्प
छिरकतलोहितसिद्धिलभुजबंदन॥ नातुजव

पतिपूजत लज्जो हे प्रंग पावे चंद ॥ २ ॥ भुजभरि प्रक प्रगाधि चेतत
लेमातु लुब्धकषण फे दन ॥ सुरदास स्वामी श्रीपति को जसगावे
प्रति छंदत ॥ ३ ॥ सारंग ॥ राधे छिरकट छीट छवीनी ॥ मानहुम
तग ए दृगसुगाराजके कटि पर सो हत किं किनी ॥ १ ॥ रच्यो जमुनाज
लेके लि प्रंतर प्रेम सुदित रसरे ति ॥ नंद सुवन भुजवीच श्रीवरा
जित भाग्य नई रस ले ति ॥ २ ॥ वरषत कु सुमदे वसुनि प्रंदर ईंडा
निपुस्त दहे तिनी ॥ सुरदास स्वामीनी के विरह त जी जमुना थक
त तरंगिनी ॥ ३ ॥ सारंग ॥ स्यामा स्याम सुभग जमुना जलनिर्जय
करत विहार ॥ श्वेत कमल इंदीवर परमानो नौरनी करत नि
हार ॥ १ ॥ श्री राधा छिर प्रेभुजभरि तदि छिरकत वारं वार ॥ क
नक कलसा मुरकत सघनन परेहा लति चित्र प्रकार ॥ २ ॥
प्रत सीकु सुमक लेव रवंदे प्रति चतति विंवत तारा ॥ जोति
शीव फग गजनमंडो तत सखिसव करत विहार ॥ ३ ॥ धायपक
रत ब्रषभान लता हरिसो हत सकल सिंगार ॥ सुरवनिवा
जलद सुर विधि नि नि वरषत प्रमत्त धार ॥ ४ ॥

उदये करिसे लखनवासी जयलाल शर्मा
तवे ठडु कुलनी नीरनी ॥ १ ॥
साय जुज नीरनी ॥ २ ॥
० श्रीगती चीरकी ॥ ३ ॥
रकी ॥ ४ ॥
सपास जुवती जनमन विगि
कै बुका दू ट छु ट ज
नप जटी न तं मै
एवी का ह न क
वरनें ली ज हे
जलक टा वाद
३ टा
रकी

धिरकनी ॥ २ ॥ निर्मलशरद कालिंदी शोभा वरखत वुंद स्वाति जल मो
 ती ॥ परमानंद कनकवनी गोपी मरकत मणि गोविंद तन जोति ॥ ३ ॥
 राग जेत श्री ॥ विरहत जल जमुनार सभाते ॥ मानहुं मत्त गजरज प
 रस्पर कर निज्जुथ सींग लीने ॥ १ ॥ तिनमें श्री प्रथमान दुलारि नील
 सुरंग पट फीने ॥ उरज दुराई उरज जुग चांप ति मोहत को वसन
 कीने ॥ २ ॥ उभय वदन पर जल कत मानु जल जसर स छवि बीने
 प्रर जुती हेत व लो कित मुदित सजती प्रा न धन दीने ॥ ३ ॥ ॥
 रथ यात्रा ॥ ॥ राजमलार ॥ देव सरवी आ जुने न भरी हरि ज
 के रथ की शोभा ॥ जोग यज्ञ जप तप ब्रत ती रथ कि ज तु हे जि हि
 शोभा ॥ १ ॥ चारु चक्रमनी खचित विराजित चंचल चक्र पता का ॥
 खेत छत्र मातु शशि प्रा विदिश उदित नयो निशिरा का ॥ २ ॥ स्या
 मशरीर सुदेश पीत पट शी समुकुट मनि माला ॥ मानहुं घनदा
 मिनी सवेतारा गन उदित एका ही काला ॥ ३ ॥ उपजि छविक
 र प्र धर शो खधु निसुनि प्रतिकं रत प्रसंसा ॥ मानहुं अरुण क
 वल मंडल में कूजत है कल हंसा ॥ ४ ॥ प्रति आनं दित तत ॥ ५ ॥

जननी कृष्णमालतते जियभावे सरदासगोकुलकेवासी प्रातनाथ
पियपाए॥५॥ रागभंजार॥ तुमदेखेमाईरथवेठे ब्रजनाथ॥ संकर्ष
नकेसंगविराजितगोपसखालीयेसाथ॥१॥ एकप्रोरराधाजुवत
सवञ्जचोवरललिताहाथ॥ विविधनांतिगोवर्द्धनधारी कृष्णदीस
कीयोहेसनाथ॥२॥ मञ्जार॥ तुमदेखेमाईरथवेठे गिरधारी
राजितुपर्ममनोहरसुंदरसंगराधिकाप्यारी॥१॥ मतिमानिक
राकुंदनसखिउडीपांचेप्रवारी॥ विधिकरविचित्ररच्योहेविष
ताप्रापनेसुहाथसंवारी॥३॥ गद्दीसुंदरताफतासुंदरफेति
वाजनछविनारी॥ श्रृंजप्रनोपमहाटककलसाकुमकुमका
मुकतारी॥४॥ चंपलप्रखदोउबलतहंसगतिउपजतहंस
जारी॥ दिव्यगोरपचरंगपाटकीकरंगहेकुंजबिहारी॥५॥
तत्रजबिधुनीरुदावनगोपीजनमनुहारी॥ कुसुम
सुरमुनिजनपरमातंदवल्लिहारी॥५॥३॥
विराजितप्राज॥ रत्नखचितरथउपरवे
थ॥१॥ सखतलालकीद्विनीतोमितउर

श्रेष्ठपीतांबरः अंबुजनेन विरालः ॥ २ ॥ श्यामः अंगः आभूषणहेपेटेफल
 कतलोकलकवोली वारंवार चितवतसवहीनतनवोलतमीठेवोली ॥
 ३ ॥ इहच्छविनिखिनीखिव्रजसुंदरीनेननिभरिभरितेही ॥ फीरी
 फीरीजंखिजंकिमुखदेषतरामरोमसुखपेही ॥ ४ ॥ उत्तरीः गालमं
 हिरमैरैः प्रोमुखनीमधुरवजाए ॥ देविदेविफूलतीनंदरानीमुखचुं
 वतिछिगः प्राए ॥ ५ ॥ प्रतिसो नितकरिनीयेः प्रारतिकरतसिहाये
 सिहाए ॥ श्रीविठ्ठलजिरधरणलालपरवारतितनमनमाए ॥ ६ ॥
 रागमलाद ॥ वेपटपीतकीकहरानी ॥ करगहेककवरनकीधावनी
 नहिविसरतवहवानी ॥ १ ॥ रथतेउत्तरीः प्रवनीः प्रातुरकेकबरनकी
 लपटानी ॥ मानुशीहसैलकौनिकस्योमहामतगजजनि ॥ २ ॥ जिनही
 जोपालनेरोपनदाख्योमिठिवेदकीकानि ॥ सोईप्रवस्तूरसहाएह
 मारेप्रगठमएप्रनुः प्राणी ॥ ३ ॥ रागठोही ॥ प्रगठप्रमकेफासपरे
 हरिडोलतडोरडोर ॥ सकलदेखतपाठवकहांकतुहैहरिघोर
 ॥ १ ॥ जीहिकरसेखवक्रगदाशो नितः प्रोरनः प्रायुधधोर ॥ ते
 हीकरचामचमोदानीनेः प्रजुनकरथजोर ॥ २ ॥ जिहिमुखवे

दृष्टि रैतर कहीये तते ही मुख बोलत होरे ॥ यह विधि स्वार्थ करत जगत
 मुरु जानत न ही हम को रे ॥ २॥ बलि बलि जाउ स्याम सुंदर की मत्त व श्रंतता
 जो रे ॥ माधो दास कहै सवसे कटते दास आपुने होरे ॥ ३॥ रांग मं लार ॥ जो पा
 लमाई खेलत है वो कांत ॥ लरिका संग जो कुल केलीने चंदावन में दान ॥ १
 चंचल वाजिन वावत आवति होउ लगवत पाति ॥ सब हित रथ गे दु
 बलावति कहत वावाकी प्रीति ॥ २॥ फिरत निसंकन हरत महावल हरत
 भूपति कुलमात ॥ परमानंद दास को ठाकुर सर्वगुन रूपनिधान ॥ ३॥
 रांग मं लार ॥ गिरि धर ला लत वेठे ताजि ॥ वागवाम करदं हित वापुके हैरी
 के भी के ज चले साजी ॥ १॥ वा ॥ जत वेनु सखा सब आपु ॥ प्रमरपुरी सब
 गजी ॥ परमानंद दास को ठाकुर राषत आपुनी वाजी ॥ २॥ रांग मं लार
 रथ चठि चलत यशोदा आंगन ॥ विविधि सिंगर सकल अंग सो हत मो
 हत को टि अंगन ॥ १॥ बाल कली लाभाव जनावत किलकी हसत नंदन
 दन ॥ गरे विराजित हार कुसुमको चरचित्त चौवादी ॥ २॥ आपुने अ
 पुने घर पधरावत सब जुमालि जुवति जन ॥ हरषत वरषत सर्व सु
 आपुने चारतत न मठ धन ॥ ३॥ सब प्रज दे सुष आपुते घर के कार

तिआरतियशोदातनत्तिन॥ रसिकसदा हरिकी यहलीलावसतहमारेही
मन॥ ४॥ रागमलार॥ रथवेठेहोंदोनोंजोरीमैया॥ घरघरतेसवसंगखेल
नकोंजोपसाधनवोलोंजे॥ १॥ मोहगठायदेहुअतिसुंदरसुरंगहीसाजव
नाए॥ करिसिंगरताउपरमोकुंराधासंगवेठाए॥ २॥ घरघरप्रतिहोंजे
होंखेलनसंगलेहोंब्रजवाल॥ मेवावहुतमंगलमोहिदेकलअतिवडे
हीरसाल॥ ३॥ सुतकेवचनसुनतनंदरानीफुलीअंगनमाए॥ स्वविधि
करिहरिरथवेठाएनिखिरसिकवल्लिजाए॥ ४॥ रागमलार॥ र
थवठिचलतजोपालब्रजमे॥ संगलीयेजोकुलकेलरिक्कीबोलतव
चनरसाल॥ १॥ अवनसुनतघरघरतेदोरीदेषनकोंब्रजवाल॥
लेतवारीकेरीहरिकीवलेयावारतिमोतिनमाल॥ २॥ सामग्रीले
आवतसीतलेलेतहर्षेनंदलात्त॥ बाटिदितप्रोरेलरिक्किनकों
फुलेडोललवाल॥ ३॥ जेजेकारनयोत्रिभुवनमेंसुमनवरषेंति
हिकाल॥ देखिदेखिउमंगेब्रजवासीस्वहीदितकरतात्त॥ ४॥
इहविधीनंदपौरपेआएमाततिलककरिभाल॥ लेतउर्ध्वग
पधरभवतघरमेंचलतमदमतिवाल॥ ५॥ करतन्योश्वरि

आपुनेसुतपरमुक्ताफलैभरिधाल॥ यहलीनारसरसिकसुनिरख
 तसुमरतहोतनिहाला॥ १॥ रागमलार॥ लूमोहिरथवेगवतमैया
 इतकीप्रोरवेगहेराधाउतकीओरवलनैया॥ १॥ गोपसखासबंसं
 गलेहोगोप्ररुगावेगेगीता॥ मेरेरथकीसोभादेखतसुखपावेगेभी
 त॥ २॥ अजजनभुवनभुवनप्रतिगठीदेखनकोमेरीगठी॥ आ
 रतिलेकेउतारेगेमोपरकेहैमारगमेंगठी॥ ३॥ सुनतकवनआ
 नंदिसीधुमेंमगनभईजसुमतिमाई॥ रसिकमनोरथपूरणगोविं
 दवैकुंठतजिब्रजओई॥ ४॥ रागमलार॥ रथवेठेगिरिधारीदेखे
 माई॥ वामभागद्रुषभानबंदनीपहिरिकसुंभीसारी॥ धुंतेसोई
 घनउनपोचहुंदिसतगरजतुहैप्रतिगारी॥ हादुरमोरकरतते
 सेरटतेसीभोमीहरियारी॥ ५॥ सीतलमंदवहतमलयानिलला
 गतिप्रतिसुषकारी॥ नंदनंदनकीइहवानकपरगोविंदजिनव
 निहारी॥ ६॥ रागमलार॥ रथवेठेनंदलालदेखोमाई॥ प्रतिविचि
 त्रेपहितपउभ्रषनउरवैजंतीमाला॥ ७॥ सुंदररथमनिजहित
 मनोहरसुंदरहैसबसाज॥ सुंदरतुंदंगचलतध

घोषसवगाजि॥२॥मनिमानिकहीराकुंदनसोंडोंडीपांचप्रवाल॥विधि
सोविविधरवि विश्वकर्माप्रापुतेसुहायसवारी॥३॥तालप्रपवाक
जवेनुवांसुरीवाजतपरमरसाले॥गोविंदप्रभुपरलेटारंतुहैनि
विधकुसुमत्रजवाल॥४॥रागमलार॥तुमदेखोमाईरथवेनेजि
रिधारी॥राजितपरममनोहरसबअंगसंगराधिकाप्यारी॥१॥गार्ह
सुरंगताफतासोत्तितफरीवाजतछुविन्यारी॥छत्रअनोपममहाय
ककलसाफूमकलरमुक्तारी॥२॥चपलप्रखरोउचलतहंसगतिउ
पजतहैछुविभारी॥दिव्यडोरपचरंगयाठकीकराहैकुंजविहारी
॥३॥विरहतव्रजविद्युनीचंदावनगोपीजनमनुहारी॥कुसुमा
वलीवरषतव्रजउपरगोविंदजनबलिहारी॥४॥हरवस्त्रा
रागमलार॥देखोमाईसुंदरलाकोपाग॥हरिव्रजभूमीहरीदुमवेला
हरिगिरधरसिरयाग॥१॥हरहरेमोरहरिसुकसेनाहरिभूमीअनु
राग॥राजतहरिमनहरनराधिका निरखिदासवउभाग॥२॥म
लार॥हरियारोसावनआयो॥हरहरेमोरफिरतमोहनसंगह
देवसतमनभायो॥१॥हरिहरिसुरलीहरिसंगराधेहरिभूसिसु

खदा ३॥ हरे हरे वनराज तडुमवेली हरिहरि पाग सुहाई ॥ २॥ हरिहरि
सारी सब पहरे चोली हरी रंगभीनो ॥ रसिक प्रीतम मन हरि त भयो है
तन मन धन सब दीनो ॥ ३॥ पीत वस्त्र ॥ राग मलार ॥ धरे सिरप्या रो
पीरी पाग ॥ पीतांबर वेहे रे प्रतिदीनो निरखि सखि ब्रविवागो ॥ ३॥
ते सो रीची रव्यो प्यारी के चोली रही उर लाग ॥ श्री विठुल प्यारी पियनि
रखतं चितवनि भरि अनुराग ॥ २॥ मलार ॥ सो भामार् प्रवदे खनकी
वार ॥ जो कई न परवत्त के उपर मोरन की पतवार ॥ १॥ गठे लाल पीत प
ट ॥ ओठे मुरली मधुर रसाल ॥ मोर चंद्रका माथे लो है घु घु चिन के है हर
॥ २॥ धनगर जत अरु दामिनी दमकत नेही नेही परत फु हार ॥ सु
रदांस प्रभूतौ न अघे है अखियां होय जै खिचो र ॥ ३॥ मलार ॥ वरस
रे सुहायो मेहा हरिको संग म पायो ॥ नी जन दे पीतांबर सारी बडी बडी
सुंदर प्रायो ॥ २॥ गठे हसत राधिकामोहन राग मलार काहु गयो ॥
परमानंद प्रभु तरवर तर लाले करत अपनो मन भायो ॥ २॥ मलार ॥
आनु मे देखे कुब्र कन्हारी ॥ प्रालस मे निके संग वन संग स्याम घटी
ये ठि प्राई ॥ १॥ पीत वसन वेहे तन सुंदर क सुभी पा सुहाई ॥ मुक्ता
माल करत उर उपर मुरली मधुर वे जाई ॥ २॥ कह

की लला मोपें वरनी न जाई ॥ श्री विठ्ठल गिरिधर देखें तें क्यो हूं कलन प
 राई ॥ ३ ॥ मलार रंगनी कों फुही थोरी थोरी ॥ हरित भू मिता में कसू जीव
 र सखी मो ही ओटवनी जोरी जोरी ॥ १ ॥ नवल पीतांबर ओठे गिरधर
 लालन घटा नौतन जोरी ॥ पावस रितु सुख दास चतुर्भुज स्वामिनी
 विलासन वनवकी खोरी ॥ २ ॥ स्वामवल्ल ॥ मलार ॥ स्वामघन कारेक
 रे कारेरी वाहर रितु पावस की हे कारे ॥ ~~स्वाम~~ कारेरी को यल वन वन
 नोलत मोरें कराहन कारे ॥ १ ॥ कारे धुर बाधर छूटत हे कारे कारे
 काजर भारें ॥ कारे मदन सदन सूर प्रभु कारे कारे चीरन समारे ॥
 २ ॥ कुल्हेके ॥ मलार ॥ रही फव स्वाम खे वीली पाग ॥ तापर कुल्हे
 स्वाम सिर शो नित मोर चंद छे विलाग ॥ १ ॥ स्वाम अंग परनी लव
 सन छे वि किं किनी शृ सुहाग ॥ तेली येवन स्वाम संग स्वामा
 स्वाम अंग छे विलाग ॥ २ ॥ स्वाम सुभगत बन खसिख स्वामा स्वा
 म भई उर लाग ॥ स्वाम रंग रंजी रंग स्वामा स्वाम रंग अनु राग ॥ ३ ॥
 यह जोरी अवचल श्री स्वामा स्वाम रंज वट जाग ॥ सूर स्वाम स्वामा
 छे विनिर ॥ खत प्रेम सिंधुर सपाग ॥ ४ ॥ मलार ॥ नयो नेहन यो
 मेहन यी भू मि हरियारी नवल दुल्हे प्यारे नवल दुल्हे या ॥ नव

लचीरकमोरको किलाकरतरोरनवलजुगलभोरनवल उल्लैयां
 ॥१॥ नवलकसुभीसारीवे हेरंश्रीराधाप्यारी प्रोठनीके अंगसंगस
 रससुल्लैयां ॥ नंददासवलिहारी वृविपरवारडारी नवलहीपागव
 नीनवलकुल्लैयां ॥ २॥ मलार ॥ प्रानुस्यामघनकीउनहार ॥ भजे
 उने आहै सोबुरे देखिसरूपसकुमार ॥ १॥ इधनुकमानोपी
 तपिछोरादासिनीदमकतभार ॥ मनो बगफांतिमालमोतिनकी
 चितवतचितविचार ॥ २॥ अनुगिरिराजकरनीधरिदख्योश्रव
 नसुनतमनुहार ॥ सूरदासप्रभुहमसेपतितकोकोनउतारपार
 ॥ ३॥ मलार ॥ प्रवमेरनेननिको धोखेभए ॥ कीधोस्यामवही
 पंथगमनकीयेस्यामजलदहुनये ॥ १॥ केधनघोरंगंभीरपता
 पउठिकेगालिनी प्रतिटेराति ॥ केदासिनीकोंधतिचहुंदिसते
 सुभगपीतपटकेरति ॥ २॥ केवगफांतिभोतिवहुशोभाकेसुका
 नहुमोल्नके ॥ वनमोरमुदितनाचतहेवरुहामुकटकीडोलनी
 ॥ ३॥ केवनमालमालउरराजतकेसुरपतिधनधार ॥ सूर
 दासप्रभुरसिभरिउमगिराधाकरतविहार ॥ १॥ सुकुठके

पद्म॥ राम मन्तार॥ ॐ प्राञ्जुपट पीतकीर्ण विपाई॥ स्वामघराञ्जुरि सघ
 नदे खियत नान्ही नान्ही बूंदे आई॥ १॥ मोरमुकुट शिर सुभग विराज
 त इंद्रधनुक तिही गंई॥ इकानन कुंडल हा निनी दमकत वर्षतनी
 र सुहाई॥ २॥ मोतिन माल मालों वगति सुंदर ऊर लाई॥ सुरहा
 सप्रभु कहां लों वरनों यह छवि की अधिक आई॥ ३॥ मन्तार॥ देखो
 माई सुंदरता को देख॥ अंग अंग छवि मदन मनोहर राजतरुप
 नरेश॥ १॥ मोरमुकुट गहे वर गिरि सीवा अलक ऊलक कवहुं
 सेस॥ मुख छविको टिकटके गठ गठे मन नही करत प्रवेश
 ॥ २॥ ग्रीवामोर भुजाने हीने इ उरसागर सत वेस॥ गति विही गक
 टि सिंह मृगदिक त्रवल त्रवेली वेश॥ ३॥ जंघा नीलना निह
 दे छुरन नख मानिक मत लेस॥ तन सब भूनि हरित रोमाव
 लि दे खियत सुर प्रवेश॥ ४॥ मन्तार॥ माईरी स्वामघन तन
 हा निनी दमक पीतानर नर फरहें॥ मुक्त माल वग जा ल
 हीन परति छवि विशाल मानों नीकी अरहें॥ १॥ मोरमुकु

ईरधनुकसोसुभगसोहतमोहतमाननीदृतीघरहरें॥ कछनी
नप्रभुपुरंदरकोसोभानिधानमुरलिकाघोरघरहरें॥२॥ टिपारे
केपद॥ पावलनटनषोप्रखारोचंदावनप्रावनीरंग॥ निरतगु
मरासवरुहांपवीहाशुउघटतकोकिलाकलगवतितानतरंग
॥१॥ जलधरतामंदमंदसुलकसंचगतिभेदऊरपतिरपमानले
नसरसमृदंग॥ जोविंदप्रभुजोवर्षतसिंघासनपरवेठेसुरभीस
वासवरीकेवलनलितत्रिनंग॥३॥ मलार॥ चंदावनकनिकभूमि
निरतप्रजनपतिकुवर॥ उघटतशुसुमुखीलेतगगततततत
नतथेईथेईगतिनेतसुधैर॥१॥ लालकाञ्चिकठिकीकिनीपग
रूपररुणारुणातवीववीचंसुरनिधरतप्रधर॥ जोविंदप्रभुके
मुदितसखाकरतप्रसंसाप्रेमभर॥२॥ मलार॥ मदनमोहनव
नदेषतप्रखारोचंदावनप्रावनीरंग॥ सुफलसंचगतिभेदनरुहाचंदुनि
तकरतकोकिलाकूहंकूहंतानतरंग॥१॥ उघटत
॥१॥ हंपीहंकरेंमधुव्रतगुंजमात्सरसउपंग॥ जो

अथ हिटोराकेपदा॥ रामधन्याश्री॥ रोप्यो हिटोरो नंदगृहं सुहृत्सुभ
 धरिदेखि॥ विश्वकर्मा रविपचिरत्सो सोहाटकरत्नविशेख॥१॥
 हिटोरनाहो रोप्यो नंदप्रावास हिटोरनाहो माणिमेजोसिंखवा
 सा॥ हिटोरनाहो विश्वकर्मा सूत्रधार हिटोरनाहो कंचनखंभसु
 ठारा॥ ७॥ कंचनखंभसु लालडांडी शालभ्रमं राफविरहे ही प
 पिते जासुकतकमणीमयजोतिचहुं हिसजगमगे॥ चित्रस्फुटि
 कप्रकाशचहुं हिसकहाकहो निरमालना कहेकंछदासवि
 श्नास निशदिन नंदभवन हिटोरना॥१॥ दोहा॥ सोलसहस्र
 व्रजसुंदरी निरखिस्यामसुहाए॥ प्रतिप्रांनंदेदुलखिकेजु
 वजनहितिमितिगाए॥३॥ हिटोरनाहो युवजनहितिमिति
 गाये हिटोरनाहो उरप्रांनंदनसमाए॥ हिटोरनाहो निरखी
 स्यामतिहारि हिटोरनाहो सोलसहस्रव्रजनादि॥ टंक॥ सो
 लसहस्रजुकिप्राईउलटीफिरीनभुवंनगई नवननव
 लसुरंगरावेप्रचिततनमनमंनई॥ पीतलेहेगा॥

नरीस्यमकचुवाहे कहेकष्टदासविलासनिशदिनसुवजनही
लिमिलिगये॥२॥ दोहा॥ रुनुकुरुनुकनु पुरवजेकंकनकुनि
तरसा ल॥ परमचतुरवनवारीहें सोरुग्नावतसुंदरनारि॥३॥
हिडोरनाहोरुलावतिसुंदरनारि हिडोरनाहो परमचतुरवन
वारी॥ हिडोरनाहोरमकनिकमकिविशाल हिडोरनाहो किं
किनीकुनीतरसा ल॥ टंक॥ कुनितकंकनरुणितनेपुरजटि
तरनासाहही उरउडतअंबरमदनवेरषदेखिगिरिधरमो
हही॥ वसीतफूलजुसिचिन्नेनीगुपतप्रगठजनावहीक
हेकष्टदासविलासनिशदिनसुंदरनारीरुलावही॥३॥ दोहा
गावतसुघरसुनेदसोतानमजबंधानरिंजीदेतप्रवभानुज
सोहरिगुनसकलनिधान॥४॥ हिडोरनाहोहरिगुनसकल
धानहिडोरनाहो^{स्य}माजूपरमसुजान॥ हिडोरनाहोगावतसु
घरसमाऊहिडोरनाहोसुरलिमधूरधुनिप्रीत॥ टंक॥ तालमु
रलीवेनुवाजेलालगिरिधरगावहीहरखिसुरपतिकुसुमवर
वेनमनिशानवजावही॥ हरखिकेकरदेततारीप्रतिप्रकाशसु

सुजानवहोकहेकछदासबिलासनि सदिनहरिसुनसकलनिधात ६
 दोहा॥सवेनेनभरिदेवहीसहजगोपनठनेषा॥जेसुखगोकुलमेंले
 हेसोनहिबैकुंठरे।षा॥हिडोरनाहोजेसुखवैकुंठनाहीहिडो
 रनाहोसोसुखश्रीगोकुलमांही॥हिडोरनाहोसहजगोपनठ
 जेयहिडोरनाहोसवहीनेनभरिदेवाटेक॥नेननिरषतवेनमी
 ठमेंनकोटिकवारहीभुजभरेभामिनीहरेहरीमनकहतकछु
 नहीप्रावही॥स्यामसुंदरनेकवत्सलनीलाप्रटगेजनावही
 कहेकछदासबिलासनि सदिनरहसुखश्रीगोकुलमांही॥
 पा॥दोहा॥श्रीयमुनातटसंकेतवटनिशदिनवहीबिलास॥कुं
 जकेलिगिरिधरकीसोत्तदयवसोकछदास॥६॥१॥शुजीर
 त्रिभुनदृषंभसोत्तितविडुमरुचिरमयारमानहुंरविशदेषा
 वहीभुजभुजयुगलपसार॥लाजमनिविसुनवनेप्रतिनि
 लेमरकतडार॥उतररीरविरथतेचलेमानुयमुनावहेविदिधा
 र॥टेकं॥विविधारधाराधसीप्रधभईकटकपटु

तहो विच बिच तिर छी विच मिले मानु गगन तेने संग ॥ १ ॥ प्रति कलि
 त मनीम जीर इत उत चरण पंक ज रंग हिलि मिलित सब प्रति वि
 व सो नित सर स्वती मानु रंग ॥ मानहु सु हित मरा लक कन किं कीनी
 कुनु कार पिय संग शे नित लाहु ली र व मानु गो प कु मार ॥ टंक ॥
 तहो कु वरी वष मानु शे नित स्या म सुंदर संग मानहु नौ तन ज ल
 द्मे जे से तर ल त हित तरंग ॥ २ ॥ मनीम मह ल प्रंगी नार च्यो
 न व रंग रंग हि डोर को टिम मथ मो द मोहन न व लिन वत कि शे
 र ॥ इत उत गी नि व सं त तन की ऊ ल क लो चन को र व द न वि धू
 के लु छ जानु उडी उडी मिले च को र ॥ टंक ॥ उडि उडि मिले च को र
 मानु ल लित व लित सु वेन ॥ मानहुं अं रु ज वा स के संग ला गि
 म धु कर सेन अत मे वी ई ग की ये निर र व त मंड लि व्र ज ना रि ॥
 मानहु संग स रि ता लिये वि धि र बि कं च न वार अर्ध उर्ध दै त
 ऊ को र इत उत ऊ ल क सो तित मा ला सो स मे सा व न जा नि के व
 ग पो ति उडी उडी र सा ल ॥ टंक ॥ ला ल अं च र चु न री उ त पी त प ट फ
 ह र ॥ सूर स मे अो प मान को उ मो चें व र नी न जा त ॥ धा ॥ ७ ॥

-राममन्त्रार॥गोपीगोविंदकेसुरंगहिडोरनामूलनःप्राईहो॥०॥श्री
 खंडखंभमयारसहितज्मरुवेमोरवनाए।तहोपारिजातकभमी
 तभमराउंडीजटितजराए।हेमपटुनीमध्यहीरापूजलोचनरा
 ए।तहोसखिविविधिविचित्ररागमन्त्रारमंगलगाए॥१॥नेंदुला
 लंपावसरुतवनीप्रजवालविहरतसंगाबोलहीतेदीदुरप्ररुप
 पेहाकरतकोकिलारंग॥वरुहन्त्यतबंधनमुद्रितप्रलिचको
 रविहंगवन्भद्रवीरगोपालज्जलतराधिकाअरधंग॥२॥
 जलभरितसरोवरसघनतरुवरहरीतमहीचहुँदेश॥घनस्या
 ममध्यलुम्बितवगहंनईरधनुषसुदेश॥गगनगजितवीज
 यमकतमधुरेमेहपुशेष।कुलहीतेस्यामस्याविकलशिधि
 लमुकलितकेश॥३॥ताटंकतिलकज्जटितफूलकेपोचपि
 रोजीलालाप्रारक्तवक्रितनरप्रसंसीतवनेनेनविशाल॥
 करवन्धुनाकिंकीनीकटिचारुगजगतिचाव।सुरव
 सुरसुररिपुरंगरंजितसखासंगगोपाल॥४॥

सीतलत्रिविधिमंदसमीर। तहोलतालन्टकेभारकुसुमिनपरसीज
 मुनानीर॥ हंसमोरचक्रोरचात्रककोकिलाअलिकीर। नवनेहनव
 लकिशोरराधेनवरंगजिदिधरधीर॥ २० ॥ ललिताविशाखादेतफो
 टाफूलिअंगनमोए। तहोलाटिनीसुकुमारिडरपतस्यामउरलप
 टाय॥ गोरस्यामलअंगमिलिदोउभएएकहीभांति। नीलपीतदु
 कूलराजितहामिनीदुरिजात॥ २१ ॥ नवकुंजपुंजकुलायकुलवत
 सहचरीबहुओर। मानहुकवलनीकवलफूल्योनिरखिनवलकि
 सोर॥ ब्रजवधूत्रिनतोरडारतदेतप्रानअकोर। कछदासकोंब्रज
 वासदीजेनागरनंदकुशोर॥ २२ ॥ रागमत्तार॥ आलीरीकुल
 तनंदकुमीर। हरनीनेनीहंसगमनीसजेसकलसिंगर॥ २३ ॥
 सुरंगखंभकईवकेजहामिलेमलकतडार। तहोलाजडोडीस
 रससोरविपचिरहेसूत्रधार॥ कनकपटुलीजटितहीरागठीसु
 धरसुनार। बहुओरतरुनीअरुनवसननीकिंकिनीजनकण
 ॥ २४ ॥ रंगभरेउतंगडरजनीकुलकेनौतिनहार।
 हरातअंवरनेसतलावेवार॥ मृगमदअग्र

सके उद्दगार सुखभरे धाननी स्यामस्यामा हो उपर्मे उद्दारा ॥ २ ॥
जीतगावे सुखद केरसरी तकी चटसारा गनसुर घट ग्रामसा
धे तानता लप्रपार ॥ रीऊ ॥ रीऊ जलही नीजे जम्पो रागमल
रा पिकमोर कुहके को किलानी सुरन परितारा ॥ ३ ॥ तहो मे
वरषेर सभरे जलफुही वारवार । लाजत जिल पटात लाजे त
जिवेद विचार ॥ छविफ विमधुसूदना वलिहारी को टिकमा
विरंजीयो पर्वत स्यामस्यामा हो उजगत प्राधार ॥ ४ ॥ ८ ॥ राग
मलार ॥ गोपीगोविंदके सुरंग हिडोरना जूलन प्राई हो ॥ ० ॥
गुननाम निर्मल परम पावन प्रथम भूति सुदेश ॥ अंगुरी
अंगुरी नानि मनि गन रचित चित्र बहुं दीश ॥ रचित पूरुद
परम सुंदर पद्मराग सुरंग ॥ घनहेत हरि हीडोरना ताहो विरत
विविध तरंग ॥ १ ॥ बहुं दीश पद्म परागरंजित पारिजात अर्न
ता रस लुब्ध को किलक रत कलेखे मधुपसर सवसंत ॥ ध
नघोर जलधर धरनि उन्मत्त सुदित कूहूकतमोर ॥ तहो वि
मलस्रोवर विविध सारस वक्र वाक चकोला ॥ २ ॥ विचखंभकं
(चनमेरु मानुहर रचित कविर निर्मा)

मयामानिकप्रतिमनोहर उदिततरनीसमानी ॥ अमरानिहारिभा
मेंप्रतिगनमध्यराजितनीलाप्रसूवामनोहररत्नलंकृतशुभशो
नितकीला ॥ शिविलालपरमरसालडांडीविश्वकर्मासाजि। पदु
लीपिरोजाविचमुक्तालाविचविचभाजो ॥ परपद्मपातिविलो
ललोचनवदनइंदुसमान। लवनेहनवसतसाजिजूलेंसुधरसुं
दरसुजात ॥ धाकरवीनवेनातालेतरलितसरससुरपीनाक।
किंकीनीकंकनशङ्खहरसहिरसएकताला ॥ कामिनीकोमज
वचनवोलेविहासिप्रेमगोपाला ॥ कामिनीहमकेधूंइजमकेगजनई
वेरसाला ॥ पा ॥ पियुपीयुपपैयाशङ्खमधुमिवमदनउन्मत्तबोला न
वनिधिगुहेग्रहप्रतिनिवासिनीशेनघोषहिडोला ॥ हरिहितह
खेप्रतिसेसुंदरिनिरखिनारीनिवासा ॥ राधिकारतिरवनगीरीध
रुद्रहासनिवासा ॥ १॥ रागनलार ॥ प्रथमपावसमासप्रारंभ
जनघनगंभीराज्ञातहोलेवेही ॥ कामिनीदिशापुरनेप्रतिप्रबंड
मीर ॥ मीरचोत्रकवनकोलाहलमधुरेवोलेनिवोलीगो

लनिकुंजविलसतसखासगकलो॥ गोपीगोविंदगुनविमलपरम
हितगावही॥१॥ तहोवकेहादुरमोरकोकिलमूठपावसधीर। तहो
छुंनदीप्रपारउमंडितमिलिवमसुधानील॥ हरियारीत्रिनमहीच
इवधूगनप्रतिमनोहरलाग। वलभइशेकेवधेनुचारे नंदकेअनु
राग॥२॥ तहोकंदरागिरिचिठिहेलाकरहिंवातविनोद। तहोजाय
षोअतरुह्यकोटरमहिकामधुपोद॥ केऊकोलेपहीवानीकोऊगा
वेगीत। कोउतजातेगोपनीलाब्रह्मगतिविपरीत॥३॥ तहोचक्र
वाकूचकोरचात्रकहंससारसमोर। सारससरोसुआभंगीकरही
चहुं। दिसरोर॥ वाटिकासरोवरमध्यनलिनीपधुपकरेपधुपात
। नंदगोकुलकदमपातेअमरपतिप्रतिमान॥४॥ तहोर। चेहिंदो
रोधवतवानीकाश्मीरसुखंन। हीरप्रवाला। ला। ल। लागे। ओरवहुआ
रंम॥ करेचित्रविविन्नचित्रिततीरधनुषसंधान। जेसेरामरावन
सुध्यक्रीडादेखितेअनुमान॥५॥ तहोवहुतगोरसमाटमघनाषि
सतकंकनचीर। मध्वेकाशिरगुंधिवेनीअवनशोतितवीर॥ कन
कवरनसुठासुदरीअमिपवचनरसा। प्रेमसुदितमुरारिचित

धरिगावतरागमलार॥६॥तहोहोतमंगलघोषघरघरजहारमात्र
 नंत।वैकुण्ठनाथदयालप्रीपति सोहेप्रीभगवंत॥सबदेवमुनिवर
 वदतजडुबरप्राणपूर्णकाम।एसेवेदवानीवदतनिसदिनभक्तज
 नविसराम॥७॥जनकर्मप्रशेषमहीमाशेषसाबरदाभाखे।देव
 कीनंदननामपावनत्रिविधिदुःखतेराखे॥बरननखमनिदेखि
 ताप्रतिभितिताप्रविनाश॥मनकर्मबचतमुभायेपरमार्णदुदास
 निवास॥८॥१०॥रागमलार॥येनिल्लफूलतरंगहिंडोरना॥मू
 लतफूलतमनहीमन॥अरुनपीतांवरवसनविराजितप्रतिगो
 रिसांवेतनरीमाई॥बरनवरनसारीसुरंगसुहाईगावेंप्रासपास
 युवतीजन॥१॥तेसीयेदासिनीदमकतछिनहीछिनतेसेंदिसदिस
 तेंउमडेघनरीमाई॥तेसेंइंमांइंमारुतऊकोरमोरकोलेपिकचीत्र
 कवहचरीपंत॥२॥जवहरिहरखिदेलकोटाकोलेविवसत्रियाहां
 हांननरीमाई॥संभनलहितगजाधरप्रभुउरलाईलई
 नरीमाई॥३॥११॥रागमलार॥हिंडोरनाहो।

वे-प्रहोमेहि घटि एकजूलतहोउ॥ तिसोईमितकिनहोहुंप्रानपति
 मोहनउरप्रवेएसेंप्रतिरसरंगजुलावे॥१॥ कवहुंकपटुलीनवे
 ठीयेप्रानपतिप्रोरसखिसवनीकठवोलायो॥ तिनसोमितकेम
 दनमुरलीधुनीप्रमुदितरागमलारजायो॥२॥ अबहोउतहुंतुम
 जूलोप्रीतमजोटादेउजेतुमदेदेखायो॥ सरदासप्रभूमदनमो
 हनपियसोईकरोजेसेंतुमसचुपायो॥३॥१२॥ रगमलार॥ हिंडो
 रेमाईजूलतजुगलकिशोर॥ ललितार्चपकलताविशाखादेत
 हेतजुकोर॥१॥ तैसेइं पावसरितुसुखदायकर्मदुर्मदुघनघोर॥
 तैसेईंगनकरतत्रजसुंदरीनिरखिनिरखिपियप्रोर॥२॥ कोठि
 कोठिमदनश्चविउपजतहोतसखीमनभोर॥ नईदासप्रभुगिरि
 धरराधाप्रीतनिवाहकप्रोर॥३॥१३॥ रगमलार॥ मोहनप्यारे
 कोसुरंगहिंडोरनाजूलनजैयेहो॥०॥ व्रजरसिकमोहनसुंदरी
 सबकहतिहसिहासेवेन। पावसकालगोपालगोकुलवसतु
 हेसुखचैन॥ सखीसकलसुहागिनीतेजपतिदृदसेन॥

टेका ॥ सावनमासहि डोरना पिय हम ही देहू गठाय। झूले तें जो कुल
 ज्वालनी गिरि धरत जो कुल राय। बोले विश्वकर्म्या बोले तव गठन
 ल्यायो नऊरा। चंदन खंभ सुदेश भ्रमरा वन्यो मरु प्रन मेर। पटु ली
 मयार सवारिके हो डोंडी अजर उके लि ॥ टेका ॥ गावे गुन जो पाल ही क
 कहि चाहु चहुं दिस होत। स्यामा स्याम समीप जू लत दै त पहि लेओ
 पा ॥ २ ॥ रमकिरहत हि डोरना पिय पीतं पट फहरात। राधिका अ
 वरशास तें ग्रीर हरि र हि अचर दोंत ॥ त हो लटकी भुजकी ओर भा
 मिनी निरखि मुदि मुसकात ॥ टेका ॥ ते सें येदा मिनी लवत धन में ते
 सोई वषत मेहा ते सोये राधा चूनरी भलि भीज लागे देहा ॥ ३ ॥ नी
 लकंक बुकी पीत मांडत परम स्याम सनेहा लपटी ऊपटे दैत जोटा
 ते सें ही गजत मेहा ॥ ते सें ई कांपत भा मिनी पिय संगत व ल सनेहा
 टेका ॥ नदि हो ब्रजपति रायसो हसि हसि कहत कुमार। व्यास दास
 जो पाल प्यारी प्रीति परति निहार ॥ ६ ॥ १४ ॥ राजमलार रंग ही
 डोरना हो आलीरी श्री व्रषमान जूके दार ॥ शिवरी

नगजगमगातडांडीचार। पटुलीसो चित्रे विचित्रराजित कनककलेश
मदार ॥१॥ चहुं प्रोरनवलकीशोरसजनी सुधरसवत्रजनार। ष्टंगर
षट्दशवेश षट्दशतानतालप्रपार ॥ बीनामृदंगमलारधुनिसुन
वेकुवरनंदलाल। नवसखिनेषवनायप्रभुतआमदनगोपाल ॥ २ ॥
नवसखिछे विनिरखिसुंदरहसीवोलीवाम। तुमकोनपैगोकीकुव
ररवनी जवनी कहीकीभाम ॥ ब्रजवासपुरतुमकहोरहोहो वसो
कोनहीगाम ॥ प्रवलोनमेंदेखीसखी तुमकहोपिताकेनाम ॥
२ ॥ ब्रजवंदमुखकसो छंदमुखनववधुवोलिवेन। नंदगामसो
गामनीगरबसतहेसुखचेन ॥ सुनभाषमनप्रमिलाषउपजी
मूलीयेतुमप्रान। करप्रेमप्रीतपतितदोउमिलीसुधरसुंदरजान
॥ ३ ॥ यहसुनललिताविशाषाकहतिपियसमुझया। ब्रजवास
नहीयेस्यामसुंदरहेकुवरनंदराय ॥ तिहारेदर्शनपर्शकारनस
खीनेषवनाय। सनमानकरहोप्रानप्यारीजेहीसंगजुलाय ॥ ४ ॥
सुनसुनेवचनरसालेरसनववधुलीयेकुलायामलिहीसहितहि
दोरेरूलेवोलमधुरेगाय ॥ ब्रजनरनप्ररुनवकुवरीप्रानंदरगर
धोवरषाय। रसनेहोप्रीहितमाधुरीसुषटेतप्रखिनप्रघाय ॥ ६ ॥

रागमल्लार ॥ नटवै सुलतरंग ही जो रे ॥ धरत चरन पटु ली परमोहन
 करसो परसी कर जो रे ॥ १॥ पीत वसन वनमाल विराजित सारी सुर
 ग ही जो रे ॥ रागमेघमल्लार मिलिषट राग गिनी की जो रे ॥ २॥ स्यामा
 स्याम एक संग सुलत जो टा हे तरु क जो रे ॥ सजल स्याम घन कन
 क वरन तन माननी मान ही तो रे ॥ ३॥ जो रे ॥ प्र विचल तेज विराजि
 त कुंडल वर ही जो रे ॥ जो पाल दास प्रभु गिदि धर राधा प्रीत निवाह
 क जो रे ॥ ४॥ १६॥ राग मारु ॥ हि जो रे सुलत नवल विहारी ॥ संग सुल
 त वष भान नंदनी प्रात नहु ते प्यारी ॥ १॥ नीलांबर पीतांबर की छवि
 धन दासिनी प्रतुहारी ॥ पुल कि पुल कि प्रीत मउर नागत कृष्णदा
 सब लिहारी ॥ २॥ १७॥ राग मारु ॥ रंग हि जो रे ना हो सुलत नवल वि
 हारी ॥ मरकठ मणि मय प्रवनी सी सुलत के रोव्यो अंगर प्रटारी ॥ १॥
 कंचन मणि मय प्रवनी सवारी दिन करै किरन पसारि ॥ पचरंग पा
 ट सुधा ट सुमांड ली हो री परम चित्रकारी ॥ २॥ देवत वहुं चहुं
 दी राष्या के छवि की वान उधारी ॥ इत उत तें जु ला १ प्र

मवि विस्रज नारी ॥ ३ ॥ नान्ही नान्ही बूदन रमरु मवरवे लागत हे सु
 खकारी ॥ नाचत मोरचकोरको किला प्रलिदादुरलनकारी ॥ ४ ॥
 छाहे रघो रंगजितती तते के लको लू लनभारी ॥ इतते उमजो वृ
 उतते घुमजो दाजिनी आनरु वारी ॥ ५ ॥ वाजतता लनदई गजल
 री ओर नूररुनकारी ॥ कुंज भवन में रचो हे हिटो रो विहरत
 लाल विहारी ॥ ६ ॥ या छविकी उपमा कहवे को सारदा को नवि
 चारी ॥ सैषमहे सपारन ही पावे गने गने श अधिकारी ॥ ७ ॥
 वरनुकहावनायको नविधिकनीक बुधहमारी ॥ सुषसमाज व्र
 जराजके उपर लुवीके शवलिहारी ॥ ८ ॥ १० ॥ रंगमाला ॥ हिटो
 मूलतरंगरंगालो ॥ नवनी कुंजर सपुंज सदनमो वृविसो छे
 लछवीलो ॥ १ ॥ नएन एभूषन वसन अंगो अंग न एन एनेहन
 वीलो ॥ नवव्रषमात सुतानंदनंदन महारसम तंगलीलो ॥ २ ॥
 इतनवतरुनी मेन मनहरती बूहुं दिस रघो छवीलो ॥ निरखि
 हरखि रुलावतगवति तानतरंगरसीलो ॥ ३ ॥ सारसहंसव

कोरमेर पिककूज तमधुपमतीलो ॥ सजनसखीलखिदंपति सुख्य
नननिवासवसीलो ॥ ४ ॥ १९ ॥ रागमरु ॥ फूलतर्नंदकोनंदहिडो
रेफूलतावटसंकेतमेंरव्योहीडोरे संगराधासुषकंद ॥ १ ॥ तसेंसघ
नकुंजवनफूलेत्रिगुनसमीरवहतसुगंध ॥ तसेंदादुररटतरस
नरेदासिनीदुरेदुरेमंद ॥ २ ॥ व्रजपुवतीफूलवतिप्रानंदगावत
गीतसुर्षद ॥ मुदितनारायणनिरखिस्यामकेदुरकीयेदुःखदुंदु
॥ ३ ॥ २० ॥ रागमलार ॥ फूलोत्तोसुरतहीडोरे फूलताउं ॥ मरुवेम
यारकरोंचितवतकोतनमनखंनवनीउं ॥ १ ॥ सुधिपटुनी
बुधिगंडीवेजननेहबिद्धोनाविष्ठाउं ॥ प्रतिप्रोसरधरुंकल
सारुचिप्रीतधुजाफहराउं ॥ २ ॥ गुरुजनकहुककिलकसिलवे
कोनेहनीखरवाउं ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनरुजाउं एक
पाउं ॥ ३ ॥ २१ ॥ रागमरु ॥ फूलतगिरिवरधारीहि
टयमुनाकोपरममनोहरसंगराधिकाप्यारी ॥ १ ॥
ईसकलव्रजवनिताषटहसभूषनसारी ॥ नाव

तकूत्त हल हेत परस्पर तारी ॥ २॥ चोत्रक मोर चकोर को किना सूरो सा
 रस सारी ॥ नमि त नमर कूज त हे र स भर ला ग त हे सु ख कारी ॥ ३ ॥
 देव स वे मि ल कु लु म नी व र क्त मु नि म न छू टी तारी ॥ यह सु ख नि र ख
 नि र ख स चु पा वे प र ना नं द व लि हारी ॥ ४ ॥ २२ ॥ रा ग म लार ॥ मू ल
 त न ट व र भे ष की ये । शे जि त त रु न र्वा ङ्गि का मा धे मु र ली क र जू ली
 ये ॥ १ ॥ क सु भी पा ग सु रं ग पि क्षो रा मु क्त मा ल ही ये ॥ र म्क र्म क मू
 ले प्यारी सै ग ब्र ज जन सै ग ली ये ॥ २ ॥ प्रा स पा स ब्र ज जु व ती ग
 डी व ह सु ख ने त पी ये ॥ श्री वि षु ल गि रि ध र न ला ल स व य ह र्छ
 वि दे खि जी ये ॥ ३ ॥ २३ ॥ रा ग के दारो ॥ स्या मा स्या म हि जो रे मू ल
 त ॥ र स की वा त पर स्पर मि ल व त ग रे वा ह ध रि कु ल त ॥ १ ॥
 क व हुं क प्रा नं द र स भ रे ग व त क व हुं त न की सु ध रि
 स व मू ल त ॥ र सि क प्री त म की वा नि क नि र व त प्रा नं ग न ही
 स म लू ल त ॥ २ ॥ २४ ॥ रा ग म लार ॥ हे म हि जो र ना हो मा ई ए ह रि प्या
 हे हे सै ग ॥ १ ॥ क न क र वं भ सु चो र डो डी न ग ल जे हे ला ला बु नि वि

चित्रमयारमरुवेवमोहेपरमससाज॥ नमरापिरोजापीतपटुनीनजेहें
 एतेविसालनूलनहूलेनवनागरीहोनवलश्रीगोपाल॥१॥ सजलज
 लधरधुमरेधुरवाधारधसिचहुंओर। चपलाचहुंदिसवमकही
 होदादुरकरेंघनघोर॥ कोकिलाजलिकीरकूदनरटतचात्रकमोर।
 रवनीरागमलाररसवसकीयेश्रीनंदकिसोर॥२॥ हरितभूमिसुदे
 शतरवरभतेहेकवलसुरंग॥ चकुवारुचकुई हंससारसवतकवगु
 लोलीनेवालकसंग॥ चकुवारुचकुईचकोरकोकिनवनेहेंविविध
 विहंग। सरससरोवरनिरखिकेसनजाजितकोटिअनंग॥३॥ सुभ
 गयुवतीनारजोवनचलतीचालमरालावैदवदनीलककेहरीअं
 बुजनेनविशाला॥ मंगरसोरहसाजिकेहोवतिचलीहेत्रजवालामा
 नहुंकलकुकरंगकेसंगमुदितहेंमृगमाल॥४॥ चहुंओरचपोमोगरो
 मरुकोचैवलीजायाबेलविफुलगुलावकूशमालतीमहकार्याकेत
 कीकरनाकुंदरसवसरहेअमरलोभायाश्रीजूलोअविलासमा
 धोरहोकररुचिपाय॥५॥२५॥ रागमलार॥ कान्हुकुनरकेसुरंग
 हिजोरनाहूलेकुनैरीराधा॥ सुवर्णवरनसुखंभदोउसरलसुभ

गसुठारा उतचितमरुवानगजडेमानुभ्रमराकार। मनिषचितडोडी
 लालपटुलीपनापांचसुचारु॥ रच्योरुचिकरविष्कमीसूत्रधरीसूत्र
 धार॥ १॥ जोरस्पामशरीरसुंदर युगलकुशलकिशोर। नीलपीतनीचो
 लचंद्रकरहरतश्चविजेर॥ दामिनीसंयोगउभयगिराजंभीरमृदु
 घनघोर। जुवतीमंडलमध्यमानुचितेचात्रकमोर॥ २॥ हेतजोटापरस्प
 रहसिप्रियापियप्रतिधीरा। अकवजपतिइंधनुषाचिकुसुमविगु
 लनीमीर॥ लूटेहारवरषतमुक्तालरदेरबंधुबंधुननीर। हरितभूमि
 सुठारिसुंदरितरनीतनयातीर॥ ३॥ तासंपहिरेंसारीसुहीसावरीक
 रतहेगुनगात्र। रागमेघमलारमिलिरव—गीतीकीतान। निरखि
 रंधीविपुनकीसू रथकेव्योमविमान। देखिमाधोरसिकदृपतिरहर
 स्वरतिपतिप्रात॥ ४॥ २५॥ रागमेघमलार॥ श्रवीलोकलाजकेसंग
 ललनीमूलतिनवलसुरंगहिरोर॥ शोभितसंगजोरस्पामपियरोप
 ठकसुंभीसारीजठितमातकमतिपटीलानवेठे एकजोरे॥ १॥
 तेलीयेहरितभूमि तेलीएघोरीसुंदतेलीएणवतत्रीयतेलीएघन
 मधुरेंघोरे॥ चतुर्भुजप्रभुगिरिवरतेलीएसुखदासीपधापि
 यप्यारीप्रभुतश्चवि० रतिपतिचितचोरे॥ ३॥ २७॥ ७

रगमन्वार ॥ हिंडोले हरिके मूलीये हो यों कहतें कें लत्र जनारी ॥ ० ॥ एक गग
 न सघन सुदेश जित तितर हे कारु र छाया। जो पांगना गोपाल जूसों कह
 ति गहे गहे पाए ॥ अब को न लाडलडाव हो पिय सुनो हो गो कुल राय ॥ ग
 तन हर हिंडोले तापिय बेगले हो बुलाय। हम ही जो रे र हस रू स्ने तुम पिय
 हे हो कुलाय ॥ १ ॥ एक बली हे वनि वनि विहस सुंदर चुनरी जन काय। एक
 ज रद लहे गसर दर विशा सिमानो हो कमल प्रकाश। श्वेत अंगी पा कुचन
 उपर अमर भूले वास। रुत वसंत विलास आवन फूले प्रगट पलाश ॥ प
 क हरी के दरस को पिय जो होत ही वो होत पियास ॥ २ ॥ एक बने हे को कि
 लकंठ निर्मल करे दादुर सोरा। हंस सारस की रवन में व होत लवे चकोर
 कारी घटा में श्वेत वगद लदा सिनी वहु ओरा। ते से श्री यमुना जो र रे धिय
 त से से ही अंबर घोरा। ते से ही रटत व पिय रा वि च वि चट उ कित मोर ॥ ३ ॥
 एक एक एक नी ओट हुंय के कर ली ऊरा ऊकोर। एक एक एक नी ओट ठ
 डी हस ति हे मुख मोर। एक एक ^{एक} नि हे ततारी कर ति हे रंग रोरा। एक सखी
 गोपाल जूसुं चली हे तिन का तोरा। एक एक छुं वें प्रागरि प्रिय रा खित
 जो हम तोर ॥ ४ ॥ एक व होत नीर अहीर गो कुल नंद जो द । एक उ

नमजीवनसुफल्लेषतनिरखिप्रान्नाधारा एकपाषनेवरः प्रो रज्ज
हरघुघुरीघमकारा गोपालजूकीभावती पीउधरतवारंबार। तेंग
पानज्ञानगवें शोभितनंदकुमार ॥ ५ ॥ २५ ॥ रागमलार ॥ आलीरी
मूलतस्यामास्याम ॥ ० ॥ होउखंभविश्वकर्मावना एकामकुंइव
ए। जटितचूनीभरितनगसवलालहीरा लाये ॥ वोहोतविदुस
वोहोतमुक्ताल्लितलटकनिकोर। बहुरंगरेसमवरुहीवरुहा
होतरंगरुकोर ॥ १ ॥ स्यामस्यामासंगमूले सखीद्वैतमुलाया। स
वसरससिंगरकीते रूपवरनीनजाय ॥ नीलसारीलालनेहेंगज
रदं प्रंगीया प्रंग। रोभावतीनयीहोयजमुनात्रिवलितरलतरंग
॥ २ ॥ लषलिषलषनहीजातमानो प्रंक देखो चारु। अमरभरमि
तवनगए छिपगएके हरिहारु ॥ चालिदेखिमरालेरंजितगयेसर
तजगेहा। यहजानतजप्रभिमनगजसिर प्रजहुडारतवेह ॥ ३ ॥
देखिसखीहोउकनककेसे शंभुधरेवनाया। नहीहीये श्रीफलसुंदरी
मानो कमलकलीसोहाय ॥ बीचमुक्तामालमानो सुरसुरीधसीधाय।
पारचकविवाचकवा द्विसमित्तनप्राय ॥ ४ ॥ देखिदशनप्रनार

कसेहसिजबमुसकाय। दमकिदामिनीनिरखिकेछविबोहोरीगही
छिपाया॥ कंजखंजनिनेनमोहेउडितरूपटनिभोर। विंवकेछिगकी
रवठगहितनाहिनगेर॥ बहुं॥ यज्यनिनुवतिगठीकोउठा
ठीगलाकहुंतदलीगीतगावेंकोउकरेहंखेलाकहुंदादुरकोकि
लाकहुंवोलतभात्रकमोर। बहुं॥ ओरचकितवकोरकेगएदेखि
रहेवही॥ ओर॥ देखिसखिएकहोतअचरजराहुशशिएकठे
रा। उडतअचरलसतवेनीलपटरूपटनीभोर॥ कनकजटित
जरावेंदीकविजोउपमापाय। राहुशशिरविमिलेब्रजमेंतीनोउ
दयेप्राया॥ ७॥ निरखिशोभासहचरीमिलकोउरुगनअघायें।
सबेरुलावेलाललाडिलीहरखिमंगलगये॥ नहीहोयरसनाको
दिदसजबजपतजनमसराये। छविनारायणदासकेप्रभुमोपेवर
नीनजाए॥ ८॥ २५॥ रागैमौरु॥ कुंजहीडोरनाहोनिजसुखपुंजवि
तातातहिजुनेसुंदरस्यामासंगस्यामाजूपरमप्रवीनाजाकेसद
रसिकप्राधीन॥ १॥ कलेकखेनयचरंगवनिडोडी। जटित

गरी॥ पल्लग खचित पिते जावि चविव कनिक कलसा जगमगरी॥ २॥ ग
जमो तितसों डोडी गंधी चौकी चमकिसुरंगी॥ रमकत रुमकत गही गही ल
रकत मोहनमदन त्रिभंगी॥ ३॥ मरुवेवे लनध जाका लरी दुती गहरे
परखी सुतरनी॥ ऊंकारत जोरनमें जातोंको किला शष्ट उच्चरनी
॥ ४॥ बहुप्रोरुमवे लीफूली लता सघनगंभीर। जवरमकत रु
मकत दामिनी ज्यो ऊलमल जमुनानीर॥ ५॥ सारसहंस चोत्रकच
कोरपिकने हदरी कैवेठे॥ ऊलतलता दुमनत नदी सतएसंजु
रिजुरिवेठे॥ ६॥ विजयसुभावेकी येघनसंपति उल्हारि विपनपर
आइ। गरजततरजतमधुरमधुरसखिको किला शष्टसुहाई॥
७॥ सहचरी गानकरत उंचेसुर श्री चंदावनगजे। मधुरमंजीरगग
नउघटत श्रमसुभटपरवावजवाजे। नीलोवर पहिरें नवनागर लाल
कंबुकीसोहे। नीजिलगी श्रमजलसों उरजन प्रीत्मको मनमोहे॥ ८॥
लटसगवगी सुलालवदन परसीस फूलउलटानों। प्रियाकी चौकी जि
रिधरको चंद्रहार प्रति सोहत उरजनों॥ १०॥ रगरसालरसभरी मोंह
सोह। सिहसिप्रर्धजनावे॥ दुरनिमुरनिमें चितवनप्रखियां लालची
मनललवावे॥ ११॥ फेजिरत्यो सौरभसगरे सखीरुमकुमरुदना
गरकोंकहां लजिकहे मतनयोवरने भावग दीधरउरकों॥ १२॥

रागकाहरो ॥ मूलतर्पणतिलघनकुंजमध्यफूलनकोरचोहेहीडोरना ॥
 फूलनकेखंभुगडांडीआरफूलनकी फूलनकीचौकीबनीलगबुहुर
 त्त-प्रमो लना ॥ १ ॥ फूलनकेआभूषनअंगअंगकविरहे फूलनके
 वसनविराजितप्रतिष्ठवि फूलेफूलेविराजितमदनचित्तचोर
 ना ॥ फूलनकीचुंनरीकसुंभीसारीकंचुकी फूलनकेदुर्घनकवि
 अधिकप्रतोलना ॥ २ ॥ फूलरहीफूलवारीमूलतर्पणसकुमारी
 फूलीफूलीकोटादेतमधुरसुरगावतगीतमडुबोलना ॥ रसि
 करायकीछविउपरकोटिकामवारडारोहसिहसिधुंघटखे
 लना ॥ ३ ॥ रागकाहरो ॥ श्रीमहंदावनसघनकुंजपोहोपुंज
 मधुपुंजतहांरचोमोहतलालकुसुमहिडोरना ॥ केवरोके
 लुकीबेनचंबेनीकुंदजाहीजूहीतिवारीरायबेनमहकारी ॥
 विविधभोतिखंभरबेराजतअधिकप्रतोलना ॥ १ ॥ पटुनीर
 बिसवारिफूलनसोमरुवा सुंरडांडीआरप्रतिष्ठविसोहतहेरी
 तहांगीतमधुरसुरंजवधूबोलना ॥ फूलनकीसारीकंचुकी, न

शीलेहेग फूलनके पेहेरे प्रांशुलावनपियको इंद्रवधूसी डोलना
 ॥२॥ रंगभरे सुरति प्रनंगभरि प्रखियां सखियां सोहतसंग हे
 तहें जोलना ॥ कृष्णदासबलिहारी राजतप्रीतमप्यारीन्यारी
 नहोत प्रंग तें जेसें मृगांगना ॥३॥ अथपंचपदी हिजोरो ॥ राग
 मलार ॥ तरणिकरणवली प्रतिभटः प्रभा सुभग डोलिकाया
 मपि नृत्यलितरो ॥ सरसप्रानंदनररसिकजनतापरममन
 सितामरसे सुरसती नितरो ॥१॥ प्रजवधूटी प्रजमती वीतुकु
 लवनतरु प्रजे प्रजतले प्रजगमये तितरो ॥ लडितकादं वि
 नीनयनकुरंगनी सुमनसरसतमिहसुखपतितरो ॥२॥ प्रल
 मनलसे लुलोते लुनितं विनीवसनानिकां वनानिवहति सु
 तरो ॥ यमुना मुना धुना क्रीडयन्तृती विपर्ययपति प्रतिविंब
 तालु नितरो ॥३॥ सुरकुसुमसंकुलितभ्रंगकुलसंबलित
 लतावलितोसमेत्वी ईह्यतितरो ॥ ईत्यनुपममिहु किमपिसु
 विश्वजयतियत्तदीयमिहकृपयेतितितरो ॥४॥ सभकि

नववलि की यत्ने त्रिजसुखं भक्तसुमुखं नरिवर्त सुतरां ॥ सुकरस
 नावभरितं सुविधया सुमिह सहजो वैश्वरप्रभव तु सुतरां ॥ ५ ॥
 रतिपंचपदी हितो ॥ रंगने धन जार ॥ सरस हि जोर नो मूलत चं
 इनव गियां वनाया ॥ कोकिला कलकी रकू जंत कुंजन शृ सुहृप
 सुगखं न चं इनके ॥ प्रतोप मडांडी सुभग सुठार । पटु नीविते जाज
 दित बिडुम गहि सुघर सुनारि ॥ मध्यल लना जाल मूलत सहच
 री सुकुमारि । सप्तसुर मिलतान उपजत प्रमुदित राग मलार ॥
 ॥ सतवर्ग चं पाके वते के लुकी ॥ प्रभु नवहारि । गुलदाव कर
 ण सेवति जाई ॥ ह्रीकं जनि कारि ॥ वलि चं वेनी सरखंडी सो व
 रनर लमं हारि । होना गुलाव गुलहस्त पाउर सघन घन कुलवा
 रि ॥ २ ॥ रुचि हाख हाडिम ॥ प्रगर खेव दाम चिं रंजी ॥ प्रंजी रानी
 ब्रूसदा फल नारंगी गलवे तं तुलसी जंभीर ॥ जाय फल सोपारी
 नारिकेली ॥ किसमिस खिरनी खिजर लतवड हर सेव
 ॥ प्रो व ॥ प्रवरा ॥ प्रंगुरा ॥ ३ ॥ जहोर हृस्प वेठ सुघर पं

करमनोरथगिरिधरलालकोपरमानंदसोहाई॥३॥ रागका
 न्हरो॥ एव्रजघोषनारिसुनसुनेआईहेंजूवनिठनिजूलनकुव
 ररावरे॥ अवनसुनिसिंहद्वारजनकारजेहरतेहरअवनवठ
 विधुनापायलपाईनधरतसुठरपदधरनीवावरे॥१॥ रम
 कनिजमकनिजूलनफूलनघनदामिनिज्योप्यारीकोंकी
 योपीयहावभावरे॥ कल्यानकेप्रभुगिरिधरनरसिकवर
 प्यारीकोंनईउठाईनीलउदधिमध्यसंगकीसखीवेठी
 नेहनावरे॥२॥ रागकाँनरो॥ सुघरकदंबखंडीमध्यूलत
 दंपतिरघ्योहेहिडोरोफूलनकोसवारि॥ चहुँप्रोरदुमलताजु
 करहीसोभादेतबोलतचात्रकपिकमोरचकोरकीरपपैया
 गगनविहारि॥१॥ केवरोकेलुकीजाहीजूहीचंवेनीवेलकुंद
 मंदारकूजोनवलनिवारि॥ विविधिभांतिफूलनकेलं
 भाडांडीपटुनीरचीफूलेफूलेछछदासजायवजिहारी
 ॥२॥३५॥ रागमोरु॥ जूलेत्रयभातकुमारफूलहीडोरना॥

डोंडी फूल खंभ फूलन के मरुवे फूलवनाए धरती फूल पर रच्यो
ही डोरो फूल ही वादर रचाए ॥ १ ॥ मर फूल फूलन के भुहर पुर
सीस फूल सिर राजे ॥ फूलन मांग ऊव ऊवी फूलन फूल जाले छु
विछाजे ॥ २ ॥ टीकी फूल फूल के वेशर फूलनी जोरी सोहे ॥ मा
ला फूल हार फूलन के दुलरी फूलन सोहे ॥ ३ ॥ वाजूबंध फूल
के बांधे बूरी फूलवनाई ॥ केचन फूलन रहे कर उपर फूल मुंड
रिया भाई ॥ ४ ॥ सारी फूल फूल को लेहेगा अंगीया फूलन बिरा
जे ॥ वेनी फूलन रही का उपर निरखि जैरा पतला जै ॥ ५ ॥ जेह
र फूल फूल के पायल फूलन प्रनवट छे विभारी ॥ फूलन कम
नपर फूल विछुवा सरदास बलिहारी ॥ ६ ॥ ४० ॥ राग मला
रा ॥ रातिक ही डोरना भाई फूलने श्रीमदन जो पाला ॥ ७ ॥ हरि हि
डोरो हीर रच्यो कुंजनी जनुना फूल ॥ लहो वेन चंपा मोग रा
केतुकी के वरो फूल ॥ निरखि शोभा थकिरहे सिट जयो

मनकोशूल। गोपीजूहरिसंगशूलही आनंदशुखकोशूल॥१॥ बिलुलाजु
सुभीचित्रचित्रितमेनदीएहेंदूकूल। वक्रभोंहू। नगायवेसरसुवहीभरे
हंतकोल॥ स्पामसुंदरनिकसिगठे। प्रापु। प्रापुनीटोला। गवतरजम
लारदोउदेतही। डोरेऊकोर॥२॥ धन्यधन्यगोपीसुकलजीवनकरत
हरिसंगकेल। रुदनकहेकहेनामकोलावतदेतहेंरसजेला॥ चिरं
जीयोसखिमदनमोहनफलेजसोदावेला। परमानंदसुनंदनइनव
रननिजचित्तमेला॥३॥ ४१॥ मलार॥ आशुवनउमंकरहीब्रजनारि
फूलीफिरतनिसिकजुनगवतसुवन्नतप्राणपियारी॥१॥ एककुसुम
लेडारतउपरएकचित्तवलरहीगठी॥ एकआयधायमनमोहनपे
एकभरतअंक-ठी॥२॥ नीलेपीतअंगअंगविराजितओरसिंगर
सिंगरी॥ सरसंगविलसतहेंनामिनीनिकनहोतहेंन्यारी॥३॥ ४२॥
लार॥ हरिसंगशूलतहेंब्रजनारी॥ सावनमासफुहीघोरीघोरी
तसीयेभूमिहरियारी॥१॥ नवघननववननवबोत्रेकपिकतवल
कसुंनीसारी॥ नवलकिसोरबोमअंगशोभितनवब्रषभानहुला
री॥२॥ बिडुमखंभरचित्तनगपटुलीडोडीसरसलवारी॥ कुंभतदस

प्रभुमधुरशोणिकाद्वैतलालगिरिधारी॥३॥४३॥ मलार॥ हिटोरमाईसूज
तहेनंदलाल॥ गावतसरससकले ब्रजवनिता वासोहरंगरलाल॥१॥ सं
गसूजत ब्रषभाननंदिनी उरगजमोतिनमाल॥ कंचन बेलिष्टे विपररा
जतप्रहंजीसामतमाल॥२॥ चांके जततोलपखावजमुरली पगनूपुर
ऊणकार॥ सूरदासप्रभूकी छे विकुपरतनमंनडादेवार॥३॥४४॥ म
लार॥ सूलतलाल गोवर्द्धनधारी॥ बलिवलिजाउंसुखारविंदकीसग
लीये वियप्यारी॥१॥ मनिमयजटितहिटोरबन्योहेसूलतसखिहित
कारी॥२॥ तलनादोउअतिराजतहेधनदासिनी छे विनारी॥२॥ सीतलम
दसुगंधपवनबहेकुंजघटा छे विनारी॥ दादुरमोरपयेयाबोले प्रवन
सुनतसुखकारी॥३॥ शोभाप्रभुतजातनवरणी के टिकाममनुहारी
श्रीवध्रभ प्रभुपदपंकजकीरुदनदासवल्लिहारी॥४॥४५॥ मलार॥
हिटोरमाईसूजतहेनंदलाल॥ गोकुलेशूपूरणउरुबोतमभक्तन
के प्रतिपाल॥१॥ इष्टिष्टुधीनीचितवतचहुंदिलहरततिमिरकलका
ल॥ मुखिकनचोरुवहेवदनकमलकी केशरतिलकसुभाल॥२॥
वध्रभनिरखतअतिसुखवासो गावतगीतरलाल॥ कहे न
तयहसुखदेखतप्रेममुदितब्रजवाल॥३॥४६॥

रागमा रूगोडी ॥ हीडोरो नवरंजो सजनी तहां मूलेश्री न ध्वं मराय ॥
 चलोहेली जोवा जई ये यह सुख शोभा कहि यन जाय ॥ १॥ नवरं
 ग खंन कनक दो उ सुंदर नवरंगी डांडी चारु सुहाय ॥ नवरंज बो
 कीतकी याग दी नवरंग मोतीना मूम कथाय ॥ २॥ नवल लालन
 वरंजी राधानवरंज युवती ठो लेवाय ॥ नवरंज मोर कलाकरिनि
 वे नवरंज जमुना जीवे हेरे जाय ॥ ३॥ नवरंज को हो फट्टि व्रज उप
 र इंद्र मुदितती आनंदनी वाय ॥ नवरंज भक्त तण मन फूला माध
 वदास उमज्यो जस जाय ॥ ४॥ ४७॥ रागमालवगोड ॥ हीडोरे मूलत
 गिरिवर धर शोभावरनी नजावे हो ॥ वांम भागवत वमाननंदनी व
 सन अंग वनावे हो ॥ १॥ अतिसकुमार नारी उरपतहे मोहन उरसिल
 जावे हो ॥ नीलपीतपट फेर सहे धनदा तिनी दुरि जावे हो ॥ २॥ मान
 हीतरुनतमालमध्विका अंग अंग अरु जावे हो ॥ गोरस्य मध्वि
 मरकत मनिमय कनिकवेल लपटावे हो ॥ ३॥ सुरत सिंधु वि
 तसत हो उजने सब सह चरी सुख पावे हो ॥ चतुर्भुज दास
 लमुनि धरि धरुनस सुरतर मुनि जन जावे हो ॥ ४॥ ४८॥

रागमलार ॥ कुसुमनीनांतिवनाई हिटोर कुसुमनीनांतिवनाई ॥
नवलकिसोर मुरलीधर मूरतठिगराधे सुखदाई ॥ १ ॥ छाहरही हे
वाहरजिततित दामिनीकी अधिकारी ॥ दादुरमोरको किलाकोले
नांहीनाहीवूंद सुहाई ॥ २ ॥ जोरा देत सकलत्रज सुंदरी पवनवल
त सुखकाई ॥ वलुर्जप्रभुगिरिधरनलालकी यह छवि रनीन
जाई ॥ ३ ॥ ४५ ॥ रागधनाझी ॥ मूलत सुरंगहिटोरना हो मूलतन
वलजुगलकिसोर ॥ वरजातिनी रसनरे मनमोहन सहसतल
सतचित्तचोरे ॥ १ ॥ स्वामतमाललालरसलंपटगत करतघनघो
रे ॥ पुलिकपुलिकप्रीतमउरलुगत वरषतसुषनही ॥ चोरे ॥
२ ॥ नीलांबरपीतांबर ॥ चंदन चंचलचलतऊक जोरे ॥ रामो
दरहितगिरिधरकी छवि सदा हो मनमोरे ॥ ३ ॥ ४० ॥ मलार ॥
मूलतगोकुलचंद हिटोरे ॥ वांमभागप्रथमातनंदिनी जावतिअति
सुरजोरे ॥ १ ॥ तेसेइमोरपपेयावो लतसीतलपवनऊकोरे ॥ रसि
करायप्रीतमसंगमूलतहसतहसतचित्तचोरे ॥ २ ॥ ५१ ॥ रागनटा ॥ हि
टोरे मूलतहेपियप्यारी ॥ वर्यादिलुनीकरंगजागत तेसीयेभुजिहलियार
॥ १ ॥ रत्नजटितकेखंमनोहरटोडीवाकसवरी ॥ परमानंददासकी छवि

मन्त्र ॥ १ ॥ प्राणुसावनती जसुहाई ॥ करिखंगार गोपीसव
गहते नंदभुवनजुरा प्राई १ प्रजनादी प्राहर देवोनी ते
लोकावो भाई नेरो कुवर कन्हैया जूने तुम सब वं हो जाई २
वेही जाय हिंडो रे स्याना गावत पीयस भाई रसिकराय
प्यारी संग जूनेत पुनक प्रेम लपटाई ३ मन्त्र ॥
सावनती जहरियारी सखीरी ॥ वरसाने ब्रष भान गोप के
तरुनी भीर प्रातिभारी ॥ १ ॥ सुंदरि गई हिंडो रे जूनेन कीर
ते कुवर दुनारी ॥ प्रीतम सखी जूनावत गावत सुद
कोकिने प्रातुहारी २ वररावरत ते वसत विराजत
मनहुं मेन फुलवारी वनिता वनि लन में वनिनि
खत लनि लत कुंज विहारी ३

अथपवित्राकेपद॥रागसारंग॥पवित्रापहिरेश्रीगिरिधरलाज॥
 सुंदरस्यामल्लनीलोत्तारसकलघोषप्रतिपाल॥१॥हठीमनहृ
 रधनुमारोमोहनसंगसखीत्रजवाला॥फूलेफिरतमत्तकरिनीजें
 अतिप्रातंदनंदलाज॥२॥दृष्टिस्वरूपठगीसीगठीदंपतिदृ
 लकेसाज॥परमार्तंदप्रभुपरमोश्रावरिप्रातंपियाकेकाज
 ॥३॥रागसारंग॥पवित्रापहिरेश्रीगिरिधरलाज॥प्रावण
 शुद्धिकादृशकेदिननिजमंदिरवेठेनंदलाज॥१॥सुवती
 यूथसवंप्राईवधावनमोतिनभरिभरिघाल॥मेवासव
 पकवानगोदभरिस्माईप्रागेगतसखासहितसवज्वाल
 २॥निरखतदेवमुनिसबहरखतवरषतमेहरसालागे
 विंदप्रभूदीजेपचरंग॥पवित्रानवलजनीवलमाल॥३॥
 रागसारंग॥पवित्रापहिरेश्रीगिरिधरलाज॥वामभागव्र
 षभातर्नंदनीचोलेतववनरसाल॥प्रासपालसवज्वाल
 मंडनीमानोकवलप्रतिमाल॥कुंजनदासप्रभुनिभुवनमो

हनगोवर्द्धन धरलाज ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पवित्रापहि रेकुं जविहारी
 तीनलोकपवित्रकीयेहें श्री विठ्ठलगिरिधारी ॥ १ ॥ प्रतिही पवि
 त्रग्रीवामें विलसत निरखि अकित जयोसार ॥ परमानंदपवि
 त्रकीमाला जोकुलकी व्रजतारी ॥ २ ॥ ४ ॥ राखीनाकी रैन ॥
 राग सारंग ॥ राखीवांधति जसोदा मैया ॥ सकलसिंगर विवित्र
 वनावल संगसोजित वलनैया ॥ १ ॥ कनकरचित सिंघासन
 वठनिजिगोकुलकी छैया ॥ तालमृदंगशंखधुनीवाजत
 सुनियत व्रजमें होत वधैया ॥ २ ॥ करले धारललाटवनावत
 कुमकुमतिलकसुहैया ॥ देत अक्षतकर राखीवांधत उरआ
 नंदवठैया ॥ ३ ॥ आजननरि पकवातनि ठाई में वावहुमिले
 या ॥ प्रति सुगंधवासविराजे देत प्रात है या ॥ ४ ॥ इंडुरीपि
 उरीवार मुखपर जतनी लेत वलैया ॥ लेप्रारति उत्तारतसु
 तपर जोविंदुवाले रजिजैया ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ लिहवोरगठे

नंदनंदन द्विजवररत्नाबंधतः प्राणि ॥ परमपवित्र पाठकीटोरी
 राखीरहीरेपाती ॥ १ ॥ पठतवेदमंगलद्विजहरखितदृत्तः प्रासीस
 सुजानी ॥ चिरंजीयो नंदनानकनैया ब्रजजनजीवनप्राण ॥ २ ॥
 हरखेहरिदेवविप्रनकोहीरामातिकदान ॥ गोविंदप्रभुगिहि
 धरमुखः प्रबुजसदारहोयावन ॥ ३ ॥ रागसारींग ॥ राखीबंध
 तीपशोदाभैया ॥ सबेसिंगरसजेपठभूषनरामकहनदोउभैया
 ॥ १ ॥ रत्नजटितकरिराखडीबंधीफुतिफुतिलेतवलेया ॥ स
 कलभोगसाजः प्रागेराखेनीकेलेहोकनैया ॥ २ ॥ याछविदे
 खिमगतनंदरातीनिरखिनिरखिसुपेया ॥ चिरंजीयोयशो
 दापुततिहारोपरमानंदयशोभैया ॥ ३ ॥ रागसारींग ॥ राखीबंध
 धतयशोदाभैया ॥ सकलसिंगरसजेपठभूषनरामकहनदो
 उभैया ॥ १ ॥ गावतगीतसबेजोपीजनघरघरहोतवधैया ॥ प
 रमानंददासकोठकुरसबसुखकलितफलेया ॥ २ ॥ रागसा
 रींग ॥ मातयशोमतीराखीबंधतवलेः प्ररुप्रो ॥ १ ॥

कनकधारमैकुमकुमप्रद्योतितिलककरतनंदलाके ॥ १७ ॥ नाग
 श्रौतिप्रभुषणप्रवरवारतिमुक्तामालके ॥ रामदासप्रभुआपु
 नीजनपदपरसतुहंलाके ॥ १८ ॥ रागसारींग ॥ राखीवांधतिय
 शोदाभैया ॥ विविधसिंगारसजेना ॥ तविधिबेठे रामकछलदो
 उभैया ॥ १९ ॥ गावतिमंगलगीतयुवतिजनफुनिफुनिलेतवजै
 या ॥ आरतिकरनेकरिन्योछोवरिचिरंजीयोकुवरकहैया ॥ २० ॥
 सूत्रपाटराखीकरसोहतहरिकुलधरदोउभैया ॥ परमानंददा
 सकोठानुरत्रजजनकोसुखदैया ॥ २१ ॥ रागसारींग ॥ वेहेनसुभ
 राखीवांधतवत्प्ररुश्रीगोपालके ॥ कनकधारजरीप्रद्यो
 तकुमकुमतिलककरतनंदलाके ॥ २२ ॥ आरतिकरतीबेह
 नीन्योछोवरिवादिमुक्तामालके ॥ आसकरनप्रभुमोहन
 नागरत्रमपुंजत्रजवालाके ॥ २३ ॥ ७५

रागस्योबिलावला॥ वा. ल. वि. नो. द. भा. व. ती. ली. ला. = प्रति. पु. नी.
तमुनिभाखी॥ साधुसाधुतुमसुनहोपरिहितसकलदेवसु
निसाखी॥ कालिंदीकेनिकटनगरयेमधुपुरीपरमरसाल॥
कालनेमिउग्रसेनराजायेकुलउपज्योकेंसभूपाल॥१॥ कह
तशुकरायसों॥ हयेगएधेनरत्नपीतांबरआनंदमंगलचार॥
समुदितनईअनाहतवानिकेसकानिपरीसार॥ याकीकूख
अवतरीहेजेसुतकरीहेआनसंहारी॥ रथतेउत्तरिकेशग्रह
राख्योकरिहोआनसंहारी॥ कहतकंसरायजू॥२॥ तववसुदे
वहीनकैनाख्योएरुषनत्रियवधकहरी॥ मोकुनईअनाहत
वानीतातेंसोचनठरही॥ आगेरुद्वैफलजाविषफलवद्वेष
हीबिनकीतसरई॥ याहिरीतोकुंओरविहाउंकोनसोमली
यउरई॥ कहतकंसरायजू॥३॥ यहसुनदेवसकलमुनी
नाखेरायनएसीकीजे॥ अतिहारेमान्यवसुदेवदेवकीजीवदा
नइनदीजे॥ कीनोयसहोतहेनिष्कलकल्योहमारोकीजे॥
याकीकूखओतरगेजेसुतसावधानकेलीजे॥ कहतवसुदेवजी०

पहिलो पुत्र देवकी जाये जेव सुदेव दिखाये ॥ बालक देखे कंस सहसि दी
 नो सब प्रपरा धृष्टमाये ॥ कंस कहल रकाई की नी नारद कहिस मु
 जाये ॥ जाके उर लुम कर्त हो पृथ्वी पतिलो फुनि पेहे ले प्राये ॥ कहत
 मुनि नारद ॥ ५ ॥ यह सुनि कंस पुत्र फुनि माये एहि विधि पुत्र सहाये
 कंस वंसको नाश करत ही कहा लो जीव उवासे ॥ इहि विधि पति कव
 मिटि हो श्री पति विधि यह कहा विवासे ॥ तव देवकी नई प्रतिया
 कुलतन की शुद्धि विशासे ॥ कहत एउ देवकी ॥ ६ ॥ धेनु रूप धरी भू
 मिपुकारी शिव विरि बिकेदार ॥ सब मिलन ए जहां पुरुषोत्तम अवि
 गति अगम अकार ॥ हीरसमुद्र मध्य जहां पौठे वो रत प्रागम
 वार ॥ उधरुंधर नी हनुज कुल मारुं जे नरत्न प्रव प्रवतार ॥ कह
 त प्रभु देवसे ॥ ७ ॥ पंचतख पवन पानी ज्यो सो इह जन्म किकर ॥
 पाषंड धर्म कर लुहे पा मरना हिन बलत निहार ॥ मार गच्छो डिकु
 मार गलोर ति बुधि विपरीत विचारि ॥ अमृत छाडि सब विष अ
 वनत हे देत धर्म परगारी ॥ कहत प्रभु प्रा पही ॥ ८ ॥ सुर नर मुनी
 और पशु पंथी सबे प्रासी सदीनो ॥ जो कुल जन्म जे हो हमारे संग

जो चाहत सुखकीने॥ जेही माया विरिंचि शिवमोहे ताही वाजिक
 रचिन्हो॥ देवकी कूख अकर खीले हिनी आ पुनो आसन लीनो॥
 आ प जग जीवन॥ ९॥ हरिके गर्भ देह जननी के नदन उजास्यो ला
 ज्यो॥ तिहि छिन आयकं समयो ठाठो देखि महा तम जाण्यो॥ दि
 नदसगए देवकी आ पुनो वदन निहार जाण्यो॥ कंसकाल जीय
 जानि आ पुने प्रति प्रा नं है जाण्यो॥ कहत तव देवकी॥ १०॥ अवि
 नाशीको आगम जान्यो सकल देव अनुराजो॥ कछु दिन गए गर्भ
 को आगम देवकी भूवड भाजो॥ कहा कंस कछु ताहि उपायो चाहत
 गर्भदुरायो॥ आठवो गर्भ देवकी जन्म निवसु देवतिकठ बुलायो॥
 अखिल लोक नाथ सुखदायक जन जनम धरि प्रायो॥ आप जग
 जीवन॥ ११॥ माथे मुकुट पीतांबर आठे उर सोहे भृगु देखे॥ शंख
 चक्र गदा पद्म विराजित प्रतिप्रताप शिशु देख्यो॥ तव देवकी ज
 ई प्रतिव्याकुल अनुतरूपहि देख्यो॥ वेठि निकट सकुचि पतिवो
 ले दुहनी उन्न सुख देखे॥ देव उ सुख पुत्रको॥ १२॥ सुन देवकी हो
 अन्य जन्मकी लुमकों कथा सुनाउं॥ लुम मांज्यो कछु हों दयो नाथके

तुमसेवा लक पाउं ॥ शिवसनकादिक प्रादिब्रह्मादिक ग्यान ध्यान
तही प्राउं ॥ नक्तवत्सल हे मेरे विरद्वीर ॥ रही कहं लजाउं ॥ होहुं ज
ग जीवन ॥ १३ ॥ तवही माया मो हं प्ररुगये श्री शुक्रे तेवन लाजे ॥ प्र
हो वसुदेव जे जाहोगे कुल तुम हो परम सुभागे ॥ घनदासिनी धर
नी ज्यो कों ध्या जमुना जल सों पागे ॥ वसुदेव जाय धसि जव जल में
सकल देव प्रनुरागे ॥ विकल वसुदेव की ॥ १४ ॥ प्रागे देखे जमुना
दह गहरी पाछें सिंह दहागे ॥ गुल्फ जंघ कटि ग्रीवानासिका तव
लें स्याम उच्छंजे ॥ चरन पद्म ली परस कालिंटी तही सिंह जु प्रागे ॥
उपर शेष सहस्र फलि छाये जे गोकुल कों जागे ॥ प्राप वसुदेव जी
॥ १५ ॥ पहुचै जाय महारिमंदिर में ने कुन शंका कीनी ॥ जागे नकोउ
योग की सैपति लवहि गोद करि लीनी ॥ लेव सुदेव तुरित घरि प्रायो स
कलघोष मे जा र्नि ॥ देव की कुष प्रउलरि कन्या कें स प्रतिचन मा नि ॥
कंस दोरि मानिके ॥ १६ ॥ राहु सुविकं सखट गले धायो तव देव की प्राधीनी
रहु कंन्या माहिब कंस बंधू ते दासी जाना करि चिन्ह ॥ करिकं स प्रधवै
शनाश को ससुदि कं शरीस की नी ना जानिए हो हीम हावल प्रविगति

कहिकेबिन्ही॥ कंसभयभीतसो॥ १७॥ जसेव्यानगरुडको देखेवे
जीवंतराजाके॥ तेसें। सीहुंआपमुखनिरखी परेकूपकसेजाके॥
तेसेकंसभयभीता एकभूल्यो राजसभाके॥ गतिमतिजीव
नकीपतितेरेमृत्युहाथहेजाके॥ सोमदुप्रतिमानके॥ १८॥ प
टकतखिलागईआकाशईदोउभुजापगलपटाई॥ भईआ
काशबोधिपुरदेवीअवधीतीपरेआई॥ जसेंमीनजलहीमें
क्रोडतसकेनमृत्युलखाई॥ बेतोकंसकाजकेप्रगसोत्रजमें
पादवराई॥ कहीदेवीसुपते॥ १९॥ इहसुनकंसगयोदेवकीपे
जायबंरतलपटायो॥ मेंअपराधकीयोशिशुमास्यो लिखि
तमित्योजाये॥ हमाअपराधकरेदेवकीकरजोरेविल
नायो॥ बारुपहरसेज्यासुखसोयेनेकनीदनहीआयो॥ कंस
विलनापके॥ २०॥ देसदेसकोदूतपगयोकोपहेंबलकेसो॥
अविगतिअजरअजीतअमरतोकरताकौबलजेसो॥ दिन
हीदीनसोपुरुषहोतहेंवठतअसुरवल

भारवुडा ए पानि को मा खन जे सो ॥ कंस मन नै व सं ख्यो ॥ २१ ॥ जागी
मे हेर पुत्र मुख दे ख्यो आनंद तरव जायो ॥ कंचन कल स दारे दि
जत चंदन भूमि लि पायो ॥ त्रिदिश पति वर ख्यो कुसुम नि प्रति
फूल नि जो कुल छायो ॥ नंद कहै इच्छा सब पू जो मन वांछित फल
पायो ॥ कहत ब्रजवासीयो ॥ २२ ॥ आनंद भरे करत कोना हल उदि
त मुदित नर नारी ॥ नभ में अभय निशान वज्रौ यो देत निशंक
तारी ॥ नाचत मे हेर आनंद मन कीने पातव जावत थारी ॥ सु
रदास प्रभू जो कुल प्रगटे दुष्ट नग भ्रव प्रहारी ॥ कहत ब्रजवासीयो
॥ २३ ॥ राग प्राणवरी ॥ धन्य यशोदा भाग्यतिहारो जिन ए सो
सुत जायो हो ॥ जाके दर्स पर स मुख उप जत कुल को ति नि
रन सायो हो ॥ १ ॥ विप्रसु जन अरु वंदी जन निति सकल नंद गृ
ह प्रायो हो ॥ नो तन सुभग हर दि दू व दधि हर खित शी सर्व
धायो हो ॥ २ ॥ गर्ज निरूपी कहे सब लहान अवी गति अविनाशी
हो ॥ सुरदास मुख समूह सुत्र जमें आनंद ब्रजवासी हो ॥ ३ ॥ २ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रथमं संतके परलिख्यते ॥ रागं संत ॥ ५
 हरिहरिहृजयुवति शतसंज्ञे ॥ विलसतिकरणीगण अतवा
 रनवरई नरतिपतिमानभंजे ॥ विभ्रमसंभ्रमलोलविलो
 लैचनस्त्रचितसंचितभावं ॥ कापि उज्ज्वलकुवलयनिकरै
 रंचिततंकुलशर्वं ॥ १ ॥ स्मिता रुचिरुचिरतराननकवलमु
 दित्तहरेरतिकेदं ॥ धुंवतिकापिनिगै संववती करलैतलघु
 तचिबुकमर्मदं ॥ २ ॥ उदूरभावविभावतचापलमोहन
 निधुवनखाली ॥ एमयतिकामपिपीनघनस्तनविलुलित
 नववनमाली ॥ ३ ॥ निजपोरिदं नरुतेन दुर्लभमित्रीरुह
 रिसं विलासं ॥ कामपिकापिवलाकरोदग्ने कुलुकेन सुहासं
 ॥ ४ ॥ कामपीनां वावधविमोकससंभ्रमसुखजीतनयनी ॥
 एमतेसंप्रति सुमुखिवलादपिकरतलघुतनिजवसनां ॥
 ॥ ५ ॥ प्रीयपरपैरं नविपुलपुलकावलि द्विउणीतसुभग
 सरिया ॥ विभ्रमसंभ्रमगलईचलमल उजायति

पिसर्महरणारतिरणधीरा॥६॥विभ्रमसंभ्रमगलहैचल
 मलयचित्तमंगमुहारं॥पश्यति।सस्मिन्तिविस्मितमन
 सासुदृशःविकारं॥७॥चलितकयापिसर्मसकरग्रहमल
 सतरंसविलासं॥श्रीराधेतवपूरेयतुमनोरघोमुदित
 मुहंहरिरासं॥८॥रागवसेत॥ललितलवंगलतापरिलि
 लैनकोमलमलयसरीरे॥मधकनिकरकैरवितकोकि
 लकूजलकुंजकुटीरे॥९॥विहरतिहरिहसरवसेते
 न्त्यतिपुवतीजनेनसर्मसखी।वीरहिजनस्यदुरंते॥
 उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितवीलाये॥
 ०७७प्रलिकुलसंकुलकुसमसमुहेनिराकुलवकुलकुला
 ये॥मत्तमदसौरभरभसवधसवत्सैवहनवदलमाल
 तमाले॥पुवजनदूरयविहारणमनसिजनखरुचिकेमु
 कजजात्रे॥४॥मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेस
 रकुरसमविकासे॥मिलतशिजीमुखपाटलपरलकृतस्य

लि

रत्नफलविभिलासे ॥ ५ ॥ विगमितलज्जितजगद्वलोकनतरुण
 करुणकृतहासे ॥ विरहेनिकृतनिर्कुंतमुखाकृतिकतकि
 हैलरितासे ॥ ६ ॥ माधविकापरिमललिलतेनवमातिजा
 तिसुगंधौ ॥ मुनिमनसामपिमोहनकारिणितरुणाक
 रुणवंधौ ॥ ७ ॥ स्फुरदतिमुक्तलतापरिरिंभणमुकुलि
 तउवकितनूते ॥ ब्रंहावनविपिनेपरिसरपरिगतप
 मुनाजलशूते ॥ ८ ॥ श्रीजयदेवभणितमिदमुदति
 हरिचरणस्त्रतिसारं ॥ सरसवर्षतंसमयवर्णनमनु
 गतमदनविकारं ॥ ९ ॥ रागध्वस्तं ॥ स्पामसुभगतन
 सोनितधौटेनीकीलागीर्चनकी ॥ मंडितसुरंग
 विरकुमकुमां प्रोरसुदेसैसरजनैदनकी ॥ १० ॥ कुंभ
 नहासमदनतनमनवल्लिहारकीपीनैदनैदनकी
 गतिधरलाक्ष्मीविधमानो ज्वताजनमनफेदनका २

० रागवर्षत ॥ देखवसंतसमे अजसुंदरी तजि प्राणि मां
नचली वृंदावन ॥ सुंदरताकीयासिकिसोरीनवसितसा
जसिंगारसुभगतज ॥ १॥ गईतिहगोरदेखिकुंचेदु
मलताप्रकासितगुंजितप्रलिंगन ॥ कुंभनदासलाल
गिगिधरकोमि।लीकुंवरीराधाहुलसमेतिमन ॥ २॥
रागवसंत ॥ गावतिचलीवसंतवधावणनंदरायदखा
र ॥ वानिकवर्षिनिवनिचौखमाखसोवृजजनसवरे
कसार ॥ १॥ अंगियालालसिततनसारीमूर्धमनवउ
रलार ॥ वेनिगधितहलतिनिर्तवनपर्वकहरकहाक
होवडैदेकार ॥ २॥ मगमदप्रावडोलीप्रखियांप्राजिहेअं
जनपूर ॥ प्रफुलीतववनदनहोतिदुजरावतीमोहन
जीवनमूरि ॥ ३॥ पगतेहटिक्लिङ्गलिङ्गलिङ्गकेहरकिं
किनीखरखीविधकिहुंनिमार ॥ घोखघोखप्रति

गलित गलित प्रति विभुवनकी रुमकार ॥ ४ ॥ कौवन कुंज लीस
पर लीने मदन लिंगु तें भरके ॥ रूपे हे पीत वसन जतन र
विमोर मंजुरी धरिके ॥ ५ ॥ अवीर गुलाल अरु गजासों धो
विधित जात विस्तारि ॥ मंन खंत जो तार हें तको कमलन
कमलन थारी ॥ ६ ॥ कोहो ची जाय सिंह पौरी जब विपु
जुवतिस मुदाई ॥ निज मंदिर तें निकसि जसो दास सु
ख आगे आई ॥ ७ ॥ नई नीर नीतर नवन में जहां ब्रज
राज कसोर ॥ भरति भांवतें प्रानपियाकों घेर फेर च
हुं प्रोर ॥ ८ ॥ ब्रजराणी मुसुका नि फिर कें पकरन भई
जव करकी ॥ जे संग सरनी नखी कछु व तीयां मिसई
मिस उत सरकी ॥ ९ ॥ कुमकुम रंग लोभरि पिचकाई
धिरकत जसकुमारी ॥ वरजत छीटे जात अरु गन में

हलधर सुवलतो कर्म मंगल प्रपती नीर बुलाते ॥१४॥

धन वेफो। घनवारी ॥१०॥ वंदन बंदन चो वाम चिके नील की
जल पटावे ॥ अलक सिधलता पाग सिधल प्रति कुन
वेवां धन प्रावे ॥११॥ भरति नि संक नरे प्रक वारी भुज
नजवी च भुज मेले ॥ भुनमद ग्वालिव दति नहिका हूरे
लखे लर सरे ले ॥१२॥ कायोरगम गोल लित न भंगी भयोखा
लिन मन भायो ॥ तक रुक मेरु की ये कही विरि पां ला लन
कंड ल गयो ॥१३॥ ताल मर्दंग लां ये श्री रां मां पहां चें आई स
हाये ॥ ^{खिल} म चो मनि खचित चो क मे क विये का हा कहि प्रावे
च न भुज प्रभु गारि धर्त कों देखे ही रनि प्रावे ॥१५॥ ११॥
रग व संत ॥ खिल तव से त गिर धर न ला ल ॥ उउत प्र विर
भु ला ल ^{के} सर छिर कत नवल बाल ॥१॥ लपटावे
त चो वा अति रसाल ॥२॥ चंदन ला ग्यो हो ऊ गाल ॥

देखतमनमद्य भायोविहाल ॥ ३ ॥ श्रीगोवर्धनधरधुसुध
रयाय ॥ बलुर्भुजसुतबलिहारीजाय ॥ ४ ॥ ॥ रागवर्षत ॥ चलि
राधेतोहिस्वामबुलावे ॥ तुंचलस्यामबुलावे देखेवेनु धरेमध
रेंसुरतेरोनामलेलेगावे ॥ १ ॥ वेदेखोचंद्रावनकीसोभाठारगे
रहुमफूले ॥ केकिलानादकनतमन ॥ आनेदुमिधूनविहंगम
कले ॥ २ ॥ उन्मदजोवनमनेदेकोलाहलईह ॥ प्रवसरहेनीको
॥ परमानंदस्वामीप्रथमसमागममित्योभावतोजीयको ॥ ३ ॥
॥ नवलवसेतनवचंद्रावननवललालखेलेहोरी ॥ नईसुरनादि
नेवलउफवाजतनवलराधिकागोरी ॥ १ ॥ कालिंदीतटनौतनसो
भा ॥ नएनएचंद्रनकोरी ॥ सरदासस्वामीमनमोहनचिरंजियो
अहजोरी ॥ २ ॥ वनसेपतिफुलावसेतमास ॥ रसिकनजनमनम
भयोहुलास ॥ १ ॥ श्रीगोकुलफुलोअतिरसालवाजेचैंगमदंग
उपंगलाज ॥ सोहेसुंदरतालकवनायभालागोपाछिरकेके
सरभरीगुलाज ॥ २ ॥ अजजतकले ॥ अंग ॥ अंग ॥ ५

लधर क्लृप्तसंग ॥ फुलेगोपाग्वालमिलिजुवतिजुथमानोप्र
 गटभयोहेकामदूत ॥ २ ॥ श्री वृंदावनरूलेकुंजकुंज ॥ जमु
 नीजलरूलेकरतगुंज ॥ रूकमदवलकलि । लीयेनमर
 वास ॥ रूलेखगवोले ॥ प्रासपास ॥ ४ ॥ श्रीगोवर्द्धनरूलेठो
 रठोरफुलेपटलकेसूत्रं वमोर ॥ ज्येसीसेविणजोवार
 मास ॥ फुलेयसगावेणामदास ॥ ५ ॥ ९ ॥ खेतैलतवसंत
 श्रीविदुलेसमिलिपुत्रपौत्रसुंदरसदेस ॥ श्रीगिरिधरप
 रमप्रधानजानि श्रीगोविंदरायगुनसुखनिधान ॥ श्रीवा
 लकृष्णगुनरूपरास ॥ १० ॥ श्रीरघुपतिकेलेकलाविलास ॥ श्री
 महायजाधिराज ॥ श्रीचनस्याममनहरनकाज ॥ श्रीवध्न
 स्थापीकतिलकमाला ॥ ११ ॥ षट्त्रयमध्यमरकतरसाल ॥
 २ ॥ मरलीधरामोदरसुजान ॥ श्रीजगन्नाथद्विहितव
 खान ॥ श्रीकल्याणरायभर्षडितर्षडितत्रपार ॥ श्रीगोकु
 लौध्रवश्रीकृष्णसार ॥ ३ ॥ श्रीलक्ष्मनरसेजगटरूप ॥

श्री

श्रीधारकेश ब्रजनाथ भूप ब्रजभूषण पीतांबर कपाल पुरु
 षोत्तम ब्रज प्रलंकारवाला ॥ ४ ॥ श्रीगोपालवध भक्तुमार ॥
 श्रीविष्णुलयाय सिकुड हार ॥ श्रीदेवकीर्नंदन गुनर्गभार ॥
 प्रतिप्रमुदित गोपाल वीरा ॥ ५ ॥ श्रीयशोनेदन जै देवजा
 नि ॥ श्रीधारकानाथ जगती जीवन प्राण ॥ श्रीरामचंद्र सुद
 र सुहात ॥ श्रीमदसुदन जगन्नाथ भ्राता ॥ ६ ॥ श्रीवालकल
 प्ररुगोपीनाथ ॥ श्री ब्रजपाल प्राणेश साध ॥ पहरे वसनत
 नरंगरंग ॥ बहुभूषण अटितनगन सुरंग ॥ ७ ॥ सबजुरे प्रा
 एजमुनाके तारे ॥ बहुनकुमाले तहां मई हेभारे ॥ गुनगं
 डवनरनबासा ॥ संगीत निपुन देसी सुगारे ॥ ८ ॥ बाजेवीनी
 वेनखाबचंग गतिमिलत ताल फारु ~~जु~~ ॥ विचरुं सु
 ५ प्रावजउपंग ॥ सरसारंगी मीलत सुगंध ॥ ९ ॥ पंचशब्
 नोवतठोलभेरा ॥ सेनाईन फेरी मिलत टेरा ॥ बाजेअग
 नीतबाजेक ॥ जगजतसव शोषग ~~ग~~ न सुनाए ॥ १० ॥

बोवाचंद्रनवदन प्रवीर शिरके गुलाब के सरसुनीर ॥ तरिपी
 चंकाई जल गुणपलास ॥ डारत भरि भाजन करत हासा ॥ ११
 मिलगवत सरव संतराग ॥ अनुगव षोषलत सुफाग ॥ त
 हां प्राणी एप्रगिरि धधरनला ॥ नवनीत पाया विरूसा ॥ १२ ॥
 श्री शरके सप्राणेशनाथ ॥ श्रीगोकुले सप्राणेशनाथ ॥ श्रीमदन
 मोहन दोउ स्वरूप ॥ सेवात्रे हे हे प्रति एक रूप ॥ १३ ॥ सुविदे
 ष देष कूले कुमार ॥ प्रमुदित प्रो नैदित गोखनारि ॥ सब
 गावत सरसधमारगारि ॥ प्रतिविवसतन कीर्त्तनारि ॥ १४
 प्रमुदित मन सर्व स देतगारि ॥ परवि वि सवसन भुषन उतारि
 ॥ चितचक्रित गठि निहारि ॥ गति पर्यगन ईमति सकलहारि ॥
 १५ ॥ सुखलिंछ प्रबोध प्रगम प्रपार ॥ सब देव मुनि पावतन पार ॥ इ
 ह जीव काहा कह सकत वात ॥ परिकुं कह वे कुंचित जाल ॥ १६ ॥ दिनु
 वसंत रह फागवेला ॥ नित होत हे अजमे रंगरेला ॥ सोरस पीवन की
 बहूत प्यासा ॥ प्रभु पूरो बध्न भदास प्रासा ॥ १७ ॥ इति वसंत संशुर्ण

परिवाप्रथमकुवरप्रतिवीरहतगोपीनसंग॥ तालमुररुदफवा
 जेप्रोरप्रनेकसुखचंग॥ १॥ भरिहोलठोलकछववेनुमदंग
 उपंग॥ रुमसुखकडुडुनीप्रोरजालरतरतरंग॥ २॥ विवि
 धिपरवावुजप्रवजकातलउफजोरी॥ विवविचुजोमुखसुनी
 पतचिमुरलीकीघोरी॥ ३॥ जालपरस्परराजेमनमेजोरीहाथ॥ चू
 काकनकपिचकारदभरिभरिचौरकतगाथ॥ ४॥ चलोखस्वखीदे
 धनजैयेविहरतषीघकार॥ सुनिमतिहरसिसकलजुचतीयाला
 जीकरनसिंजार॥ ५॥ नीलांबरसौतनसारीलहगालीलसुरंग॥ कं
 चुकिललातकुचनपरगुडरमनहुप्रनेजा॥ ६॥ सोधेसासस
 रकैलेरिवेनीसरससबारी॥ मानोकनकरंभलेरिहुमतपन्ना
 नारी॥ ७॥ सीसफुलरच्योतिलकभकुटिबीचवंदुनरोष्यो॥
 मातुहुंसुयसुरसाध्योवानमनमथमानोकोष्यो॥ ८॥ वंदनमां
 गमध्यप्रतिराजतजैकंजसठार॥ मानोसिसससापरजास्यो
 प्रछतठार॥ ९॥ नेनेप्रवनचारुचक्रविराजे॥ मानोससैकअ

बोवाचं दनव दन प्रवीराश्चिरके गुला लके सरसुनीर ॥ तरिषी
चंकोई जल गुण पलास ॥ डारत भरि भाजन करत हासा ॥ ११
मिलगावत सरव संतरागा ॥ अनुराग वठो वलत सुफागा ॥ त
हो ॥ श्रीगिरि धधरन लाला ॥ नवनीत पाया विरू ला ॥ १२ ॥
श्रीघरके सप्राणेशनाथ ॥ श्रीगोकुले सप्राणेशनाथ ॥ श्रीमदन
मोहन दोउ स्वरूप ॥ सेवात्रे हे ग्रे हे प्रति एक रूप ॥ १३ ॥ सुवि हे
ष देष कूले कुमार ॥ प्रसुहित ॥ प्रो नै दित गोखनारि ॥ सब
गावत सरस धमारगादि ॥ प्रतिविवसतन कीर्त भारि ॥ १४
प्रसुहित मन सर्व स देतगादि ॥ परवि वि सवसन भुषन उतारि
॥ चितचक्रित गठि निहारि ॥ गति र्पंग न ईमति सकल हारि ॥
१५ ॥ सुखसिंधु प्रबोध प्रगम प्रपार ॥ सब देव मुनि पावतन पार ॥ इ
ह जीव काहा कह सकत वात ॥ परिकुंधु कह वे कुंचित जाल ॥ १६ ॥ दितु
वसंत इह फा गवेज ॥ नित होत हे अजमे रंगरेज ॥ सारस पीवन की
बहुत प्यासा ॥ प्रभु प्ररो वधने भ दास प्रासा ॥ १७ ॥ इति वसंत संस्कृत

परिवाप्रथमकुचरप्रतिवीरहतगोपीनसंग॥ तालमुररुदफवा
 जेप्रोरप्रनेकसुखचंग॥ १॥ भरिहोलठोलकधेववेनुमदंग
 उपंग॥ रुममुस्ककदुंदुनीप्रोरजालरतरलतरंग॥ २॥ विवि
 धिपरबावुजप्रभवजकातलउफजोरी॥ विवविचुगोमुखसुनी
 पतविमुरलीकीघोरी॥ ३॥ जालपरस्परराजेमनमेजोरीलाध॥ वू
 काकनेकपिचकारईभरिभरिधोरकतगाथा॥ ४॥ चलोसस्वखीदे
 धनजेयेविहरतलीधदारा॥ सुनिमनिहरसिसकलजुनतीयाला
 जीकरनसिंजार॥ ५॥ नीलांबरलौतनसारीलहगालीलसुरंग॥ कें
 चुकिललीतकुचनपरगुडरमनहुप्रनेजा॥ ६॥ सोधेसासस
 रकेंसेरिवेनीसरससवारी॥ मानोकुनकरंभलरिहुमतपन्ना
 नारी॥ ७॥ सासकुलरच्योतिलकभकुटिबीचवंदुनरोप्यो॥
 मातुहुंसयसरसाध्योवानमनमथमानोकोप्यो॥ ८॥ वंदनमां
 गमध्यप्रतिराजतजैकंजसठारा॥ मानोसिससापरडास्यो
 प्रहृतठारा॥ ९॥ नेनेश्रवनचारुचक्रविराजो॥ मानोससैकअ

वनीपरदेषीयतारविरघसाजे ॥१०॥ नखसिखलो जुवतीवनीग
ईसबेसिंधद्वार ॥ हमारोफ गुवादे हमोहन नंदकुमार ॥११॥
काहमोहनरायभाजोकाहे ॥ ओलेलेहु ॥ कुमुदवृंदज्योतिक
सिनैवेकेंदेखाईदेहु ॥१२॥ फगुवाकेमिसिजुगेहरिहर
सतकीप्रास ॥ हेखिकुंजिपतरसतलोचनमरतप्यास १३
सुनिमनहरषजसोमतीउनकोवंप्रासनदीनो ॥ कुंभकुम
जलसोघोरिसवनिमुखमर्तनकीनो ॥१४॥ वरनवरनप
रोयैदीयोमोदभरिभरिजुदायेनागई ॥ ५हविधनंद
घरुनीभ्रजकीतरुणीपहराई ॥१५॥ जतसवनमनहरिति
सुदीतमनदेतंप्रासीस ॥ तुलारोकुंवरजसोमतिजिवो
कोटिवरीस ॥१६॥ नीजदेयेनेनसिरातंप्रघातनपावतप्या
स ॥ तिनकोचरणकमलजोपावेमाधोदास ॥१७॥ १॥
नंदगावकोपांडेभ्रजवरसानेप्रायो ॥ प्रतिउदारवृंषना
नजातिखनमानकरायो ॥११॥ पांडेजुकेपायनकोहसी

हस्तासिनिवायो पाय^{वा} धौयु^{वा} क्वाय प्रथम भोज करवायो
२॥ धाय^{वा} प्राईसजनी पुहसुधोकरवायो ॥ भानुभुवन भई
भारफागुकोखेलम^{वा} चोयो ॥ ३ ॥ सीसीसिरतेरूलेलतेलग्गं
गरुलकायो ॥ ४ ॥ हनुमानकी प्रतिमा जनों तेल चढायो ॥ ४
काजरसें मुखमांडी वंदनकी इकावठानायो ॥ कारेकलसहि
श्रवतमानों चपराचपकायो ॥ ५ ॥ गज^{वा} गामनी गोधेनत।
किलेतुकमालपटयो ॥ देहधरेमानो फागुनखेलन प्रजमें आ
यो ॥ ६ ॥ कहुं चंदन कहुं वंदन कहुं चोवाचरचायो ॥ रतुवसेतजा
नोंकेसुकोरुमफुलनधायो ॥ ७ ॥ काहुगुलरिनमालाकाहु
धजोपहरायो ॥ मानागज^{वा} घटानविचगजगृहावनायो ट
रंग^{वा} ररुतचो हरीयन^{वा} अंगरातो हे^{वा} प्रावे ॥ गुंजनको गहनी
त्रोहितसवपहरायो ॥ ८ ॥ माधेतें मोहनीनें धाधको मार
ठोटायो ॥ मानों हुंकाचे दुधस्यामगिरिवरजुनूवायो ॥ ९ ॥
सोदिबोरि भई खोरि लागते जल दरेरायो ।

चुरचरणोदकप्रायो ॥११॥ लगतई तडिगडिगायुं प्रंगलगाये
 ॥ मानुहु सुघर सैगीततारपटतालवजायो ॥१२॥ मयोत्तनेउरु
 रध्वेदिपायनलपटायो ॥ मानहुचतुरचंदानीराहपदफहापाये
 १३ ॥ चंचलचंदमुखिचहुंदिसतेंगुलगुलगुलचायो ॥ ली
 यो मृगायेघेरी नरेनाना कहिप्रायो ॥१४॥ श्रीराधारधाक
 हेंप्रपुनोबोलसुजायो ॥ प्ररीभानकीकुंवरीसरनहुंतिहारि
 प्रायो ॥१५॥

॥ कीरतज्जषायलाजिला

जितातोवपयपायो ॥ तोल्योखेलो तहोरी ब्रजपतिहूलेप्रायो
 ॥१७॥ साचेस्वांगनसाजैसवैसमूहसुहासुयो ॥ तपाव्यासको
 पूतधरतसुकदेव बनायो ॥१८॥ सनकादिकचास्येजिसि
 ज्योसंन्यासकहायो ॥ घंमत्तप्रायोईरसांमउनमत्तनचायो ॥
 १९॥ ब्रजविधनकेविचकिचमेंलोठलोटायो ॥ चारवदन
 कोस्वांगमैचतुरचतुराननप्रायो ॥२०॥ पंचाननपांचों

॥सुखसुसंगीतवजायो॥हरिकोहोएवावरोसो नारदनाचनया
२१॥देखिनेदकेलालहिजेनेधरिगालवजायो॥महादेवपट
तारहेतपटपटप्रभुपायो॥२२॥होहोहोहोईरहेहंसिनहसयो
मायामेंमुनिहेरणारदलहलहरायो॥कामकामीनीभयोस
वनकोचितचुरायो॥ललीलाजोरीगाठिलालकोपाहयो
॥२४॥गठिजोरोवृषभानरायसुजायचुरायो॥नवलप्रोकेमो
रकोमोरोमोरवनायो॥२५॥पीतविष्टोरीतानिधुबिलोमंड
पञ्चायो॥होरीकीप्राज्ञारीकैरिडलहोपरनायो॥२६॥फाउ
नकीगरिनकोसाखाचोरुपगयो॥होरिनकोपकवानसुभामि
भरिजोरिनखायो॥२७॥रुलीफाउकीफाउफज्योजिनईहरसगा
यो॥जिनहरिघंनस्यामवासवरसानेपायो॥२८॥२॥जोपीनई
रायघरमोलागनफनुंआई॥प्रभुदितकरहिरुलाहलगावहि
रिसुहाई॥१॥तिनमेंसुखराधिकालगतपरमसुहाई॥प्रव
एकप्रगमनाआगेईहेपगई॥२॥जसोमंतिमति०

१३ मुलीमानमालासवनइहमनभाई॥मनिमालालेकहारोमोह
नहेहदेखाई॥४॥विनुदेखेसुंदरसुखनाहिनपरतरहाई॥मात
पितासुतगहलागतविखमाई॥५॥सुनिकेप्रेमवचनहा
मोहरइईदेखाई॥घरमेंतेपनस्यामभजाभरिनामिनिल्या
ई॥६॥नखसिखसुंदररूपकीमानोल्यावनअधिकारी॥ह
दिअजबधुनिहारिईकनिधिइमानोपाई॥७॥प्ररगजा
चंदनबंदनचंदीसतेलेधाई॥भरतिभावैतैलालाहि
करनिकनकपिचकाई॥८॥मेडितकरहिकपोलएकले
काजरअप्राई॥हरसपरसपीयअतिसयसुंदरीसवलपटाई
॥९॥यहलालाअप्रतिललातसुतोनेदरानीमनभाई॥अ
अंगनचुंबनरखनहिसुररुतसुरकाई॥१०॥कुचभुजविच
कीचमचीअप्रतिअमकीरुपराई॥अचरसुपटजोरीरु
सकुचितसिंहरनानई॥११॥हेपतिसउभगसंपतिकोउपीवतन
अधाई॥असुमतिउहीतसुदितसबहनकीकरतवडाई॥
॥१२॥पटइहलेअभरवणचोलादीव्यमृगाई॥जस

मतिप्रतिप्रकृतितभई॥सुंदरीसबपहराई॥१३॥इहमेरेप्रागन
~~सुंदरी~~प्रहंप्रागोमाई॥निकसीदेतप्रासीसजीयोतेरोमो
हनराई॥१४॥इहभ्रजमाधोधरासरहेनितनंदइहाई
नेनप्रवनसुखभयोलाजकीकिरतगाई॥१५॥३॥ ॥
वरसानेकाजोपीफगुवामागनप्राई॥कीयोउहारनंदइउजि
तरभुवनउलाई॥१॥एकगौनाचलएकगावतएकव
जावतताइरी॥काहेमोहनरायइरिहेमैयादेवाचतगा
री॥२॥प्रघतदेतनंदराणिप्रवनिजभागहमाई॥
प्रीतमसजनकूलवधदेखेहरसतझारे॥३॥सुनहु
कुंवरामेरीराधे॥प्रवहिंजिनमुखमांडो॥जेवतस्याम
सखनासंगजिनीपिचीकाईझोडो॥४॥केसरयोहोत
प्रगताकितमोहनपरडोरों॥सीतलगेकोमलत
लतमहिजियेनविचारो॥५॥प्रचरउपरहेरहिहोउ
मैया॥तेनतोदि॥परजतभरतकुंमकुंमानीरदबलन
बलकीकोरि॥६॥कहतरोहनीजलोहाप्रोलीजोवतप्रागे

जाप भरो ब्रजराजैकोहन हा जै भागे ॥ ७ ॥ मोहन मागे वैय तो ही
 न हस हस हूं रे हो ॥ जो पकुंवर के पलट जो चा हो सो ले हो ॥ ८ ॥
 सुवल सुबहु सुनत प्रचानक आए ॥ कंचन माट भरे बहुधि
 ले गोपिन सि रनाए ॥ ९ ॥ गाल गोपै सखा सब हसत हे हे कि
 लकारी ॥ दूध लीयो भीतर तै लखिर की सब बनारी ॥ १० ॥ जो
 सुख सो जा वाहिक हल का हा कहि आबो ॥ ललीता कुं वरी
 कुं वर को प्रचर गहि गहि ल्यावे ॥ ११ ॥ भए निरंतर निति
 प्रतिरति वधु भव जवाला ॥ गिरि परवत जलिन में हार डो
 र मठि लाला ॥ १२ ॥ प्रभु सुकुं द ब्रज वासी प्रक को नकी मा
 ने ॥ कहत भै यामो धोजं न जाय भरो वष भो मेने ॥ १३ ॥ ४
 ॥ हो हो वो लत डो लत मोहन खे लत होरी ॥ सुरधनि सुनी
 ब्रज सुंदरी घर घर तें सब होरी ॥ १ ॥ नागरी सुन प्रागरी रस
 सागर वैशाखी दोरी ॥ तिन में सरस सुहाग निराजित राधा गोरी
 ॥ २ ॥ उत वलि मोहन गोहन जो पकुंवर लख कोरी ॥ सब हितं नतं
 न हस भेष भुवन सत नोदि ॥ ३ ॥ ताल मरुंग उषंग चंग वंसी रुफ भो

रा॥०॥प्राणकहुंडनीमदननेरिनाहिनधनिथोरी॥४॥चंद्रनवं
द्वन्द्वकाभरिभरिनिनेजोरी॥भरतिभावलेलालहिसुखल
पदावतयोहिदि॥५॥प्रगमहमलक्ष्यकसरकुंडिसलकेसरघो
दि॥०॥प्रगजासोंधेखिचसुगंधकीरिभ्रजखोरी॥६॥लाजगई
सर्वभाजसुगावेगादिसुनोरी॥इतराधावलीताउततेंबलिमो
हननोरी॥७॥भोमाचं-इभगावलिजुपकरेभरिकोरी॥पक
दिवेवसो॥प्राईकरिकुकोराओरी॥८॥कुचकपोलकचप
रसतेतजि०प्रारजकीओरी॥गहिगहिगिदिधरआराधाजु
भुजबलवाहमरोरी॥९॥छिनीमुरलीमाला०अरुकटिपील
पीछोरी॥गोपीनकौपहरायगहेगिदिधरबलतोरी॥१०॥
वंसलीयेकोपीहाद्यवहेरंगभाजलकोरी॥५॥मारपरीसुदि०प्रा
ईकटेकेंसवभ्रजकीपोरी॥११॥बलिकोवालविगोकेकोऊव
रज्योनरखोरी॥स्वांगसवेंभुनचावेनपावेजानिगखोरी॥१२
नेन०प्राजिमुखमाजिस्पामसिरुंछिजोरी॥होहोहो
हिउठवतलालपीछोरी॥१३॥मोहनकौपहरावत

खनधोरी॥ अगोऽप्रापवनायपागवधितजिहोरी॥ १४॥ भूलि
 रघोसवगो कूलैचौनलगीउजोरी॥ लपटेननतनसुखप्रति
 अंगसंघहीसनीरी॥ १५॥ रघोरसखेलफागुजगलवरकेलीक
 रोरी॥ संततमाधोमनमदनगोपालधरहोरी॥ १६॥ ५॥
 सुंदरस्यामकजानसरोमलिहैरेहुकाहापेंगारिजु॥ वडेलो
 गकेअंगनवरनतसकुचहोतजीयभारीजु॥ १॥ कोकरि
 सकेपिताकोनिरनेजातिपातिकोउजानेजु॥ जाकेजीयने
 सीप्रावतुहेतेसीभोतिवधानेजु॥ २॥ मायाकुटिलनहितं
 नचितवतकोनवडाईपाईजु॥ उंहिचंचलसवजगतविगो
 योजहांतहांभईहसाईजु॥ ३॥ लुभैमउनिप्रगटहोयचारेतें
 कोनभलाईकीनीजु॥ मुक्तवधूउतमंहीजेनलाएकलेधुप्र
 धमनकोहीनेजु॥ ४॥ वसिदसमासगर्भमाताकेउनीअसक
 रिजुएजु॥ सोघरधोडिजिजिकेलाचकेगएउतपयाएजु॥
 ॥ ५॥ बालेदेहितेजोकुलगीनीनसुनेभुवनवडोटेजु॥ केनि १०
 सैंकततहांपेदिटैंकलोईधिदधिकेभाजनचाटेजु॥ ६॥

॥ आपक हाय धनि के टोटा भात रूप न लो माज्यो जु ॥ मान भं
 गफिरि दुजे ता चें नें कुसी को च न लाज्यो जु ॥ ७ ॥ जरिकाई न
 तें गोपिन के लं म सुने भुव न ठं ठोर जु ॥ यमुना ना त गोप
 कं मान के नि पट निल ज पट चारे जु ॥ ८ ॥ सब को को उ क
 हत वा वा छर बि खेर ल ० प्र मो ले जु ॥ ग रे जु जा सिर मो र प र
 वा गा प न के सं ग डो ले जु ॥ ९ ॥ बि नु व जा र बि ला स की ए
 व न लो ले प राई नारी जु ॥ ले वा तें मु नि रा ज ध्व भा ले का र्क
 सं क बि स्तारी जु ॥ १० ॥ रा ज स भा को वे ठ न हा रो को न त्रि पा
 सं प्र घ ना चे जु ॥ ० प्र प्र ज सहि त रा जा मा ए ग नें कु र्म व जा दे र व
 न रा चे जु ॥ ११ ॥ ले ले भ ने रा ज न की क न्या पे धो को न भ ला ई
 स त भं मा जु गो त में व्या हि उ ल री चाल च लाई जु ॥ १२ ॥ ० प्र
 उ नी भु म रा ० प्रा प हि छाल क हरी ० प्र जु न सी ग भ जाई जु ॥
 भो ज न कर हा सा सु त के च र पा हो जा त ल जाई जु ॥
 वे न पि ती की सा सु क हा वें नें कु रु शा ज न ० प्रा

परदीनी ज्युविधा ता प्रखिल ला क ग कु राई ज्यु ॥ १४ ॥ मोहन
वैसी करन चट चेट कर्ज भर्म त्रसवजाने ज्यु ॥ ताहिते लुमन
ले भले कहि भले भले जग जाने ज्यु ॥ १५ ॥ वरनोक हाज
था मति मेरी वे दो पार पन पा वे ज्यु ॥ हास जग जा र प्रभु की
माहिमा गुन गावत उर प्रा वे ज्यु ॥ १६ ॥ ६ ॥ ॥ मनव मेरे की
ईच्छा पुरी प्रायो मास फा गुण को नी के ॥ लाज सकुचित
जि सा सुनन की होरी गद्यो कर सुं कर पीय के ॥ १७ ॥ प्रव मे
रो को हु क हा करे गो यह तो हि प्रा सर होरी को मे न भरी
पुरत प्रजपति को देखे इ ख मी रे गो जीय के ॥ १८ ॥ रा ग ते ज स
री ॥ ॥ रंजी लो हो वि सि ने नार स भरे ॥ ने नाना चेत सु दित
प्रने रे ॥ थ खं जरी ट से मा हा म त हो ऊ के से हर ह त न घे
रे ॥ १९ ॥ स्पाम से त प ते रं ग रं गे मानो ची त्र चित्ते रे
॥ कुं न न हा स प्र भू गो व र्ध न धर स्पाम सु भ ग त न
हरे ॥ २० ॥ ८ ॥ ॥

श्रीद्वैतसुब्रह्मनिष्कारकमलनयनमनमोहना॥०॥ प्रावर्तिजा
 तसदारहि० प्रारकभुहनदेखीरीत॥०॥ प्रनहोनि श्रवणनिष्ठुति
 कनिकेसं होयप्रति॥१॥ गीर्घटापउठि-जोरहिः माएगरो
 कलआईहों॥ श्रीहरिचानकसासतेमहुकाक्षीदेतउटाई॥२॥
 एसातमहुनउजियें० प्रकतैरहतगहिवाहि॥ मातपीताभैया
 कनेसाहिपरवनमाहि॥३॥ हसतहिनेमनमुसकतहोकहि
 कहिसीखीबोला॥ सतमितक्योपाईये यहगोरसानिमोला॥४॥
 उल्लुंउं जप्रभु-बीवलकरिखियोचितवनिनेनविसाल॥
 रतिजोरिमिसिदानकेजोवर्द्धनधरला॥५॥६॥ ॥ होरी
 केखीलारभावतेयोहिजाननहेहोंतेसेईजागेबारी॥ वनी० प्राएजा
 जेभागहमारो॥१॥ नेमरिभरिभरिफिगुनोहोंलेहो॥ बीनार्च
 दन० प्रोर० प्ररगजाकेसरकलसहवेहो॥ ५॥ अग्रस्वामीसोक
 हतस्वामिनिमित्तनतपतबुझाहोहो॥२॥१०॥॥

परहीनीजुविधातीप्रखिललाकगुरुसईजु॥१४॥मोहन
वैसीकरनचटचेटकजैभर्मत्रसवजानेजु॥ताहितेतुमभ
लेभलेकहिभलेभलेजगजानेजु॥१५॥वरनोकहाज
धामतिमेरीवेशेपारुनपावेजु॥दासजगजारप्रभुकी
माहिमागुनगावतउरुप्रावेजु॥१६॥६॥॥मनवमेरेकी
ईश्वरुरीप्रायोमासफागुणकोनीको॥लाजसकुचित
जिसासननकीहोरीगस्थोकरसुंकरपीयको॥१॥प्रवमे
रोकोहुकहाकरेगोयहतोहोप्रोसरुहोरीकोमेनभरी
मुरतप्रजपतिकोदेषेइखमीरेगोभायको॥२॥॥रगतेजस
री॥॥रंजालेहोश्रविसेनेनारसभरे॥नेनानाचतसुदित
प्रनेरे॥॥संजरीटसेमाहामतहोऊकेसेहरहतनघे
रे॥१॥स्यामसेतपतेरंजरंजमानोचीत्रचित्तेरे
॥कुंननहासप्रभुगोवर्द्धनधरस्यामसुभगतन
हरे॥२॥८॥॥

आडिदेहुयहवानिप्यारेकमलनयनमनमोहना॥० प्रावतिजा
 तसदारहि० प्रारकउहनदेखीरीत॥० प्रनहोनिअवननिपुति
 कनिकेसेहोयप्रति॥१॥ गीरिघटापडठिभोरहिः मारगरो
 कलआईहो॥ चोहरिचानकसासतेमहुकासीदेतउटाई॥२॥
 एसीलमहुनउदियेअप्रकतैरहतगहिवाहि॥ मातपीताभैया
 कनेसादिपरवनमाहि॥३॥ हसतहिमेंमनमुसकतहोकहि
 कहिसीखीबोला॥ सेतमेतव्योपाईयेयहगोरसानिमोला॥४॥
 चुर्चुर्जप्रभुचीवतकरिखियोचितवनिनेनविसाल॥
 रतिजोरिमिसिदानकेगोवर्द्धनधरलाला॥५॥६॥ ॥ होरी
 केखीलारभावतेकोहिजाननदेहोतेसेईनागेबारीवनी० प्राएजा
 जेभागहमारो॥१॥ नेनरिभरिभरिफुगुनोहोलेहो॥ चोनाचै
 दन० प्रोर० प्ररगजाकेसरकलसन्हवेहो॥ ५॥ अग्रस्वामीसोक
 हतस्वामिनिमिलितनतपतबुजाहेहो॥२॥१०॥॥

॥ माईरी वरसांनें तें ६ नईं दृगा मप्रोहित वृष भान को पायो ॥ नईं
दृषुवन को वै भव प्रकृत निरखी परम सुख पायोरी माई
॥ १ ॥ पाषधो वायु के जल प्रच वायो घेरि ० प्राई ब्रज नारी ॥
पाप लाग जो कहत फूनि फूनि गावत हरि की गारी ॥ २ ॥
एक विचो वा ० प्राप्ति पानि भवो जन के मुख लपटायो ॥
एक कपोल मरोरत मी डत करत ० अपनो भायो ॥ ३ ॥
एक घर बेली घेरि ० प्ररगजा माथें ते गहे नायो ॥ एक तोपक
दि फेटक मारति एके लोक रपायो ॥ ४ ॥ एक बोटी या
लेत चोरची त एक तो तारी वजावे ॥ एक तोप करी पोति
या रुटक त हसि हसि वां कच ठावे ॥ ५ ॥ एक प्रचान
के के पाछें तें ० प्राखिन मे दई गुला ल ॥ मी डत दृगयो क
हत लुगाई लु मोको पास्यो चालो ॥ ६ ॥ एक निवासी खादी
छाछि ले माथें ते ० गही नाई ॥ इतयह एक उतेये ० प्र

ग नित वां भन की न क साई ॥ ७ ॥ डिं ग डिं गा त मार जा
उ के चित व मो हे ता ति ॥ हा हा ही हा ह्यो तु म जी ति ध
डि दे हु ज ज मा नि ॥ ८ ॥ व एक क हे या हि प क रि पि टि कि
पा के श्र व न ने की सु ख दी जे ॥ एक क हे हो हा हा नी के
घ री एक ह सि ली जे ॥ ९ ॥ ह स पर स्प र स र्व ज् ब्र ज नारी
स र्व ही न य ह वी चारी ॥ ई त नी क ह तं श्र थं ई तें त व श्र
ए कुं ज वि हारी ॥ १० ॥ जो देखे तो भा व न को ए घे रि र हि
भ्र ज वा ला ॥ मुख प टु का दे नि र खि नि र खि मु ष मु स कां नि
नै द के ला ला ॥ ११ ॥ भ लि मा न स हो भ ली ग्रा द र की यो भ
लो भो ज न क र वा यो ॥ स न हु कुं व र जु ल ग री सु ग ई ना ना
भां ति न चा यो ॥ १२ ॥ एक नि गु ल गु ला ए गु ल चा ए ए क
नि क नि को ह मा की दी नी ॥ जा न त हो श्र प ने म न में जे स
प ड ना ई की नी ॥ १३ ॥ कि वं की चा य मे रे ल ई बु ह दी पा

प्रादिकगइति॥ इ न न र प तिते हो उ र प त ॥ हो ध क क र
उ क र क र द्या ति ॥ १४ ॥ ज ल ली ता प क प र ग र का यो स्या
म स्या म क हि टे स्या ॥ पां डे जू की ल ली त पी छ पर लाल
क म ल क र फे स्या १५ ॥ एक नि मो को ने न से न दे ने न नि
प्र ज न की नो ॥ एक नि म न हरि ली यो वि च ले चित
आ खि न मे वू का ही नो ॥ १६ ॥ क षो स्या म अ ज हो
व क लो ह म लु मा रो वो ह त स ख पा पें ह ॥ जो मा गो लो
इ लु म को म न मा न्यो फ य वा हो दे लो ॥ १७ ॥ हा जु लु म तो प्रति उ
दा र हो लु म सें लु म ही दा नी ॥ जा नि जा यो जी य में ज ग जी व न ची
र ह र न लु धि आ नि ॥ १८ ॥ जो सा सूर का द्या का जे तो हा हा खा
य भु डा वो ॥ लो ह म आ डें पां डें को पां डें ना चे लु म गा वो ॥ १९ ॥
का हे न पा डें गु न प्र ग ट क रो ह री से न द इ दू दू ग मो री ॥
म ग न भ यो त व ना च १९ ला षो गा व त हो हो हो री ॥ २० ॥

॥ वाधत गं ठि वे र ॥ क्लृ ला ई टि ० ढी पा ग व ना ई ॥ १ ॥ प्राधी क वार
वोध वा पां डे अ क्लृ त फा गु म चा ई ॥ १२ ॥ १ ॥ जा नि कु कु ० प्र
न वो ली के के हु रि हे ख त नं द रा ना ॥ नि र खि नि र खि ने
न व नि को लु ह ल म न ही म न मु स कानी ॥ २२ ॥ इं श दि
। क भ्रं ला दि क य ली क र स न स व र हे उ भा ई ॥ ह म न भ र
भ्र ज न न न ह रि ह रि न ह म न प छि ता ई ॥ १२३ ॥ न
इ वि मा भौ र भ्र ज उ र मे सु र कु सु म व र खा वे ॥ नि र ख
नि र ख ने न नि क लु ह ल सु र वि न ता मं ग ल गा वे ॥ २४ ॥
ध न वा भ नि ध न्य ध न्य नै हु कु ल ध ध न्य ध न्य भ्र
ज की जा ना रि ॥ ध न्य ध न्य भ्र ज के भ्र ज वा सी स्या म ध न्य व
ह रि ॥ २५ ॥ १३ ॥ मा ई री स म धा नें तें वां भ न ० प्रा यो भ रि
हो रि की गा वि न भ र वा ॥ घे रि लि यो घ र मां जु लु गा ई
न सु ड ल गा इ न की च ॥ १ ॥ का हु ल ई ख सि का य पृं नी का हु

कीयो कजररो सिठीपी ४ ठीगो छून लपटाई ॥ वां मनको क
 हा रचाये ॥ २ ॥ काहु गुदी ॥ ५ ॥ जे पहये काहु गु लरी माला
 लारी हे म्हा महिगु नगावे हसी हसी प्रजकी वाला ॥ ३ ॥ जसे मति
 लोपो वची यबापरो निर्मल नीर न्हा वायो ॥ नए वसन पह
 रा पगुदी ते लेरु लगे उत्तरायो ॥ ४ ॥ तव न्हा भवन धरक
 केवी हो पहरे ऊ ज रेक परा ॥ एक ग्वाली नी प्रा ए उलेडी
 सरा सी च भरिक परा ॥ ५ ॥ देखि विमल गयो च नुरवे गे भ
 ज भ ले यह गावे ॥ प्रतिखिल वार मुध वा पांडे खेले ही क
 ख पावे ॥ ६ ॥ चेष्ट फुलाये व दून टोठो करे विफु ल्या न्हा मन
 न्हा ॥ ७ ॥ गहनं जौ यमारि हे भरु वाह मत्तो फगु वा चा हे ॥

काहु कान पक्क के गुल चो काहु एरी वाहो ॥ ८ ॥ नानिसाक
 रे को पह वा धन मोहन क धुन कहे ही ॥ कल जीव लक्ष्मि रा
 म के प्रभु हरि लकुचि सकु नि हरि रहे ही ॥ ९ ॥ १२ ॥

वार्जवरः प्रो ठे सं नरे हो ॥ यामें जोगीया को हुनर कों न ॥ ११ ॥
० ॥ शंख शब्ध धुनी सुनि जित ती त तें घी रिः प्रार्थि अजं ना
री ॥ बहन नी लोक कुं वरी श कंधे कौ न ठो हेः प्रासन मारि
॥ १ ॥ हसि उधृत अश्रव भां नुं नंदनी रावर ऊतर दे हु ॥ को
न कारन रूपत पसी को व न जा जे ने ५ जे ह ॥ २ ॥ को न दि
शाते ल मः प्रा ए रा व व ल का हा को मन सा जा ए ॥ आ पु न
साधि उ नि के वे ० ठे इ छ न देश व ता य ॥ ३ ॥ सि गी प त्र व मु
ति न व टु वा ॥ लि र च द न की खो री ॥ मे रे जी य ए सी प्रा व त
हे क था ॥ ध वि सा ख्यो हे गो रि ॥ ४ ॥ सु क री वि भू त द र्द र था
को ॥ च ध ने हे वार्ज व र ज्जारी ॥ मन हरि ली नो त न क चित
व नि ॥ मे गो ह न ला गी कुं थारि ५ न ग र न ग र प्र ति भ व
न भ व न प्र ति नि सि ही न फि र त उ हा स ॥ ने न ची को र

राधाके हरिहर सनका हेष्वासा ॥६॥ रतन जतन करिम
नमो ल्ये हे निरखने नकी कोर ॥ जगन्नाथ जी वनघ
नमाधो प्रीतलागी होऊ जोर ॥ ७ ॥ १३ ॥ ॥ सरंगी हो
री खेले सावरो ॥ श्री वृंदा वनमाऊ सरंजि ॥ अजकी न
वलन वनगारि ॥ घिरि प्राई सब साजा ॥ १ ॥ सरसवसे
तसहावनो लरिनु प्राई सुख देन ॥ माते मधपामध
पानीको कालकलरव वें ना ॥ २ ॥ कूलेकमलकलिंद
जाके सकुसमसरंग ॥ चंपकवेकुल गुलाब के धसो धे
सिंधतरंग ॥ ३ ॥ कवलकवाहु श्री राम सोपठ एसया
सीयाए ॥ वाजेसाजे नोरंजी नवरंगी लीने मोलमठवे ४
रुमुरज उफवां सुदिने रनीको भरपूर ॥ कूकी नपरी
हूंकिके ऊचिगई कृतिहरि ॥ ५ ॥ अथजको अथकहाके

होके सरसो घट पुरि कै च न की पी च काई या मारत हेत
कि डरि ॥ ६॥ ० प्राधि ० अधिक ० प्र विर की चो वा म ची की च
फे ली की टे ल फु ले ल की चै दु नु वं द न की च ॥ ७ ॥ अज की
ने व ले न्ना गरी सं द री सुर दार ॥ खे ल न ० प्राई स वें धे
रि श्री रा धा के वं द र वार ॥ ८ ॥ फु ल द र ग हे हा थ सो
मार त वां ह उ ठाय ॥ ० अं च ल चै च ल फि र रहे पे ने न
ने ने न न चा य ॥ ९ ॥ श्री रा धा की पिय स खी ल ली ता लो
ल लु भा य ॥ ध ल क रि खे ल ही धि र कि कै ह सि भा जी
उ ह का य ॥ १० ॥ नारी को भे य व ना य के प म्ये स खी सि खी
य ॥ ० प्राति ० अधिक क हा व ती ल ली ता भे डी जा य ॥ ११ ॥
गें डु क की रू ल की ही नी श्री रा धा हा थ ॥ ० प्राई ० प्र चान के
० प्रो च का त कि मा रे हा थ ॥ १२ ॥ अज की बी थी सा करी उ त ज उ ना
को षा ट ॥ व लि दा उ को नौ ल के दाने गा ठे क पा ट ॥ १३ ॥

हलधरहेतुमहावलिसेंचेंतुमवलीयसि॥वलिकेवलितुकहाभ
यो॥गहिवंधेउजपासा॥१४॥नेननि०आजन०आजिके०कोधोरु
परठादि॥पोयपदिवारपठेदुयेरसिकीयसिवीचारी॥१५॥फिटिना
जीसबदेदगा०आवनहीने०आर॥महनउपालबुलायकेगहिला
ईवरजोर॥१६॥गिदिधास्योकरवांसखरमास्योगहिपाय॥
तिनकोभारकहाभयो ललीतोल्लेतिउठाय॥१७॥घरमेंघेरस
वैचलीश्रीराधाकोसंगलेत॥होउजनस्वैचमिलायकेने
।नानिकेसखलेदेत॥१८॥तनललीताहसिकस्योश्रीराधा
कोसिरनाय॥नीलोवरसोठायिकेसुहुसुधोसुसि०काय॥१९॥
उतेश्रीरामा०अचगरोईतललीता०अतिलोले॥बीचविसारखी
साखिदेसुरलीमांगतिओलि॥२०॥सबनालीद्वयभानकेमद
नसखावा०को॥नांवा॥स्यावममतेकेमिलिनीपावस०कीनोसब
गावा॥२१॥पठयोमदुन्नाबसीठही०हीठमहामदलोले॥

॥ छिंनुं प्रोरें छिंनुं प्रोरें हिष्ठाको धेलडुधेल ॥ २२ ॥ मरुता
मरुतगोपाल कौं हलधरकोले प्राड ॥ श्रीरधा कि हि सजा
यकेंचां यो हे हसिपाऊ ॥ २३ ॥ श्रीरामा हंसियोक ल्यो मेवा हेरु
मप ॥ नेकुहमा देस्याम कौं नेन निको मधपाई ॥ २४ ॥ भागसहा
जसवें वसु ल्यो खेलत फागु विनीर ॥ रंधामा धो बेठारही प्रजरा
नाकी गोद ॥ २५ ॥ भूखन हेतज सो मति पोधी पां न छे के ल ॥ टा
उटा कटिका बलिहार ॥ हरहमे ल ॥ २६ ॥ श्रीविठ्ठलै पद प भनी
पावने देण प्रताप ॥ छितस्वामि गिरिधर मिले मेदेत न केता
पा ॥ सुटीगी ॥ २७ ॥ ॥ १४ ॥ ॥

राग --- माघसुक्तनवमीजवग्राही॥ सुरनर मुनिसवभए
हरखवाही॥ श्रीरए छोडपुरएण पुरु खोतम॥ सच्चित्त ब्रह्मसा
कारपरमानंद॥ साकारपरमानंद प्रभुजवप्रगठही प्रा
नंदभयो॥ शब्दजयजय होत बहु हिश प्रा नंद सिंधु प्रदी
यो॥ प्रगठहुयजीजादिखाई नंद नंदनजेकरी॥ श्रीवधु
जकुलभवतारपुरए भक्तहेतनरवपुधरी॥
जनेमुनककुं कहतत प्रावे॥ प्र सवर
मुनवै। सनकादिकजाको ध्या
हसमुखरटतसदाहें॥ सह
ननायोपरनुब्रह्मको॥ नरदेहमा
सबप्रपतोकायो॥ पर्यटनकी
हैबीकारणे॥ कर्णदृष्टिणर्षध

ककला मय प्रारण षोडश्यादि ॥ करत रूप सव दोष निवारि ॥
 सरणागत सव जीव उद्धारि ॥ मोक्ष धार को लुच्छ कर डारि ॥ तो
 दोष धारों लुच्छ करिके अधिक में प्रार्थन सव दीयो ॥ महाप
 तित सव जीव देखे रूप बहु विध प्रगटीयो ॥ नाम रूप विभे
 द करके जगत में प्र उधारियो ॥ सदान दलाकार श शिशु
 ख देखत ही स बहु र खगयो ॥ ३ ॥ सत युग प्रीव धन भ प्र
 श प्रगटे ॥ मत्स्य क र्वाराहन रहि रहि नरे ॥ नक्त हे त प्र
 वतार न योजव ॥ सत युग कार्य कीनो ते ही छिन सव ॥
 कार्य कीनो ते ही छिन में रूप प्र सुत धारियो ॥ वेद लापर
 स सुधा दीनो धरणी मानव ठाईयो ॥ नक्त हित नर हरि
 प्रगटे देखत दय विहारियो ॥ नक्त माहात्म्य प्रगटकी
 नो नक्त दोष निवारियो ॥ ४ ॥ त्रेता युग द्विज वर व उधा
 र्यो ॥ वल्लिदा जा कों वर सात लय गयो ॥ पर सुरा म
 हुय भार उता र्यो ॥ वार इसकी स दु न ही रा र्यो ॥

रामरूपकुलराक्षसमास्थो एकपत्नीव्रतधरस्यो॥ मकीदापुरुषो
त्तमलीलाश्रीरणधोडप्यारोभवत्तस्यो॥ प्रवतारलेकेरूपध
रि करे भक्त बांछित सुदीयो॥ मायावाद नशय करके व्रतकों
सभापितकीयो॥ ५॥ दापुरमें लीलावधु धारयो॥ उभयरूपध
र जगत उधारयो॥ संकर्षण ओर कृष्ण रूप धरि॥ कौसादि
क सब दैत्य संहारे जवो॥ दैत्यको संहार करके अधिक सुष
धरणी दीयो॥ कोमल चरण प्रतापना हास्य भूमि उल्लसै
प्रगटीयो॥ प्रवनीपें पदपद्म राख्यो भक्त कार्य विचारी
यो॥ श्री कृष्ण सीकर्षण प्रगट हुय भक्त सुधार सपाई
यो॥ ६॥ कलियुग श्री पूरण पुरुषोत्तम॥ प्रकटे श्री वध्रत
रूप प्रवृत्त॥ एक रूप बहु रूप दियारो॥ मायावाद सब लु
रत्नशा ए॥ शास्त्र सबको देखु निर्णय कीयो माया तत खंडी
शब्द जय जय होत चहुँ दिख भक्ति पथ भुवमंडनी॥ लका
र श्री रणधोड पूरण व्रत सुख हित प्रगटीयो॥ दृष्टिमें सब

दोषनशये भक्तवाक्परिपाणीयो ७॥ श्रीवधै नकुल आदि
 सनातन ॥ ब्रह्म शिवादिक रत्ननिशि दिन ॥ जाके चरण कम
 ल अति सुंदर ॥ जसका यो प्रतिप्रवनी मंडल पर ॥ यो मो सुज
 स इन धरणि मंडल अपनो कार्य सारीयो ॥ हृदय को दुदिकर
 के भक्ति पथ विस्तारीयो ॥ कृपा करके शरण लेके दोष सब हरी
 कीयो ॥ पंच दोष न रहे एको पुष्टि को निवेदन का यो ॥ ८ ॥ अष्ट
 पदी चित्त मे जो ई धारि ॥ सुने सुनावे जो चित्त हरयावे ॥ श्री
 रण छोड चरण चित्त लावे ॥ एको दृष्टान्त ही उने बिसरावे ॥
 उनीको जब चित्त धार्यो दुःख गयो सब ते ही सने ॥ भक्त हित अ
 वतार धरके कार्य कीने वाही सने ॥ यथा क्वचि कष्टु वर्ण प्राये
 जानीये य हिदासहे ॥ उदैदास निरोध लीला यही फल की
 प्रासहे ॥ ९ ॥ राज - - - - - प्राजुलये ॥ प्राज्ञ दृष्ट रघर अ
 ज न यो प्राज्ञ द ॥ श्री रण छोड प्रगट उरुवे तम स चित्तया

रामरूपकुलराक्षसमास्थो एकपत्नीव्रतधरस्यो॥ मकीदापुरुषो
त्तमत्नीलाप्रारणक्षोडप्यारोभवत्तस्यो॥ प्रवत्तारत्नेकेरूपध
रि करे भक्तवांछितसुरीयो॥ मायावादनशायकरकेव्रसको
सथापितकीयो॥ ५॥ द्वापुरमेंजीलावपुधारयो॥ उत्तयस्वध
रजगतउधारयो॥ संकर्षणओरकहनस्वधरि॥ कंसादि
कसबदैत्यासंहारेजवो॥ दैत्यकोसंहारकरके॥ अधिकसुख
धरणीदीयो॥ कोमलचरणप्रतापमाहात्म्यभूमंडलमे
प्रगटीयो॥ प्रवनीपेंपदपक्षराव्यो भक्तकार्यविचारी
यो॥ श्रीकृष्णसंकर्षणप्रगटकुहुवभक्तसुधारसपाई
यो॥ ६॥ कलियुगश्रीहरणपुरुषोत्तम॥ प्रकटेश्रीवध्वन
रूप॥ प्रवपम॥ एकरूपबहुस्वधरियाए॥ मायावादसवतु
रत्तनशाए॥ शास्त्रसबकोदेवनिर्णयकीयोमायातत्त्वईत
शब्दजयजयहोतयैतुं दिसभक्तिपथभुवमीडनं॥ लका
रश्रीरत्नक्षोडहरणव्रत्तसुखहितप्रगटीयो॥ दृष्टितेंसव

दोषनशये भक्तवाक्पटिपात्नीये ॥ १० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 सनातन ॥ ब्रह्म शिवादिक रत्नजिशि हिम ॥ ज्ञानं विदुः ॥ ११ ॥
 जअतिसुंदर ॥ जसच्छायाअतिअवनीर्मडुअपर ॥ १२ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 सइतधरणिर्मडुअपनेकार्यसारीयो ॥ १३ ॥ अविनाशिक विनाश
 के भक्तिपद्यविस्तारीयो ॥ कृपाकरके शरणलेके होयमान ॥ १४ ॥
 कीयो ॥ पंचदोषनरहे एके पुष्टिको निवेदनका यो ॥ १५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 पदीचित्तमे जो ईधारे ॥ सुने सुनावे जो चित्त हरयाये ॥ १६ ॥
 रण छोड करण चित्त धावे ॥ एके हाणन ही ॥ उने बिसराये ॥
 उनीको जब चित्त धात्यो दुःख गयो सब ते ही सने ॥ भक्त हि साध
 वतारधरके कार्यकीने बाही सने ॥ पद्यादिक कष्टुवदि आय
 जानीयेय हिहासहे ॥ उदैहास निरेय जे यहु फलकी
 असहे ॥ १७ ॥ राज - - - - - प्राकृतयो जने दुखदरअ
 जभयो जने ॥ श्रीरत्न छोद प्रगटु दुखनेन सचिह्न ॥

नेदकंद ॥ १ ॥ गगतर्मिष्ठुत्तपरनोयतवाजेकुसुमनिवर्षतकीद ॥
गणसकनित्तर्मगतगावें प्रगटे घरणा ॥ २ ॥ शिवसनकादिक
करतत्प्रहर्निशकोई घरणा ॥ ३ ॥ जगततत्प्रवतादसु
धरके कीयोनायामंतरवीड ॥ ४ ॥ शिवकसवहरखितभएमन
मेंगीवैतगीतसुर्वीद ॥ नाचतकृदतकरतवधाईमननेव
हुआनंद ॥ ५ ॥ प्रगटहोयसवप्रपनेकानेदोवनशाएवं
द ॥ उद्वैदासचरणकाआसांनितप्रतिपीवेमकरंद ॥ ६ ॥

गग --- मायकुल्लनवमी जयआई घरघरवजतवधाई
प्रीरणछोटै घरण पुरु बोतम प्राटे हे सुखदाई ॥ १ ॥ श्रीगोव
ईनविप्रधुनीएवेदकीधुनीकरवाई ॥ विप्रराशासीसदेतसव
मिलके यहसुतत्रि सुवतराई ॥ २ ॥ विप्रवचनसुनव ॥ ३ ॥
दमेंकयोसवनमनभाई ॥ जोमंगेकोईकोईपाएद्वैतगो
वंईनराई ॥ ३ ॥ नाचतनीं गायतवटतेवधाईहविनि

जसक प्राई ॥ जो सुत देख्यो नंद्य शो दा सोई झीर
एकौ डरई ॥ ४ ॥ प्रणव स साकार अगट हुय प्रा
या वादन जाई ॥ उहै दा स चरण की ॥ प्रा सार ह
लसही ॥ प्रथि काई ॥ ५ ॥ राग मलार ॥ नू ले ना ई म द
न मोहन प्रियप्यारी ॥ ब्रज बनिता सब हरख जुना वें
जोटा देत सुख कारी ॥ १ ॥ स डर मो र प पे या वो लत घ
न दा मिनी ॥ प्रनु हा री ॥ र म कि र म कि बुं द न व र ष त हें प
वन बेल त हित कारी ॥ २ ॥ जलि ता दिक स वना चेत
गाव त देत परस्पर तारी ॥ मदन मोहन प्रिया के संग
नू ज त श्री प्रष जान डु लारी ॥ ३ ॥ यह सो भा क थु क ह
त न ॥ प्रा व त भई भू नि हरि यारी ॥ मधुर मधुर वो ल
त प्रियप्यारी च न ग र्त ॥ प्रति भा री ॥ ४ ॥ राग मला

रहो उमिले गवत रं रसमाजस बारी ॥ बलि बलि जीउं मधु
र जो टिका दासको दास बल्य हैरी ॥ ५ ॥ राम मारु ॥ रंगहि
डोर ना हो सुले ब्रव भान कुमार ॥ ७ ॥ प्रास पास प्रज वनि
लागठी बान्यो हे रंग प्रपार ॥ १ ॥ प्रज जुव ती सुली व
त गावत सज सो ले ष्टंगार ॥ हर ख निर ख मुख देवत
पियके प्रेम मुदि त प्रज बाले ॥ २ ॥ यह सुख शोभा क
हत न प्रावत वोली सकल प्रज नारि ॥ मधुर मधु
र को जत पिय प्यारी री कृत नंद कुमार ॥ ३ ॥ मंदम
द सुसकात हे हो उमिले उडु त प्रीच ले प्रज नारि ॥
बलि बलि जाड पिय प्यारी की दासको दास बलि
हारी ॥ ४ ॥

मकार ॥ सुंदर नवल हिंडो रे कुलत होउ ॥ स्पामवरन तनिर सि
 कलिते मालिकुपरवरणतनगोरे ॥ १ ॥ नीलांवर पीतांबरकी
 छवि घनिदाग्निनीकी घोरे ॥ हरिदासके स्वामी स्पामाकुंज
 विहारी मुसुकनि घोरे घोरे ॥ २ ॥ लगमाजव ॥ महनमोह
 नब्रषभानलनीमिलनूलतसुरंगहिंडोरे ॥ लोहतली
 लएठमाफेठा सरसकसुंभीरंगवोरे ॥ १ ॥ कटिराजत
 पठपीतस्पामके लारी सुरंगतनगोरे ॥ प्रंसनिवाहु
 धरेजुपरस्पर चित्तेशपलदृगकोरे ॥ २ ॥ चंभनला
 गिहुलावतिगावति ब्रजतरुलिचहुंओरे ॥ रतिनाय
 कब्रजपतिकी छविपररीजिहारतननतोरे ॥ ३ ॥
 मालव ॥ नवललाजगोवर्द्धनधारीकुलतसुरं
 जोरे ॥ संगलीव ब्रषभानतंदनीरमक

ते सीय नवल नवल प्रज सुंदरी आई हं कुंडल जोरे ॥ निर
 ख निरख वेक मल वदन पर हसत सबे सुख जोरे ॥ २॥ व
 रनवर नपे हरे लन सारी नवल लाल रंग जोरे ॥ श्री विठल
 गिरि धर लमन मोहित चपल नैन की जोरे ॥ ३॥ माल बा
 । श्री विठल राय लाल गिरि धर को कुल वल सु रंग हि जो
 रे ॥ सुंदर वदन निहारत फिर फिर चित वनि नैन जोरे
 ॥ १॥ प्रति सो नित सिर पाग लवारी केशर के रंग जोरे ॥
 कर ल फूल प्रेर विबुध वदन पर लज कत थोर थोर ॥
 २॥ ते सीय संग राधिकानी छु विजागत लन जोरे ॥ श्री
 विठल गिरि धर मूलत जव जुव तिनको चित जोरे ॥
 ३॥ राग --- ॥ मदन मोहन सैज राधे मूल ल रंग व
 लो प्रति नारी ॥ प्रजव निला वल व दे वल हर खें प्रति

सुख-प्रार्थन-द्विकारी ॥१॥ हादुर मो रपयेयाको जत अंवरग
जेतभारी ॥ रसिक रुसिक बुंदल वरलत है पवनवलत
सुषकारी ॥ २॥ पिय प्यारी संग मोहनको ले सुनो घोषत्र
जतारी ॥ धनगर्जत डरपत तुम क्यों हो मेरे प्राणपिया
री ॥ ३॥ यह सुख शोभा कह तन-प्रावत मूलत घो
षकुमारी ॥ मोहन मधुरे जो टाहवें हासको हास बलि
हारि ॥ ४॥ मलार ॥ मूले माई रसभरे रंगहिं जोरे ॥ प
चरंग पाठ पवित्रापहिरे हसतहसत सुषमारे ॥१॥
संग मूलत प्रथमान नंदनी रचवल नैन चकोरे
वलिवलि जाउं यह ध्वनि विठ पर हासको हासलि
तचोरे ॥ २॥

मालव ॥ ग्रहग्रहतेऽग्राईवजसुंदरीगुलनसुरंगहिंदोरे ॥
वरनवरनवेहेरेतनसारीनवलनाउरंगकोरे ॥ १॥ गुलत
संगलाउरिधिरुकेप्रतिछोवैनीदाकिकोरे ॥ नहीनेदी
छुहीपरतवाहरतेंस्यामघटाघनघोरे ॥ २॥ प्रतिग्रान्नी
दुजरीसवगावलप्रीतमकोचित्तचोरे ॥ श्रीविठउरिधिरु
रसनीजेव्रजमुमंजिकककोरे ॥ ३॥ मालव ॥ गुलतला
गेवईनधारीगुलतहीरंगलागोहो ॥ स्यामीसंगलाव
रेगुलेलोकलाजभयभागेहो ॥ १॥ प्रतिसुकुमारना
रिडरपतहेंनोहतउरनपथाबैहो ॥ नीलपीतपठफैहै
रातहेंघनदासिनीछेवपावेहो ॥ २॥ सुरनरमुनिसबको
लुकनूलेनिरखनिरखसहुपावेहो ॥ यत्रभुजप्रभु
जिरिधरनलाउरजसुरनरमुनिसिलेजावेहो ॥ ३॥

तुलसीतमकुलचंद्रहिंदोरेतुलसीवतसवत्रजनीरे ॥ १ ॥
शोभितब्रह्मभानतंदनीपेहरेंकलुषीसारी ॥ १ ॥ पच
गदोरीकरिगहीजीनेडांडीसरससवारी ॥ २ ॥ प्रासक
एप्रभुमोहननागरजिदिगोवर्द्धनधारी ॥ २ ॥ मा
भव ॥ तुलसीतहेंराधासुंदरवरसावनसरसहिंदोरे ॥
दुहुंप्रोरसकतवाओरंगत्रजजुवतीत्रनतोरें ॥ १ ॥
वरणवरनपेहेरेंतनप्रवरप्रेमविवसद्गजोरें ॥
किलकतहसतसवेरसलपकडतकामत्रियाचि
तचोरें ॥ २ ॥ तेहीप्रोसरवरखतरसडुंदनचहुंदिशा
घनघोरें ॥ कल्याणकेप्रभुजिदिधररीकेप्रतिदे
तप्रीतपटछोरें ॥ ३ ॥

राजवंसंत ॥ खेलेत वसंत विठले श राय ॥ निज खेवक
 सुख देवत प्राय ॥ श्री गिरिधर राजा युनाया गोविंद
 कोले पिचकारी नाय १ श्री बा. नक ह्य खिक हि
 न जाय ॥ श्री गो कुले नाय २ श्री ना दिखाय ॥ रघुनाथ
 कोले ३ प्ररगजा नाय ॥ यदुनाथ कोले चौथा मंगय ॥
 २ ॥ धनस्यामदास केटन न राय ॥ सब बा. नक खिलत
 एक हाय ॥ महोसरदासना चतहें प्राय ॥ परमानंद घो
 रें गु. कोले नाय ॥ ३ ॥ चंद्र भुज दास के शर माठ न राय
 श्री न स्वामी युका के के जाय ॥ नंददास निर. खि खि वि
 क हें प्राय ॥ गवे कुंजन दास बी ना व जाय ॥ ४ ॥ सब
 गोविंद बा. नक छिर के प्राय ॥ कोउना चत हे ह दशा यु
 नाय ॥

सव वानक बीजे हो हो आय। उजो अवीर गुला लधु धर
काय ॥ ५ ॥ पिचकारी रत उत छीटे जाय। को उके कत फूले
न प्रवने जाय। को उचो बाले छिर के वनाया बाजे ता ल
सुईंग उपंग नाय ॥ ६ ॥ विचया जल सुर चंग सुर ली जाय।
को उम उफले सुहु प्रर ले सि जाय। एक ना चल षग नु पुर
व जाय। बानो सुख स सु उ क सु क ह्योन जाय ॥ ७ ॥ सव
वानक नी वे अंग चुचाय। श्री गोकुल घर घर सुख ही
छोय। सो जाक हे कहा क विहु वनाय। यह सुख सव ले
ब क दिषाय ॥ ८ ॥ सुरहु सुम निवर लत हें आय। सव ग
वैली ठी गरी जाय। तब प्रवने मनोरथ करत षाय त
हां छे छ हा स व लिहारी जाय ॥ ९ ॥

राग --- ॥ महन जो हल विवा के संग हूँ त श्री वृषभान दु
नारी ॥ चलो लखी जहा देखन जै ये रंग व ठो प्रति नारी ॥ १ ॥
सज संगार चली ब्रज वनिता कर ल कोना हल नारी ॥
राजमंजार पर स्वर गावै त हेत पर स्वर नारी ॥ २ ॥
वाँ जत लाले पलाने ज मुरली पग नूँ उर रुक कारी
सखि जन लख मिले हेत जो टका बिहसत लाले वि
हारी ॥ ३ ॥ यह सोना क हूँ क हत न प्रावै सुको हो
सकल भ्रज नारी ॥ बलिवाले जो उँ पाय प्यारी पर
दा लको दा सब लिहारी ॥ ४ ॥

